वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

वर्ष 2, अंक 1

तर्कशील पथ

जनवरी – 2015

अन्दर पढ़े...

- धार्मिक डेरों और राजनीति की नापाक गठजोड़
- साहित्य और राजनीति
- ब्राह्मांड यात्रा
- आधुनिक गुरूओं, उनके अंधभक्तों के बारे में व अन्य स्थाई स्तम्भ

20/-

नए साल का पैगाम, विज्ञान बने जीवन धाम

Reg. No. HARHIN05683/07/1/2013-TC

संपादक:

आर.पी.गांधी - 093154-46140

संपादन सहयोग:-

बलवन्त सिंह - 094163-24802

गुरमीत अम्बाला-094160-36203

अनुपम राजपुरा: 094683-89373

बलबीर चन्द लोंगोवाल: 098153-17028

हेम राज स्टेनो: 098769-53561

पत्रिका शुल्क:-

वार्षिक: 200/- रू.

विदेश: वार्षिक: 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरण:

गुरमीत अम्बाला

e-mail:tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पता:

बलवन्त सिंह (प्रा.)

म.नं.1062, आदर्श नगर, नज़दीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली।

जिला कुरूक्षेत्र-136131 (हरियाणा)

e-mail:tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए

www.facebook.com/tarksheelindia

पेज को लाईक करें

पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है

http://tarksheelblog.wordpress.com

पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग आन करें

www.tarksheel.org

टाईप सैटिंग और डिजाइनिंग :

दोआबा कम्यूनिकेशंस

मोबाईल : 92530 64969

E-mail: doabacommunications@gmail.com

संकेतिका

सूचना

तर्कशील सोसायटी हरियाणा का वार्षिक अधिवेशन कैथल में दिनांक 08-03-2015, को दिन रविवार प्रातः 10 बजे से 3 बजे तक होगा।

नोटः तिथि, स्थान व समय के बारे में सभी साथी फोन पर संपर्क करके सुनिश्चित कर लें, क्योंकि परिस्थितिवश इसमें बदलाव हो सकता है।

संपर्क सूत्रः

कृष्ण राजौंद: 9992847111

कुलदीप : 9466275790

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 3191855465 में जमा करा सकते है। शुल्क जमा कराते समय 1000 रुपये तक 50 रूपये अतिरिक्त जमा करवायें। और अपना पता मोबाईल 9416336203 पर एस.एम.एस करें।

नोट: किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ जगाधरी, यमुनानगर (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

डेरावाद बनाम राजनीति

हरियाणा-पंजाब राज्य एक सांझी सांस्कृति सामाजिक पृष्ठ भूमि के कारण आज डेरावाद के कुचक्र में तेजी से फंसता जा रहा है। वैसे तो पूरे देश में धर्मगुरु राजनीतिक आकाओं के साथ वोट की राजनीति के चलते एकाकार हो रहे हैं, परन्तु हरियाणा पंजाब में जनमानस के मन में बाबाओं का वर्चस्व तेजी से उभर रहा है। जनता का बड़ा वर्ग इस मानसिकता से ग्रस्त हो चुका है कि बाबाओं की शरण में ही जीवन की मुक्ति है, जिस कारण कल्पित सुखमय जीवन की तलाश में ये भटकाव शारीरिक शोषण की एक कड़ी बन चुका है। बाबे कुछ भी न देते हुए दानी बन गए हैं और जनमानस याचक।

रामपाल प्रकरण के बाद राजनीतिक सत्ता में एक बार फिर हलचल मच गई है और हरियाणा-पंजाब हाईकोर्ट को दोनों राज्यों की सरकारों को यह आदेश देना पड़ा है कि वे अपने क्षेत्र के डेरों का जायजा लेकर मुकम्मल रिपोर्ट प्रस्तुत करें।माननीय उच्च न्यायालय इस बात की भी संज्ञान ले रहा है कि किस तरह डेरे राजनीतिक व्यवस्था को चुनौती दे रहे हैं।

इस क्षेत्र में डेरों का उभार कोई नई घटना नहीं है। इनका इतिहास लगभग 500 वर्ष पुराना है। डेरों का अर्थ पड़ाव या शिविर है, एक अध्यात्मिक शिविर स्वामित्व पाने के बाद डेरे का रूप धारण कर लेता है। अन्य क्षेत्रों में इसे आश्रम के रूप में भी परिभाषित किया जाता है। डेरावाद का उभरना इन सामाजिक, सांस्कृतिक परम्पराओं से बाहर निकलना भी रहा है जिनको पारम्परिक धर्म कारोबार के चलते छोड़ नहीं पाते, जबकि उत्पादन के साधान बदलने से सामाजिक बदलाव आ रहे होते हैं। सभी डेरे रूढ़िवादी परम्पराओं से मुक्ति का आह्वान करते हैं परन्तु स्वयं नए रूढ़िवाद भी पैदा करते जाते हैं। दलित पिछड़े वर्ग से जुड़ा जनमानस सम्मान की लालसा में इन डेरों की शरण में जाता है, क्योंकि यहां जातिवादी भेदभाव को मिटाने की चर्चा होती है। एक बड़ा कारण डेरों में जाने का, इस क्षेत्र में पनपते नशे भी हैं। बहुत सारे परिवार नशों के विभिन्न प्रकार के उभरने से समस्याग्रस्त हैं। मुख्यतः महिलाएं, जिनके पास डेरों में जाकर परिवारिक सुख की अभिलाषा प्राप्त करना एक कारण भी है। कथित नामदानी बनकर लोग नशों की गिरफ्त से बाहर भी आ जाते हैं, क्योंकि उन्हें जीने के नए बहाने मिल जाते हैं। जो लोग जो सुबह-शाम नशे की लत के कारण भटकाव की स्थिति में होते हैं, अब सत्संगों में व्यस्तता के कारण, एवं घरों में ऐसी चर्चाओं के कारण नशा त्याग देते हैं, जो डेरावाद का एक साकारात्मक पक्ष है, परन्तु आर्थिक शाोषण के जिस कुचक्र में लोग फंस जाते हैं उसे हम नजर अंदाज नहीं कर सकते। सामाजिक बुराइयों के प्रति सरकारों की अकर्मण्यता लोगों को नए रास्ते तलाशने को मजबूर कर देती है।

समस्या उत्पन्न होने का सबसे बड़ा कारण परम्परिक धर्म व डेरों की विचारधारा का टकराव है जो कि हिंसक भी हो उठता है। फिर डेरों के लिए आपसी रंजिश व गुरू के मरने पर नए गुरुपद को लेकर उठने वाले विवाद भी हिंसक हो उठते हैं व नए डेरे अस्तित्व में आते चले जाते हैं। वोट की राजनीति के चलते सभी पार्टियों के मुख्यिा गुरूओं की चरणधूलि माथे पर लगाने को लालायित रहते हैं जिस कारण बड़े डेरे राजनीति संरक्षण मिलते ही घमंडमय हो जाते हैं और नियम-कानून से भी उपर मान बैठते हैं और यह टकराव व्यापक हो कर कानून की समस्या बन जाता है।

अगर सरकारें अपने सामाजिक दायित्व का निर्वाह करती रहें, डेरों को अपना वोट बैंक बनाने की राजनीति बंद कर दें, तो यह टकराव टल सकते हैं तथा सबसे बड़ा प्रश्न कि डेरों की गतिविधियों को खूफिया विभाग उसी प्रकार मोनिटरिंग करें जैसे विभिन्न यूनियनों, राजनीतिक पार्टियों आदि को करता हैं तो यह संयम पूर्ण स्थिति में आ सकते हैं । आज किसी भी डेरे का पंजीकरण नहीं है, न ही उनमें आने वाले लोगों की गतिविधियों पर कोई नजर है जिस कारण इन डेरों का अवैध कामों में लिप्त होना आम बात है। डेरों की गतिविधियों ध्यान में रखते हुए ऐसे कानून बनाने की आवश्यकता है जिससे इनके अवैध निर्माण, अवैध सैनाएं, अवैध धन आदि पर अंकुश लगाया जा सके और यह क्षेत्र शांतमय बना रहे।

नववर्ष 2015–खतरे एवं संभावनाएं

–हेमराज स्टेनो
098769–53561

नववर्ष का आगमन हो चुका है। इसमें क्या समाया हुआ है, हमारे सम्मुख क्या-क्या कार्यभार रहेंगे, आज इस विषय पर दृष्टिपात करेंगे।

सन् 1947 से पूर्व हमारा देश अंग्रेजी साम्राज्य के अधीन था। यह अंग्रेजों का एक उपनिवेश था। उस समय हमारे देश का कच्चा माल अंग्रेज अपने देश में ले जाते थे तथा अपने देश में तैयार की गई वस्तुएं हमारे देश में बेच कर भारी मुनाफा कमाते थे। हमारे देश पर उन द्वारा अपना माल थोपने के कारण यहां का हाथ-करघा उद्योग तबाह कर दिया और नया उद्योग कोई लगाया नहीं। उदाहरण स्वरूप हमारे देश के शहर ढाका (वर्तमान में बंगलादेश) का मलमल का कपड़ा प्रसिद्ध था तथा ढाका शहर की आबादी लाखों में थी। परन्तु अंग्रेजों ने जब इस हथकरघा उद्योग को तबाह कर दिया तो श्रमिक बेरोजगार होकर शहर छोड़ कर चले गए। ढाका शहर की आबादी 24-25 हजार ही रह गई। इसी प्रकार अंग्रेज किसानों की लगान इत्यादि के द्वारा शोषण करते रहे। एक अनुमान के अनुसार अंग्रेज केवल कृषि के लगान के रूपमें ही एक वर्ष का तत्कालीन समय का लगभग तीन करोड़ रुपए भारतवर्ष से एकत्र करके ले जाते रहे थे।

यह तथ्य नोट करने से भावार्थ यह है कि उस समय में अलग-अलग साम्राज्यादी देश अपने अधीन उपनिवेशों का सीधा-सीधा शोषण करते थे।

उसके पश्चात् खास करके द्वित्तीय विश्व युद्ध के पश्चात्, जब उपनिवेशवाद का दौर-दौरा समाप्त हुआ, तो एक नए किस्म का उपनिवेशवाद, जिसे राजनीतिक हलके नव उपनिवेशवाद के नाम से पुकारते हैं, अस्तित्व में आया। इस दौर में साम्राज्यवादी शोषण करने के स्थान पर नवउपनिवेशवादी ढंग अपना लिया। हमारे जैसे देशों की सरकारों ने इसे जनतांत्रिक एवं कल्याणकारी होने का लिबास पहना दिया। कल्याणकारी राज्य का यह प्रभाव दिया जाता रहा है कि ये राजा नहीं, अपितु जनता के कल्याण हेतु राज्य सेवक हैं। कुछ हद तक पानी, बिजली, डाक व्यवस्था, स्वास्थ्य सुविधाएं, शिक्षा आदि के टुकड़े साधारण जनता को भरमाने के लिए दे भी दिए गए। वास्तव में सार्वजनिक उपक्रम खड़े करके लाभ तो पूंजीपतियों को ही पहुंचाना था, क्योंकि उस दौर के हमारे देश के पूंजीपति अपने तौर पर इतनी बड़ी पूंजी लगाने में असमर्थ थे। उदाहरण के तौर पर बड़े-बड़े बांधों का नदियों पर निर्माण किया गया। पैसा जनता का प्रयोग में लाया गया और बिजली अधिकतर कारखानों को दी गई। इसी लिए ये सार्वजनिक उपक्रम खड़े किए गए।

परन्तु 1970 के दौर में साम्राज्यवादी देशों को एक बड़ी मंदी का सामना करना पड़ां उनके उत्पादन की वृद्धि में बहुत बड़ा स्थायित्व आ गया। उनके कार्पोरेट घरानों के मुनाफों में बड़े स्तर पर गिरावट आ गई। उनके लिए यह सवाल खड़ा हो गया कि अब क्या किया जाए? उस समय विश्व स्तर पर साम्राज्यवादी देशों के दो धड़े सोवियत यूनियन एवं अमेरिका के नेतृत्व वाले परस्पर टकराव में थे। यह हालत किसी भी नेतृत्व वाले साम्राज्यवादी देश के लिए विश्व स्तर पर अपनी नीतियां लागू करने के लिए रूकावट थी, परन्तु फिर सोवियत यूनियन का विघटन हो गया। ऐसी दशा में

साम्राज्यवादियों, खास करके अमेरिकी साम्राज्यवाद के लिए अपनी नीतियां लागू करने के लिए मार्ग सुगम हो गया। (यहां पर यह बात स्मरण योग्य है कि ये नीतियं लागू करने वाली संस्थाएं जैसे कि आईएमएफ तो पहले से ही बनी हुई थी) इन नीतियों को लागू करने का उनका मकसद उत्पादन एवं मुनाफे को बहाल करते हुए उन्हें बढ़ाना था तथा इसके लिए नई विश्व उत्पादन एवं वित्तीय व्यवस्था बनाना एवं लागू करना था। इसलिए साम्राज्यवादी देशों, खास करके अमेरिका ने विश्व व्यापार संगठन खड़ा किया। अतः नई वैश्वीकरण, उदारीकरण एवं निजीकरण की नीतियों को विश्वस्तर पर लागू करने का यह कारण बना था।

इन नीतियों को लागू करने के लिए यह आवश्यक था किः

1. हमारे जैसे नव-औपनिवेशक देशों की आर्थिकता को और अधिक अपने अधीन किया जाए।

2. चल रही राजनीतिक व्यवस्थाओं को अधिक से अधिक अपने अनुसार ढाला जाए।

और यह किया भी, वह कैसे?

प्रथम, पहले तो सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम जैसे कि शिक्षा, स्वास्थ्य, पानी, बिजली, सड़कें इत्यादि आधारभूत ढांचे निजीकरण करना शुरू कर दिया गया। इन क्षेत्रों को देशी एवं विदेशी पूंजीपतियों के लिए और अधिक खोल दिया गया। उन्होंने इन क्षेत्रों में पूंजी लगाकर अपने शोषण को तीखा करना शुरू दिया। इसी प्रकार कृषि क्षेत्र में पहले तो हरित क्रांति के नाम से तथा फिर फसलों के बी.टी. बीजों इत्यादि में पूंजी लगाकर शोषण को और तेज करना शुरू कर दिया तथा इसी प्रकार अन्य मामलों में भी ऐसा ही किया। एफ.डी.आई. के द्वारा किस प्रकार पैसा बाहरी देशों की बहु राष्ट्रीय कम्पनियों के पास जा रहा है, इसकी उदाहरण लो। अलग-अलग किए गए अध्ययन दर्शाते हैं कि ये नीतियां लागू होने पर 1990 के मुकाबले बाहर जाने वाली धन दौलत सौ गुना बढ़ गई है। हमारे देश में 3254 बहु राष्ट्रीय कार्पोरेशन भारी शोषण कर रही है। इन कम्पनियों ने रायल्टी तकनीक प्रदान करके तथा हिस्सेदारियों के द्वारा वर्ष 2012-13 के दौरान अपने-अपने देश को 4838 करोड़ रुपए भेज दिए हैं। मारूति सुजूकी ने 2007-08 में 500 करोड़ रुपए, 2012-13 में रायल्टी के रूप में 2500 करोड़ रुपए अपने देश जापान को भेजे। इस सभी कुछ का परिणाम ही है कि ये नीतियां लागू होने के समय अर्थात् 1990-91 में हमारे देश के सिर पर विदेशी कर्ज 83 करोड़ डालर था, परन्तु 2013-14 तक यह कर्ज पांच गुणा बढ़ कर 426 करोड़ डालर हो गया है। इसके विपरीत 1990 में सबसे शिखर वाले 10 प्रतिशत अमीरों एवं सबसे निचले 10 प्रतिशत गरीबों की आय का अंतर 6 गुणा था, जोकि 2014 तक 12 गुना हो गया है।

अतः हमारे जैसे नवउपनिवेशवादी देशों की आर्थिकता को विदेशी पूंजीपतियों ने और भी अधिक अपने अधीन कर लिया है।

अब यहां किसी के मन में यह सवाल उठ सकता है कि हमारे देश के शासकों को क्या जरूरत थी/है कि वे साम्राज्यवादियों द्वारा और अधिक शोषण करवाने के लिए इन नीतियों को लागू करें। अब इस पर विचार करते हैं।

इस संबंध में मारूति-सुजूकी का ही उदाहरण लेते हैं। मारूति सुजूकी कम्पनी में हमारे देश का पूंजीपति भी हिस्सेदार है। इस कम्पनी ने कितनी पूंजी जापान को भेजी, इसका जिक्र किया जा चुका है। इसका भावार्थ है कि हमारे देश का पूंजीपति एवं जापान का पूंजीपति मिल कर कम्पनी चलाते हुए यहां के श्रमिकों का शोषण करते हैं। इस प्रकार का

संबंध ही थोड़ा हेर-फेर के साथ अन्य सभी क्षेत्रों में भी चल रहा है।

अतः यहां के पूंजीपतियों एवं विदेशी पूंजीपतियों की आपस में सांझेदारी है, परन्तु क्योंकि विदेशी पूंजीपति साम्राज्यवादियों का स्तर ऊंचा है, अतः जनता के किए गए शोषण में से अपना हिस्सा लेने के लिए हमारी सरकार साम्राज्यवादियों की नीतियों को लागू करने के लिए तत्पर रहती है। यह गठजोड़ शोषण को बढ़ाए चला जाता है और देश में गरीबी एवं बेरोजगारी वैसी की वैसी ही बनी रहती है, बल्कि बढ़ती ही चली जाती है। यहां पर यह तथ्य भी जोड़ लेना चाहिए कि जो भी उत्पादन किया जाता है। वह हमारे देश के लोगों की जरूरतों की अपेक्षा विश्व बाजार की जरूरतों को ध्यान में रखकर किया जाता है। उदाहरण के तौर पर हमारी कृषि में ग्वार की फसल पैदा करने पर जोर दिया गया। यह हमारी मुख्य जरूरत नहीं थी, बल्कि अमेरिका की जरूरत थी, क्योंकि वह इसका प्रयोग तेल कुओं में से तेल निकालने के लिए करता है। इसी कारण जब अमेरिका की उस प्रकार की जरूरत न रही तो ग्वार का मूल्य धड़म से नीचे गिर गया और किसानों की तबाही हुई।

अतः साम्राज्यवादी देशों के पूंजीपतियों की नीतियों को कौन लागू कर सकता है तथा कैसे कर सकता है, यह हमेशा ही बना रहता है। इसी में से ही पहले यू.पी.ए. की सरकार तथा अब मोदी की सरकार के व्यवहारिक कार्यक्रम को समझा जा सकता है।

कांग्रेस के नेतृत्व वाली यू.पी.ए. सरकार भ्रष्टाचार, परिवारवाद, काले धन को न निकलाना, कार्पोरेट घरानों को दी गई 2005-06 से लेकर 2013 तक 31 लाख करोड़ की रियायतें एवं इसी प्रकार के अन्य जनविरोधी कदमों के कारण बदनाम हो चुकी थी। यह लोगों के मन से उतर चुकी थी। उनकी प्रत्येक नीति का जनता द्वारा विरोध होना शुरू हो गया था। लोगों का यह विरोध देशी-विदेशी पूंजीपति-पक्षीय नीतियों के विरुद्ध उठ खड़ा हो रहा था। इसलिए देशी-विदेशी पूंजीपति इसके विकल्प की तलाश में थे। बस ऐसी हालत में उन्होंने मोदी को आगे बढ़ाया।

मोदी को शासकीय गद्दी पर बैठाने हेतु जहां पर अडानी आदि एवं अन्य कार्पोरेट घरानों ने जहां अंधाधुंध पैसा बहाया, वहां पर आरएसएस ने समस्त चुनाव अभियान की बागडोर संभाली। जगह-जगह पर साम्प्रदायिकता का माहौल बनाकर समस्त राजनीति का हिन्दुकरण किया गया। इसी साम्प्रदायिक पत्ते का प्रयोग करके मोदी को हिन्दुओं के लिए एक अवतार के तौर पर पेश किया गया। जिस प्रकार शिवभक्त हर हर महादेव का नारा लागते हैं, उसी प्रकार आरएसएस ने योजनाबद्ध साजिश के अधीन 'हर हर मोदी' का नारा उछाला। मोदी की रैलियों 'मोदी-मोदी' के स्वर ऊंचे किए गए। आरएसएस ने अपने तीन प्रमुख मुद्दे-राम मंदिर का निर्माण, एक समान नागरिक आचार संहिता काश्मीर के लिए बनी विशेष धारा 370 समाप्त करवाना भाजपा के एजेंडे में शामिल करवाए। चाहे मोदी ने 2014 के चुनाव प्रचार के दौरान विकास का मुद्दा ही मुख्य तौर पर रखा, परन्तु सूक्ष्म ढंग से वह भी हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं के प्रयोग हेतु हिन्दू प्रतीकों का सहारा लेता रहा जैसे यह कहना कि उसे तो गंगा मईया ने बुलाया है। आम साधारण श्रद्धालु सोचेगा कि जिसे गंगा मईया बुलाती है, वह कितना पवित्र होगा। परन्तु मोदी को ज्ञात था कि उसने यूपीए सरकार वाली नीतियों को ही '56 इंच के सीने' के जोर के साथ आगे बढ़ाना है, इसलिए लोक सभा चुनावों के प्रचार के दौरान मोदी ने कभी भी यूपीए की नीतियों के गलत होने की बात नहीं की। केवल और केवल 'मां-बेटे की सरकार' को भगाने एवं 'कांग्रेस मुक्त भारत' की

बात ही करता रहा। इसलिए देशी-विदेशी पूंजीपति घरानों एवं आरएसएस ने मिलकर मोदी को ताज पहनाया। अब देखते हैं कि मोदी ने इनके लिए क्या किया ?

प्रथप : नरेन्द्र दामोदर दास मोदी ने लोक सभा चुनाव के दौरान धुआंधार भाषणों में दावा एवं वायदा किया था कि उनकी सरकार बनने पर वह 100 दिनों के अंदर-अंदर विदेशों में पड़ा हुआ देश का काला धन वापिस लाएगी तथा प्रत्येक परिवार के खाते में 15-15 लाख रुपए जमा हो जाएगा। परन्तु बना क्या? कुछ भी नहीं। न तो काला धन वापिस आया और न ही कोई चव्वनी किसी परिवार के खाते में जमा हुई। इस प्रकार से मोदी पूंजीपतियों के काले धन को निकलवाने में चुप्पी साध गया है।

द्वितीय : मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार ने बैंकों, बीमा, रेलवे एवं ऊर्जा के क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को छूट दे दी है। अडानी के कारोबार को उत्साहित करने के लिए स्टेट बैंक आफ इंडिया से 6 हजार करोड़ रुपए की एक और सहायता राशि प्रदान करवाई है, जबकि पहले से यह घराना 65 हजार करोड़ रुपए का कर्ज लिए बैठा है। यही नहीं, बल्कि हर वर्ष 5.72 करोड़ रुपए की राशि विदेशी कम्पनियों को माफ की जा रही है, जोकि टैक्सों के रूप में सरकारी खजाने में आनी थी। मोदी ने अमेरिका यात्रा पर जाने से पूर्व स्वास्थ्य केलिए आवश्यक 108 दवाइयों की कीमत पर से सरकारी नियंत्रण हटा कर दवा कम्पनियों को मूल्य निर्धारित करने की छूट प्रदान कर दी। इससे कैंसर की दवा, जिसकी पहले कीमत 8500 रुपए प्रति यूनिट थी, बढ़कर एक लाख आठ हजार रुपए हो गई। मोदी ने नारा लगाया कि 'भारत में बनाओ'। उसने कहा कि देखो विश्व भर में जो वस्तु विकेगी, उस पर लिखा होगा 'मेक इन इंडिया अर्थात यह भारत में निर्मित है।' यह बात लोगों को भरमाने के लिए है, क्योंकि इस नारे में कहीं भी यह बात शामिल नहीं है कि यह भारतीय लोगों की जरूरतों के लिए बनी हुई है। साथ ही इस नारे के द्वारा मोदी देशी-विदेशी पूंजीपतियों को सीधा संकेत दे रहा है कि वे बेफिक्र होकर यहां धन लगाएं, लोगों का शोषण करें। उन्हें हर प्रकार की सुविधाएं एवं शांतिमय माहौल मिलेगा, लोगों के विरोध को सरकारी डंडे के साथ दबा दिया जाएगा।

तृतीय : भूमि अधिग्रहण कानून में परिवर्तन करके किसानों अथवा छोटे जमीन मालिकों से जबरदस्ती जमीनें छीन कर पूंजीपतियों को प्रदान करने के लिए मार्ग आसान कर दिया। मध्य प्रदेश की भाजपा सरकार ने तो दावा किया है कि उन्होंने 25600 एकड़ भूमि औद्योगिक घरानों को प्रदान करने के लिए एक लैंड-जमीन-बैंक स्थापित किया है।

चतुर्थ : श्रम कानूनों में बदलाव करके उद्योग में बदलाव करके उद्योगों को लाईसैंसी राज से मुक्त करके श्रमिकों के शोषण का रास्ता अपना कर दिया गया है। राजस्थान एवं मध्य प्रदेश के भाजपाई मुख्यमंत्री तो यह दावा करते हैं कि उन्होंने औद्योगिक उपक्रमों में 17 रजिस्टरों को घटाकर केवल एक रजिस्टर तक सीमित कर दिया है। यहां तक कि आयकर रिटर्नों से भी छूट दे दी गई है। यहां पर श्रमिकों के लिए कम से कम मजदूरी तय करने का कार्य भी पूंजीपतियों के रहमोंकरम पर छोड़ दिया गया है। कार्य के घंटे बढ़ा दिए गए हैं तथा सभी सुविधाएं, डाक्टरी मुआवजा, पेंशन ग्रेच्युटी आदि देने से मुक्त कर दिया है। यहां तक कि स्थाई श्रमिकों के स्थान पर ठेका एवं दिहाड़ी प्रथा को उत्साहित करके मजदूरों को पूंजीपतियों के मोहताज ही नहीं, अपितु गुलाम बनाने की और धकेल दिया गया है। अब पूंजीपति इन श्रमिकों पर 'काम लो और निकालो' की नीति लगाू करने के लिए आजाद हो जाएंगे।

इस तरह से करते हुए देशी-विदेशी पूंजीपतियों ने भारतीय आर्थिकता को अधिक से अधिक उनके अधीन करने के एजेंडे को लागू करने के लिए यहां की राजनीति भी अपने हाथों की कठपुतली बना ली है। अब सरकारों का कार्य क्या रह गया है, सभी कुछ तो देशी-विदेशी पूंजीपतियों के हाथों में है। सरकारों के पास कार्य है कि यदि कोई भी इन पूंजीपतियों के पक्ष में बनाई जाने वाली नीतियों एवं उठाए गए अमली कदमों का विरोध करता है, तो उसे कुचल देना। इसलिए वह फासीवादी कदमों की ओर आगे बढ़ रही है। भविष्य में उठने वाले प्रत्येक विरोध को तो छोड़ो अलगाव तक को फासीवादी ढंग के साथ दबाया जाएगा।

अब बात करते हैं आरएसएस वालों की। आर.एस.एस. के पूर्व प्रचारक मनोहर लाल खट्टर को हरियाणा का मुख्यमंत्री बनाना, भाजपा के वर्तमान महासचिवों में पांच-राम माधव, राम लाल, पी मुरलीधर राव, भूपेंद्र यादव एवं सरोज पांडे-आरएसएस के बनाना। महाराष्ट्र का मुख्यमंत्री आरएसएस के प्रचारक को बनाना, गडकरी को मंत्री बनाना तथा इसी प्रकार अन्य कितने ही अपने आदमियों को शासकीय कुर्सियों पर विराजमान करवा देना आरएसएस के हिस्से में आया है।

परन्तु आरएसएस अपनी विचारधारा के एजेंडों को भी तेजी के साथ आगे बढ़ाना चाहती है। इसलिए वह कह रही है कि पृथ्वी राज चौहान के पश्चात् ८०० वर्षो के बाद हिन्दुओं के हाथों में दिल्ली की सत्ता आई है। विश्व हिन्दू परिषद के अशोक सिंघल ने कहा कि, '................हजारों वर्ष पूर्व सभी कुछ संस्कृत में लिखा गया था। यदि तुम इसे खत्म करना चाहते हो, तो तुम देश को खत्म कर देना चाहते हो।' सुषमा स्वराज ने गीता प्रेरणा महोत्सव पर बोलते हुए कहा कि गीता को राष्ट्रीय ग्रंथ घोषित किया जाए। विश्व हिन्दू परिषद के अशोक सिंघल ने कहा कि प्रधानमंत्री को हिन्दुओं के इस पवित्र ग्रंथ को तत्काल राष्ट्रीय ग्रंथ घोषित कर देना चाहिए। ज्योतिष को विज्ञान के ऊपर बताया जा रहा है। मोदी, जोकि स्वयं आरएसएस का प्रचारक रहा है। कह रहा है कि 'महाभारत का कथन है कि कर्ण मां की गोद से पैदा नहीं हुआ था। इसका मतलब यह है कि उस समय जेनेटिक साईंस मौजूद था......हम गणेश जी की पूजा करते हैं, कोई तो प्लास्टिक सर्जन होगा उस जमाने में, जिसने मनुष्य के शरीर पर हाथी का सिर रख करके प्लास्टिक सर्जरी का प्रबंध किया होगा।' अर्थात् सभी कुछ प्राचीन ग्रंथों में है। प्राचीन ग्रंथ, इनके अनुसार हिन्दुओं के ग्रंथ हैं। यह बात अलग है कि इन प्राचीन ग्रंथों में एक बार भी शब्द हिन्दू नहीं आता। संस्कृति विद्या एवं भाषा पर हमला बोला हुआ है। इतिहास के सभी स्त्रोतों को दफन किया जा रहा है। समस्त इतिहास को पुनः कट्टर हिन्दू दृष्टिकोण से लिखवाने की तैयारी की जा रही है। यही कारण है कि सुब्रामणियम स्वामी कह रहा है कि रोमिला थापर एवं विपन चंद्र जैसे इतिहासकारों की पुस्तकें जला देनी चाहिएं। दीनानाथ बत्रा द्वारा 'द हिन्दू-द अल्ट्रनेटिव हिस्ट्री' पुस्तक की बिक्री पर पाबंदी लगवा दी गई है। भारतीय इतिहास खोज संस्था का अध्यक्ष डा. सुदर्शन राव को बनाया गया है। उसकी खोज प्रतिभा पर ही प्रश्नचिन्ह लगता आ रहा है, क्योंकि वह इतिहासकार नहीं, बल्कि हिन्दूवादी विचारों का प्रचारक है। हिन्दूवादी विचारों का प्रचारक होने के कारण ही दीनानाथ बत्रा को भारतीय शिक्षा नीति आयोग का अध्यक्ष थोपा गया है तथा हरियाणा की भाजपा सरकार ने शिक्षा विभाग का सलाहकर भी नियुक्त किया है। उन द्वारा लिखित 9 पुस्तकों के सैट को गुजरात के 42 हजार स्कूलों में जबरदस्ती लगाया गया है, जोकि केवल मिथ्या एवं गैर वैज्ञानिक घटनाओं पर ही आधारित हैं।

आरएसएस का एक हिस्स ऐसा भी है जोकि उपरोक्त वर्णन की गई बातों से भी आगे जाकर लव जेहाद, धर्म परिवर्तन, देश को हिन्दू राष्ट्र बनाने, भाजपा वालों को रामजादे एवं अन्य राजनीतिक पार्टियों को हरामजादे कहने जैसी बाते करने तक जा रहा है।

चाहे मोदी स्वयं आरएसएस का प्रचारक रहा है, परन्तु वह ऐसे हिस्से को नसीहतें दे रहा है कि 'लक्ष्मण रेखा मत लांघो।' इनके प्रचार के कारण ही चुनाव रैलियों में दमगजे मारने वाला नरेन्द्र मोदी शर्मिंदा हुआ संसद में खड़ा हो जाता है। इसका कारण क्या है? वास्तव में मोदी को यह स्पष्ट है कि आरएसएस के हिन्दुत्व प्रतिक्रियावाद को शासन चलाने एवं कायम रखने के लिए एक पत्ते के तौर पर प्रयोग में लाया जा सकता है, परन्तु यदि साम्प्रदायिक हिंसा शुरू हो जाती है तो यह सरकार के लिए उचित नहीं रहेगा। क्यों? क्योंकि इस तरह से पूंजी लगाने वाले पूंजीपति अपने लिए खतरा महसूस करेंगे। इसलिए मोदी की राजनीतिक जरूरतों के कारण आरएसएस वालों के साथ मेल-मिलाप में गंभीर दरारें आ रही हैं तथा आती रहेंगी। आने वाले समय में ये इस सरकार में अस्थिरता पैदा करने का कारण भी बनेंगी। मोदी इस खतरे को भलीभांति भांप कर चल रहा है, तभी हर मसले पर चुप्पी साध लेता है।

अतः समस्त जन पक्षीय शक्तियों को यह समझने की आवश्यकता है कि जहां पर सरकार का फासीवादी एजेंडा बढ़ाने की चाहत है, वहीं पर इसके अपने हलकों के दरम्यान विरोध भी है चाहे फासीवादी एजेंडा लागू होने के खतरे अधिक हैं, परन्तु व्यापक मंच बनाने की संभावनाएं भी मौजूद हैं तथा यह बनाया जाना चाहिए, ताकि खतरनाक फासीवादी एजेंडे को रोकने की ओर आगे बढ़ा जा सके। वर्ष 2015 की यही मांग है।

हिन्दी अनुवाद

बलवंत सिंह लैक्चरार

डायबिटीज में कॉफी फायदेमंद

लंदनः इंस्टीट्यूट ऑफ साइंटिफिक इनफारमेशन ऑन कॉफी ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट में कहा है कि चार कप कॉफी रोजाना पीने से मधुमेह (डायबिटीज) का खतरा 25 फीसदी तक कम हो जाता है। विज्ञानियों का कहना है कि तीन से चार कप रोजाना पीने से टाईप-2 डायबिटीज में प्रति कप सात से आठ फीसदी का फायदा मिलता है। दिलचस्प बात यह है कि इसमें कैफीन का योगदान नहीं है। विज्ञानियों के अनुसार कैफीन या बिना कैफीन दोनों तरह के कॉफी से समान नतीजे मिले हैं। साथ ही उबली कॉफी की जगह फिल्टर कॉफी ज्यादा फॉयदेमंद होती है ...एजेंसी

केरल में काला जादू के खिलाफ बनेगा कानून

तिरुवंनतपुरम : राज्य में काला जादू के चलते हाल ही में हुई दो लड़कियों की मौत के बाद राज्य सरकार ने इसके खिलाफ कड़े कदम उठाने का निर्णय लिया है। इसके लिये सरकार कानून लाने की तैयारी कर रही है। राज्य के गृह मंत्री रमेश चेनिथला ने बताया कि काले जादू को खत्म करने के लिये कानून का मसौदा तैयार है। जल्द ही उसे सदन में लाया जायेगा । उन्होंने बताया कि सिर्फ कानून लाकर काला जादू खत्म नहीं किया जा सकता । इसके लिये बड़े स्तर पर जागरूकता अभियान भी चलाया जायेगा

अमर उजालाः 5-12-2014

अपील

पत्रिका के समस्त पाठक कृपया इस पत्रिका के कम से कम दो ग्राहक और बनायें।

संपादक मंडल

सत्य

-कर्नल इंगरसोल

असंख्य वर्षों में अपनी इच्छाओं की पूर्ति तथा अपनी लालसाओं को संतुष्ट करने के अनन्त प्रयत्नों द्वारा आदमी ने शनैः शनैः अपने दिमाग को विकसित किया है, अपने अगले दो पांवों को हाथों का रूप दिया है और अपने अंधेरे दिमाग में तर्क की चंद किरणों को स्थान दे पाया है।

उसके मार्ग में अज्ञान बाधक हुआ, भय बाधक हुआ, गलतियां बाधक हुई। तो भी वह आगे बढ़ा, किन्तु उसी हद तक जिस हद तक वह यथार्थ 'सत्य' को पा सका। असंख्य वर्षों तक उसने टटोला है, वह रेंग-रेंग कर चला है, उसने संघर्ष किया है, वह ऊपर उठा है और उसने प्रकाश की ओर बढ़ने के लिए ठोकरें खाई हैं। उसका मार्ग अवरुद्ध हुआ है, उसे रुकना पड़ा है, उसने धोखा खाया है, ज्योतिषियों से, अवतारों से, पोपों, पुरोहितों से। उसके साथ संतों ने विश्वासघात किया है, उसे अवतारों ने पथ-भ्रष्ट किया है, उसे शैतानों और भूत-प्रेतों ने डराया है, उसे राजाओं और महाराजाओं ने गुलाम बनाया है, उसे वेदियों तथा सिंहासनों ने लूटा है।

शिक्षा के नाम पर उसका दिमाग गलतियों से, चमत्कापरों से, झूठों से, असंभव घटनाओं से, बेहूदी और बुरी बातों से भर दिया गया है। धर्म के नाम पर उसे नम्रता के साथ अभिमान, प्रेम के साथ घृणा तथा क्षमा के साथ-साथ बदला लेने की शिक्षा दी गई है।

लेकिन संसार बदल रहा है। हम इन असभ्य धर्म ग्रंथों और उनके पाशविक सिद्धांतों से तंग आ गए हैं।

जीवन की गलतियों और अंधकार के बीच प्रकाशमान सत्य को देखने से बढ़कर अधिक महत्वपूर्ण कुछ नहीं है।

सत्य संसार का मानसिक धन है

सत्य की खोज से श्रेष्ठतर कोई धंधा नहीं।

उन्नति के चमकते हुए गुंबद का आधार सत्य है, ढांचा सत्य है।

सत्य प्रसन्नता की जननी है। सत्य सभ्य बनाता है, श्रेष्ठ बनाता है, पवित्र बनाता है। सबसे ऊंची महत्वाकांक्षा जो किसी की भी हो सकती है, वह सत्य ज्ञान की है।

सत्य आदमी को परोपकार करने का अधिक से अधिक सामर्थ्य देता है। सत्य तलवार भी है, ढाल भी है। यह आत्मा का पवित्र प्रकाश है।

जो आदमी किसी सत्य का पता लगाता है, वह अंधकार में प्रकाश फैलाता है।

सत्य खोज करने से मिलता है, तजुर्बे करने से मिलता है, तर्क करने से मिलता है।

हर आदमी को उसकी इच्छा के अनुसार, उसकी योग्यता के अनुसार खोज करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। संसार का वांगमय उसके सामने खुला होना चाहिए-कोई बात निषिद्ध नहीं, मना नहीं, छिपी नहीं। कोई विषय ऐसा नहीं रहना चाहिए। जो इतना अधिक 'पवित्र' माना जाए कि उसे समझाने का प्रयत्न ही न किया जा सके। हर आदमी को

अपने स्वतंत्र परिणामों पंर पहुंचने और उन्हें ईमानदारी के साथ व्यक्त करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।

जो किसी भी खोजी को इस लोक या परलोक में दंड का भय दिखाता है, वह मानव जाति का शत्रु है और जो किसी खोजी को 'सच्चिदानंद' (ईश्वर-सं) में लीन हो जाने की रिश्वत देता है, वह अपने मानव बंधुओं के साथ विश्वासघात करता है।

बिना सच्ची मुक्ति के सच्ची खोज हो ही नहीं सकती-देवताओं और आदमियों के भय से मुक्ति।

इसलिए सारा खोज का कार्य-सारे तजुर्बे-तर्क के प्रकाश में होने चाहिएं।

हर आदमी को अपने प्रति ईमानदार होना चाहिए-अपने भीतरी प्रकाश के प्रति। हर आदमी को अपने ही मस्तिष्क की प्रयोगशाला में और केवल अपने लिए संसार भर के सिद्धांतों-इन तथाकथित वास्तविकताओं का परीक्षण करना चाहिए। तर्कानुकूल सत्य ही एकमात्र उसका पथप्रदर्शक और स्वामी होना चाहिए।

इस प्रकार जो भी सत्य लगे उसे प्रेम करना मानसिक गुण है-बुद्धि की पवित्रता है। यही सच्चा मनुष्यत्व है। यही स्वतंत्रता है।

धार्मिक संस्थाओं, महंतों, दलों, राजाओं और देवताओं की आज्ञा से अपनी बुद्धि की अवहेलना करना, गुलाम होना, दास बनना है।

वह केवल ठीक ही नहीं है, किंतु यह तो हर आदमी का कर्त्तव्य है कि वह सोचे, अपने लिए स्वयं खोज करे और यदि कोई आदमी उसे डरा कर अथवा बल प्रयोग करके उसके मार्ग का बाधक बनता है, तो वह आदमी अपने मानव बंधुओं को पतनोन्मुख और दास बनाने के लिए सभी कुछ हर रहा है।

आदमी को चाहिए कि वह अपने भीतर की इस सच्चाई को सबसे अधिक मूल्यवान हीरे की तरह सुरक्षित रखें।

उसके सामने जो भी प्रश्न आएं, उसे बिना पक्षपात के उन पर विचार करना चाहिए-राग-द्वेष से रहित होकर बिना इच्छा या भय के वशीभूत हुए।

उसका उद्देश्य-एकमात्र सत्य की प्राप्ति होना चाहिए। उसे जानना चाहिए कि यदि वह बुद्धि की बात सुनें तो सत्य से कभी खतरा नहीं, असत्य से है। उसे प्रमाणों को, तर्कों को ईमानदारी से बुद्धि की तुला पर रखकर तोलना चाहिए, ऐसी तुला पर जो राग-द्वेष से प्रभावित न हो। उसे किसी शब्द प्रमाण की, किसी बड़े नाम की, परम्परा की अथवा सिद्धांत की परवाह नहीं करनी चाहिए। उसे किसी भी ऐसी चीज की परवाह नहीं करनी चाहिए, जिसे उसकी बुद्धि सत्य न मानती हो।

अपने संसार का उसे ही स्वयं महाराजा होना चाहिए और उसकी अपनी आत्मा के सिर पर ही सुनहरी ताज रहना चाहिए। उसके साम्राज्य में किसी प्रकार के दबाव, किसी प्रकार के भय के लिए स्थान ही नहीं होना चाहिए।

पक्षपात, अभिमान, घृणा, जुगुप्सा-सत्य और उन्नति के शत्रु हैं।

सत्य का यथार्थ खोजी 'प्राचीन' को 'प्राचीन' होने के कारण स्वीकार नहीं करना और 'नवीन' को 'नवीन' होने के कारण अस्वीकार नहीं करता। वह किसी बात को केवल इसलिए स्वीकार नहीं करता कि वह मर गया है और किसी के भी कथन का केवल इसलिए खंडन नहीं करता कि वह जीवित है। उसके लिए किसी भी कथन का मूल्य इसी बात में है कि वह कितना तर्कानुकूल है। वह यह नहीं देखता कि बात किसने कही है। बात कहने वाला एक राजा

भी हो सकता है, एक गुलाम भी हो सकता है-एक दार्शनिक भी, एक नौकर भी। इससे कथन की सत्यता अथवा तर्कानुकूलता न बढ़ती है न घटती है। कथन का मूल्य कहने वाले के यश अथवा पद से सर्वथा स्वतंत्र है।

केवल झूठ को ही यश और पद की तथा वर्दियों और बड़ी पगड़ियों की सहायता की आवश्यकता होती है।

जो बुद्धिमान है, जो वास्तव में ईमानदार और विचारवान हैं, वे संख्या से अथवा बहुमत से प्रभावित या शासित नहीं होते।

वे उसी को स्वीकार करते हैं, जिसे वे वास्तव में विश्वास करते हैं कि यह सत्य है। उन्हें पूर्वजों की सम्मतियों की कुछ परवाह नहीं होती, मतों की कुछ परवाह नही ंहोती, सिद्धांतों की कुछ परवाह नहीं होती, यदि वे उन्हें अपनी बुद्धि के अनुकूल नहीं जंचते।

सभी दिशाओं में वे सत्य की खोज करते हैं और जब उन्हें प्राप्त होता है, तो आनंद के साथ स्वीकार करते हैं। अपनी पहले की काल्पनिक सम्मतियों के बावजूद, पक्षपात और घृणा के भावों के बावजूद।

ईमानदार और बुद्धिमान आदमियों का एक यही रास्ता है। उनके लिए और दूसरा कोई रास्ता है ही नहीं।

मानव प्रयत्नों की सभी दिशाओं में आदमी सत्य की खोज में लगे हैं-यथार्थ बातों की खोज में। राजनीतिज्ञ संसार के इतिहास को पढ़ता है, सभी जातियों की संख्या-गणना का संग्रह करता है, इसलिए कि उसकी अपनी जाति अतीत की गल्तियों से बची रहे। भूगर्भ-वेत्ता यथार्थ बातों की जानकारी के लिए चट्टानों में बैठता है, पर्वतों पर चढ़ता है, अविद्यमान ज्वालामुखी पर्वतों को देखने जाता है, द्वीपों तथा महाद्वीपों को लांघता है, इसलिए कि उसे संसार के इतिहास का कुछ पता लग जाए। वह सत्य चाहता है।

रसायनशास्त्रज्ञ, चीजें लगाने के पात्र और नली के साथ असंख्य तजुर्बे करके पदार्थों के गुणों का पता लगाने का प्रयत्न करता है-प्रकृति ने जो कुछ छिपा रखा है, उसे प्रकट करने का।

बड़े-बड़े यंत्र-वेत्ता ठोस वस्तुओं के संसार में रहते हैं। वे प्राकृतिक साधनों द्वारा प्रकृति पर विजयी होना चाहते हैं और चाहते हैं, उसकी शक्तियों का उपयोग करना। वे सत्य चाहते हैं-यथार्थ बातें।

चिकित्सक और शल्य-कर्मी निरीक्षण, तजुर्बे और तर्क का आश्रयकर है। वे मानव शरीर से, मांसपेशियों, रक्त और रगों से, दिमाग की आश्चर्यकर बातों से परिचित हो जाते हैं। वे सत्य के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहते।

सभी विज्ञानों के विद्यार्थी यही करते हैं। वे चारों और यथार्थ बातों की तलाश में रहते हैं और यह सबसे बड़े महत्व की बात है कि उन्हें इस प्रकार जिन यथार्थ बातों की जानकारी प्राप्त होती है, वे उन्हें संसार को दे देते हैं।

जितनी उनकी बुद्धि है, उतना ही उनका साहस भी होना चाहिए। भले ही जो मर गए हैं, उन्होंने कुछ भी कहा हो, भले ही जो जीते हैं, उनका कुछ भी विश्वास हो, उन्हें बताना चाहिए कि वे क्या जानते हैं, उनमें मानसिक साहस होना चाहिए।

यदि आदमी के लिए सत्य की प्राप्ति अच्छी बात है। यदि उसके लिए यह अच्छा है कि वह ईमानदारी से विचार करे और उदारता का बर्ताव करे, तो दूसरों के लिए भी यह अच्छी बात है कि वे उस सत्य को जो इस प्रकार प्राप्त हुआ है, जाने।

हर आदमी में अपने विचारों को ईमानदारी से प्रकट करने का साहस होना चाहिए। इससे सत्य को प्राप्त करने वाला और उसे प्रकट करने वाला जनता का उपकार करता है।

जो ईमानदाराना विचारों को प्रकट करने में बाधा डालते हैं या डालने का प्रयत्न करते हैं, वे सभ्यता के शत्रु हैं-सत्य के शत्रु हैं। उस आदमी से बढ़कर स्वार्थी और निर्लज्ज कोई दूसरा हो ही नहीं सकता, जो अपने विचारों को तो स्वतंत्रतापूर्वक प्रकट करने का अधिकार चाहता है, किन्तु दूसरों को वही अधिकार नहीं देना चाहता।

ऐसा कहने से काम नहीं चलेगा कि कुछ बातें इतनी पवित्र हैं कि आदमी को उनके बारे में छानबीन करने और उनकी परीक्षा करने का अधिकार ही नहीं।

कौन जानता है कि वे 'पवित्र' हैं? क्या कोई भी चीज 'पवित्र' हो सकती है, जिसके बारे में हम यह तक नहीं जानते कि वह सत्य भी है या नहीं।

शताब्दियों तक स्वतंत्र-वाणी को परमात्मा के लिए अपमानजनक समझा गया। ईमानदारी से अपने विचार प्रकट करने से बढ़कर कोई बात अधिक 'नास्तिक' नहीं समझी गई। युगों तक बुद्धिमानों के मुंह सिले रहे। जिन मशालों को सत्य ने जलाया, जिन्हें साहस ऊपर उठाकर ले चलता था, वे रक्त से बुझा दी गई।

सत्य सदैव वाणी की स्वतंत्रता का पक्षधर रहा है। उसने सदैव चाहा है कि उसका परीक्षण हो, उसकी सदा की इच्छा रही है कि लोग उसे जानें और समझें। स्वतंत्रता, विचार-परिवर्तन, ईमानदारी, परीक्षण, साहस-ये सब सत्य के मित्र और सहायक हैं। सत्य को प्रकाश और खुला क्षेत्र प्रिय है। यह इंद्रियों को-निर्णय कर सकना तथा बुद्धिपूर्वक विचार कर सकना आदि जितनी भी मन की ऊंची और श्रेष्ठतर शक्तियां हैं- उनको अपील करता है। यह उत्तेजना को शांत करना है, पक्षपात को नष्ट करता है और बुद्धि रूपी प्रदीप को और भी अधिक प्रज्जवलित करता है।

यह आदमी को रेंगने के लिए नहीं कहता। उसे अज्ञानियों की पूजा की अपेक्षा नहीं। यह भय-त्रस्तों की प्रार्थनाएं या स्तुतियां नहीं सुनना चाहता। यह प्रत्येक मनुष्य से कहता है-

'अपने लिए स्वयं सोचो। देवता की तरह स्वतंत्र रहो और अपने विचारों को ईमानदारी से प्रकट कर सकने लायक शील और साहस रखो'

हमें सत्य का अनुकरण क्यों करना चाहिए? हमें खोज क्यों करनी चाहिए? तर्क क्यों करना चाहिए? हम में मानसिक ईमानदारी और उदारता क्यों होनी चाहिए? हमें क्यों अपने विचारों को ईमानदारी से प्रकट करना चाहिए? इन सब प्रश्नों का एक ही उत्तर है-मानवता के कल्याण के लिए।

मस्तिष्क का विकास होना चाहिए। संसार को सोचना, सीखना चाहिए। वाणी स्वतंत्र रहनी चाहिए। संसार को सीखना चाहिए कि अंधीश्रद्धा कोई गुण नहीं है और जब तक बुद्धि संतुष्ट नहीं होती, तब तक किसी प्रश्न का निर्णय नहीं होता।

इस प्रकार मनुष्य प्रकृति की बहुत-सी बाध ााओं को जीत लेगा। वह अनेक रोगों को अच्छा कर लेगा या उनसे बचा रहेगा। वह दुख-दर्द में कमी करेगा। वह आयुष्य बढ़ाएगा, जीवन को श्रेष्ठ और हरा-भरा बनाएगा। प्रत्येक दिशा में वह अपनी शक्ति बढ़ाएगा। वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति करेगा, रसों का स्वाद चखेगा। वह ऐसी व्यवस्था करेगा कि सभी को छाजन और पहनने को वस्त्र मिलें, भोजन और उसे पकाने के लिए जलावन मिले, घर मिले और उनमें प्रसन्नतापूर्वक रहने को

मिले।

वह अभाव और अपराध को संसार में रहने न देगा। वह भय के विषैले सर्पों और मिथ्या-विश्वास के राक्षसों को मार डालेगा। वह बनेगा बुद्धिमान, स्वतंत्र, ईमानदार और शांत।

आकाश का महाराज उसके सिंहासन से उतार दिया जाएगा-नरक की आग बुझा दी जाएगी। आदमी 'पवित्र' भिखमंगे, ईमानदार और उपयोगी बन जाएंगे। ढोंगी दूसरों को डरा कर उनसे रकमें न उगाह सकेंगे। असत्य कथनों को पवित्र न समझा जाएगा। किसी दूसरे जीवन के लिए इस जीवन का बलिदान नहीं किया जा सकेगा। देवी-देवताओं से प्रेम करने के बजाए मनुष्य परस्पर एक-दूसरे से प्रेम करेंगे। आदमी जो उचित समझेगा वह करेगा, किंतु किसी परलोक में कुछ प्राप्ति की आशा से नहीं, परन्तु इसी लोक में प्रसन्न रहने के लिए। आदमी जान जाएगा कि एकमात्र प्रकृति ही सच्चा इतिहास है। उसे स्वयं प्रयत्न करके सितारों और बादलों द्वारा कही गई कहानियों को पढ़ना सीखना चाहिए।

उसे पत्थरों और पृथ्वी, समुद्र और दरिया, वर्षा और अग्नि, पौधों और उनके फूल-जीवन के जितने विविध रूप हैं तथा संसार की और भी जितनी वस्तुएं तथा शक्तियां हैं-सभी के द्वारा कही गई कहानियों को पढ़ना-सीखना चाहिए।

जब वह इन कथाओं को पढ़ेगा, इन रिकार्डो को समझेगा-तब उसे पता लगेगा कि आदमी को स्वयं अपने ऊपर भरोसा करना चाहिए, क्योंकि प्रकृति के परे कुछ भी नहीं है और आदमी स्वयं ही अपना 'ईश्वर' है।

विचार स्वातंत्र्य के निकट-अपने स्वाभिमान को सुरक्षित रखने के विरुद्ध-अपने भीतर की सच्चाई को एकदम स्वच्छ रखने के विरुद्ध किसी तर्क की कल्पना नहीं की जा सकती।

(लेखक की पुस्तक 'स्वतंत्र चिंतन' में से)

(...अगले अंक में जारी)

तेज चलो, वजन घटेगा

तेज कदमों से चलना बढ़ते वजन को नियंत्रित रखने का एक जरिया हो सकता है। अधिक मोटे या साठ की उम्र पार कर चुके लोगों को अक्सर व्यायाम करने में दिक्कत होती है। ऐसे लोगों को रोजाना 30 से 45 मिनट तेज कदमों से चलना चाहिए। ऐसा करने से शरीर में जमा अतिरिक्त फैट और कैलोरी बर्न होकर ऊर्जा में तब्दील हो जाती है। इसके अलावा व्यक्ति पूरा दिन एक्टिव महसूस करता है। दिल की सेहत के लिए भी पैदल चलना बेहतर है। पैदल चलने से कॉरनेरी हार्ट डिजीज, ऑस्टियोपोरोसिस, ब्रेस्ट कैंसर, डायबिटीज टाइप 2 होने की सम्भावना भी कम हो जाती है। इसके अलावा शूगर नियंत्रित रखने के लिए नियमित वॉक अवश्य करनी चाहिए। रोजाना पैदल चलने से व्यक्ति मैंटली एक्टिव रहता है। जो लोग व्यायाम नहीं कर सकते, उन्हे अपने हार्मोन, ब्लड प्रेशर आदि को नियंत्रित रखने के लिए पैदल वॉक करनी चाहिए।

अनमोल वचन

''लोगों के हुजूम प्रायः बे-उसूले होते हैं, बेकाबू इच्छाओं वाले जज़्बाती एवं नतीजों से बेपरवाह, उनको अनुशासन में रखने के लिए आवश्यक है कि भय से भर दिया जाए। पुरातन लोगों ने अत्यन्त चतुराई की इसके लिए ईश्वर का अविष्कार किया तथा मृत्योपरांत मिलने वाले दण्ड का भय उत्पन्न किया।''

पोलिवियस

धार्मिक डेरों और राजनीति का नापाक गठजोड़

-सुमीत सिंह, अमृतसर

पिछले महीने हरियाणा के जिला हिसार के कसबे बरवाला में सतलोक आश्रम के कथित संत रामपाल को पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के आदेश पर कत्ल और अदालत की अवमानना के आरोप में हरियाणा पुलिस द्वारा, कई दिनों की मेहनत और घेराबंदी के बाद गिरफ्तार किया गया। इस कथित संत को गिरफ्तार करने के लिए हरियाणा सरकार को पुलिस और सुरक्षा बलों की 30 कंपनियों के अलावा 400 पुलिस वाहनों, 300 बसों, 40 बुलेट प्रूफ गाड़ियों और 20 पुलिस कंट्रोल रूमों का इंतजाम करना पड़ा। इस पूरे ऑप्रेशन पर सरकार द्वारा लगभग तीस करोड़ रूपये खर्च किये गये। यह पैसा आम जनता के विकास हेतु खर्च किया जा सकता था।

रामपाल ने गिरफ्तारी से बचने के लिए न सिर्फ बीमार होने का नाटक किया बल्कि अपने हजारों श्रद्धालुओं और खासकर औरतों और बच्चों को ढाल बनाकर डेरे में पुलिस के दाखिले को रोकने की कोशिश भी की। उसके कमांडो ने पुलिस पर पैट्रोल बम्ब और पत्थर भी फेंके। उसकी गिरफ्तारी के बाद डेरे की तलाशी के दौरान पुलिस को भारी गिनती में हथियार और गोली सिक्का मिलने के अलावा शक्तिवर्धक दवाइयों और अल्ट्रसाऊंड मशीन आदि सामान बरामद हुआ । दिलचस्प पहलू यह है कि यह कथित संत रामपाल अपने अंदर जिस कथित दैवी शक्ति होने का दावा करके कई सालों से लाखों भोले-भाले श्रद्धालुओं को मूर्ख बना रहा था, वह दैवी शक्ति उसे गिरफ्तारी से बचाने के लिए मददगार साबित नहीं हो सकी।

पिछले एक दशक से हमारे देश में धर्म के नाम पर डेरावाद और बाबावाद बड़े स्तर पर फैलने के साथ-साथ राजनैतिक तौर पर शक्तिशाली भी हो रहे हैं। हमारे समाज में ऐसे पाखंडी साधु-संतों, बाबाओं , स्वामियों, ज्योतिषियों और धार्मिक प्रचारकों की कोई कमी नहीं है जो अनपढ़ और पढ़े-लिखे लोगों को अंधविश्वासी और मूर्ख बनाने में पूरे चालाक हैं। धर्म के नाम से लोगों का आर्थिक, शारीरिक और मानसिक शोषण करना ही उनका मकसद होता है। ऐसा करने के लिये बाबा के एजेंटों द्वारा उसकी कथित दैवी शक्तियों का बड़े पैमाने पर प्रचार किया जाता है जिसके बहकावे में आकर अंधविश्वासी लोग फंस जाते हैं। ऐसे पाखंडी संतो-बाबाओं की मान्यता बढ़ाने के लिए राजनेताओं, वरिष्ठ पुलिस एवं अन्य अधिकारियों और मीडिया की मिली भगत शामिल होती है। इसी लिए इन डेरों का दिन-ब-दिन वोट बैंक बढ़ता जा रहा है।

लोगों के इन पाखंडी संतो, बाबाओं और डेरों के झांसे में फसने के पीछे कई तरह के आर्थिक, मानसिक, सामाजिक और राजनैतिक कारण जिम्मेदार होते हैं।

पिछले दो दशकों से केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा वैश्वीकरण, उदारीकरण और निजीकरण की ऐसी जनविरोधी नीतियां लागू की जा रही हैं, जिससे देश में मंहगाई, गरीबी, भूखमरी, बेरोजगारी, बिमारी, अनपढ़ता, असमानता, बाल मजदूरी और भ्रष्टाचार जैसी गंभीर समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं और उनकी मार सिर्फ गरीब और दलित वर्ग के लोगों पड़ रही है। ज्यादातर यही लोग मानसिक रोगों का शिकार हो रहे हैं।

यह हकीकत है कि हमारे देश के 95 फीसदी लोग आध्यात्मवादी सोच रखने के कारण उनमें वैज्ञानिक सोच, आत्मविश्वास और संघर्ष करने की भावना की बेहद कमी है। अपनी इसी अंधविश्वासी मानसिकता के कारण ही वे अपने जीवन की समस्याओं, बिमारियों, मानसिक उलझनों

और कमियों के कारणों को समझने और इनके लिए जिम्मेदार भ्रष्ट और पूंजीवादी सरकारों की गरीब विरोधी साजिशों और नीतियों के विरुद्ध संघर्ष करने में अक्षम है। इसीलिए ज्यादातर ऐसे लोग अपने सुनहरे भविष्य और कथित अगले जन्म को संवारने के लालच में पाखंडी संतों बाबाओं, स्वामियों और धार्मिक प्रचार की मृगतृष्णा में फंस जाते हैं। दुख की बात यह भी है कि डेरों और धार्मिक स्थानों में दिन-रात सेवा करने वाले इन अंधविश्वासी श्रद्धालुओं के बजुर्ग मां-बाप, बच्चे और मरीज इनकी सेवा में फंस कर भूख प्यास से दम तोड़ जाते हैं।

बड़ी शर्म की बात है मौजूदा शोषणमूलक व्यवस्था के पक्षधर इन डेरों के समागमों में ज्यादातर यही मिथ्या प्रचार किया जाता है कि तुम्हारी सभी समस्याओं, दुखों, मुश्किलों और बिमारियों का खातमा भगवान की कृपा, तुम्हारी किस्मत या पिछले जन्मों के कर्मो के मुताबक ही होगा। इसलिये तुम्हें किसी तरह का संघर्ष या अपने संत प्रति कोई किन्तु-परन्तु करने की जरूरत नहीं है। ऐसा अंधविश्वासी प्रचार करके वे हमें रोजाना मूर्ख बना रहे हैं।

इसके अलावा हमारी शिक्षा प्रणाली में भी अंग्रेजों के जमाने के वही रूढ़ीवादी पौराणिक पाठ्यक्रम पढ़ाए जा रहे हैं जो आम लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, आत्मविश्वास और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने से रोकते हैं। सुबह-शाम रोजाना टीवी चैनलों पर पाखंडी, साधु-संतों, स्वामियों, ज्योतिषियों और बाबाओं द्वारा किए जा रहे अंधविश्वासी प्रचार, धार्मिक स्थानों, डेरों, समाधियों पर मन्नत मांगती भीड़ के और कथित बाबाओं की लूट और झूठ की दुकानें, यह सब मनुष्य की मानसिकता को बीमार कर रहे हैं। बेशक केन्द्र सरकार द्वारा पाखंडियों की गतिविधियों पर रोक लगाने के लिए ड्रग्ज और मैजिक रैमिडीज, आपत्तिजनक इश्तिहारबाजी कानून 1954 (Drugs and Magic Remedies objectionable Advertisement Act, 1954) को लागू किया गया था परन्तु किसी भी सरकार द्वारा इस कानून को ईमानदारी से लागू नहीं किया गया, जिस कारण पाखंडियों द्वारा लूट का धंधा बेरोकटोक चलता जा रहा है।

डेरों और धार्मिक स्थानों के धार्मिक प्रचारकों और साधुओं संतों की अपने श्रद्धालुओं के साथ सब से बड़ी बेईमानी यह है कि वे आम लोगों को तो माया, झूठ, चोरी, बेईमानी, नशा, अहिंसा, भ्रष्टाचार, पराई औरत, डर, लालच और दूसरे अनैतिक कामों से दूर रहने की नसीहत देते हैं पर उनके आलीशान डेरों की अय्याशी और ऐशो-आराम की जिंदगी इनके प्रवचनों से बिल्कुल उलट होती है। ये बाबा-संत लोग कई-कई गनमैनों और हथियारों के साथ महंगी गाड़ियों में घूमते हैं। पिछले कई सालों से डेरों और धार्मिक स्थानों में कत्ल, बलात्कार, अपहरणों की अपराधिक घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। सब से ज्यादा दुख की बात यह है कि हमारे समाज के पढ़े लिखे वर्ग के लोग जिनमें डाक्टर, अध्यापक, वकील, इंजीनियर, पुलिस और सिविल अधिकारी, पत्रकार, राजनेता, मंत्री और प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति तक शामिल हैं, इन बाबाओं और साधुं-संतों के श्रद्धालू बन कर इनके पैरों में अपना माथा रगड़ते हैं और इनके नाजायज कामों को मान्यता देने की सिफारिश भी करते हैं। ऐसे हालात में आम लोगों और पिछड़े वर्गो से वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने की उम्मीद कैसे की जा सकती है। वैसे भी हमारी सरकारें और सियासी नेता नहीं चाहते कि लोगों में वैज्ञानिक चेतना की रोशनी फैले।

यदि सभी राजनैतिक दल डेरों से सियासी मदद लेनी बंद कर दें तो संत रामपाल जैसों को शक्तिशाली बनने और अपराध करने से रोका जा सकता है। बेशक धर्म और जाति के नाम पर वोट मांगने पर कानूनी पाबंदी है पर देश में कहीं भी इसका पालन नहीं किया जा रहा। यही वजह है कि धर्म के नाम पर चलते इन डेरों के पास एक बड़ा वोट बैंक होने के कारण सभी सियासी दल (वामपंथियों को छोड़कर) चुनाव के दिनों में डेरों के संतों के आगे माथा रगड़ते हैं। इसी लिए इन डेरों में होते नाजायज

कामों के खिलाफ कोई कानूनी कार्रवाई नहीं की जाती। मिसाल के तौर पर सिरसा के डेरे द्वारा चुनाव में कभी कांग्रेस, कभी अकाली दल और अभी भाजपा को सियासी मदद देने के कारण डेरामुखी के खिलाफ चलते अपराधिक मामलों में सभी सरकारों द्वारा जानबूझकर अभी तक कोई ठोस कारवाई नहीं की गई है।

ऐसे ही पुट्टापर्थी का सत्य साईं बाबा अपनी सारी उम्र अपनी कथित दैवी शक्तियों के नाम पर अंधविश्वास फैला कर लोगों को लूटता रहा और समय की सरकारों और मीडिया ने उसके चमत्कारों का पर्दाफाश करने की बजाये उसे भगवान ही मानना शुरू कर दिया था। तर्कशील लहर के संस्थापक डा अब्राहम थामस कावूर ने उस की दैवी शक्तियों का जनता के बीच कई बार पर्दाफाश किया था पर उसके बावजूद मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति तक उसके आगे माथा रगड़ते रहे। आखरी वक्त में उसकी कथित दैवी शक्ति उसको जिंदा नहीं रख सकी और उसे डाक्टरी ईलाज के लिए अस्पताल की शरण लेनी पड़ी। अपनी भविष्यवाणी के मुताबिक वह 96 वर्ष की बजाये 85 साल की आयु में ही लगभग चालीस हजार करोड़ की जायदाद छोड़ कर मर गया। इसी तरह आसा राम बापू और उसका बेटा नारायणसाईं कत्ल और बलात्कार के आरोप में पिछले एक साल से जेल में बन्द है। बंगलौर के स्वामी नित्यानंद पर भी ऐसे कई अपराधों के केस चल रहे हैं। इसी तरह कुमार स्वामी नाम का एक और बाबा देश के अलग-अलग राज्यों में बीजमंत्र से गंभीर बिमारियां ठीक करने का दावा करके लोगों को लूट रहा है। दो साल पहले निर्मल बाबा के धंधे का भी पर्दाफाश किया जा चुका है। देश में हजारों पाखंडी संत, बाबा और स्वामी अपने सियासी आकाओं की वजह से अभी भी कानून के शिंकजे में आने से बचे हुए हैं।

इसलिए हमें अब यह हकीकत समझ लेनी चाहिए कि रामपाल, आसाराम और सिरसा डेरे के गुरमीत राम रहीम जैसे बाबाओं-संतों के पास हमारी समस्याओं, बिमारियों और दुखों को खत्म करने के लिए न तो कोई कानूनी मैडीकल योग्यता या कथित दैवी शक्ति है और न ही उनकी ऐसी कोई नीति है। हमारी गरीबी बेरोजगारी, महंगाई, बिमारी, असमानता, अनपढ़ता, भूखमरी, भ्रष्टाचार इत्यादि हमारी समस्याओं के लिए केवल और केवल यह लुटेरा निजाम ही पूरी तरह जिम्मेदार है। दुनियां में न तो कोई भगवान, आत्मा, गॉड, वाहेगुरू का अस्तित्व है और न ही किन्हीं कथित दैवी शक्तियों, काले ईल्म से किसी का भला बुरा या चमत्कार किया जा सकता है। ये सब धर्म के नाम पर लोगों को मूर्ख बन कर ठगने और लूटने वाले धर्मों के ठेकेदारों और पुजारी वर्ग की साजिश है। इसलिए बिना किसी प्रकार की मेहनत किए लोगों द्वारा ऐय्याशी करने वाले और समाज में अंधविश्वास और हिंसा फैलाने वाले पाखंडियों के पीछे लगना मूर्खता की सबसे बड़ी निशानी है।

इसलिए केंद्र और राज्य सरकारों का यह कानूनी फर्ज है कि धर्म के नाम पर अंधविश्वास फैलाने, कथित दैवी शक्तियों का दावा करके लोगों को मूर्ख बना कर ठगने वाले पाखंडियों के खिलाफ देश में अंधविश्वास विरोधी कानून लागू करे और दोषियों को सजा दी जाए। देश में आस्था के नाम पर व्यापार करने, किले रूपी डेरों और धार्मिक संगठनों से सियासी वोट मांगने या डेरों, द्वारा किसी राजनैतिक पार्टी को सियासी मदद देने के जुर्म में दोनों के खिलाफ सख्त कानूनी कारवाई की जाये। देश के सभी धार्मिक, डेरों और आश्रमों को आयकर के दायरे में रखा जाये।

हमें याद रखना चाहिए कि जिंदगी में वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपना कर और भ्रष्ट निजाम को बदल कर ही अपनी समस्याओं, अंधविश्वासों, आध्यात्मिकवाद और पाखंडियों-डेरों से छुटकारा हासिल किया जा सकता हैं। इसके लिए हमें अपने अंदर राजनैतिक चेतना जगाने की आवश्यकता है।

-मोबा0 09779230173

साहित्य और राजनीति

-प्रो० वरवरा राव

प्रस्तुत लेख श्री वरवरा राव, अध्यक्ष-'अखिल भारतीय क्रांतिकारी सांस्कृतिक संघ' के उस भाषण पर आधारित है, जो उन्होनें 16 वर्ष पूर्व आयोजित की गई एक गोष्ठी में दिया था। मौजूदा दौर में जब आम जनता की कला, साहित्य, संस्कृति, बात क्या उससे जुड़े हर पहलू पर लुटेरे शासक वर्ग के हमले बढ़ते जा रहे हैं, ऐसे में उस लेख की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। ....(संपादक मंडल)

साहित्य, कला और संस्कृति का राजनीति से घनिष्ठ संबंध रहा है। कुछ लोग मानते हैं कि साहित्य, कला और संस्कृति राजनीति से अछूती होती है या उन्हें राजनीति से अछूता रहना चाहिए, लेकिन अगर हम कला, साहित्य और संस्कृति के इतिहास पर नज़र दौड़ाएं तो लगेगा कि ऐसा सोचने वाले किसी कल्पना लोक में घूमते हैं, क्योंकि किसी भी काल का श्रेष्ठ साहित्य उस काल की राजनीति को अपने में समेटे होता है। जब आदिम कालीन युग में मानव जंगल में रहता था, उस वक्त का वर्णन करने वाला साहित्य भी उस वक्त की सामाजिक संरचना (आगे चलकर जिसका एक पक्ष राजनीतिक संरचना में बदल गया) को समेटे हुए है।

लेकिन इसका अर्थ यह नहीं लगाया जाना चाहिए कि राजनीति ही किसी सामाजिक अवस्था का आधार होती है। असल में आधार का काम तो अर्थव्यवस्था करती है और अर्थव्यवस्था के आधार पर राजनीति तय होती है या यूं कहिए कि राजनीति उस अर्थव्यवस्था की एक अभिव्यक्ति है। इसी प्रकार उस अर्थव्यवस्था की एक अभिव्यक्ति कला, साहित्य व संस्कृति में हमें किसी विशेष अर्थव्यवस्था की राजनीति का प्रतिबिम्ब मिलता है।

ब्रेख्त ने कहा था कि वह चांदनी रातों और प्यार के बारे में लिखना चाहता था, लेकिन, ''मास्टर! (हिटलर को संबोधित करते हुए) मेरा प्यार, मेरी चान्दनी, मेरा सब कुछ तुम्हारी मुट्ठी में बंद है। इसलिए अभी मुझे तुम्हारी मुट्ठी पर पूरा ध्यान केन्द्रित करना है, जब तक मेरा प्यार तुम्हारी मुट्ठी से आजाद नहीं हो जाता, तब तक मैं तुम्हारी मुट्ठी के बारे में ही लिखूंगा।'' जनता का साहित्य जनता की भावनाओं और संवेदनाओं से दूर नहीं जा सकता। भूख, बीमारी, बेरोजगारी व सामन्ती-साम्राज्यवादी शोषण से त्रस्त जनता को प्यार मोहब्बत के गाने ज्यादा देर तक चुप बिठाकर नहीं रख सकते।

कला का आदिम रूप हमें उस वक्त मिलता है, जब मानव ने अभी अन्न पैदा करना शुरू नहीं किया था। उस वक्त शिकार करने के बाद जो खुशी के शब्द पहली बार उसके मुंह से निकले, जिस बेढंगे ढंग से वह खुशी से नाचा होगा, वही उसका पहला गीत और नृत्य था। 'अन्न ही ब्रह्म है' पुराणों की यह उक्ति, उसी आदिमकालीन साहित्य की पैदाइश है, जब मानव को अपनी सबसे बड़ी जरूरत 'भोजन' के लिए ही सबसे ज्यादा संघर्ष करना पड़ता था। चूंकि उस वक्त का सामाजिक जीवन सामूहिकता पर आधारित था, पूरे का पूरा कबीला तमाम फैसले सामूहिक रूप से लेता था और समूह में कोई छोटा-बड़ा नहीं था, अतः उसी की अभिव्यक्ति उस वक्त की कला-संस्कृति में मिलती है कि उनका

गाना और नृत्य भी सामूहिक था। आज भी आदिवासी समुदाय के गाने व नृत्य सामूहिक ही हैं।

इसी तरह अजन्ता-एलोरा की विश्व प्रसिद्ध गुफाएं, जो ईसा पूर्व काल की हैं, वे उस वक्त की प्रतिभा की सूचक तो हैं ही, साथ ही भारत के राजनीतिक इतिहास के विकास की झलक भी उनमें दिखाई पड़ती है। सर्वाधिक प्राचीन गुफाएं, आदिवासी जीवन का प्रभाव लिए हैं। उसके बाद वाली गुफाएं बौद्ध धर्म और वैष्णव धर्म पर आधारित हैं, क्योंकि भारत की राजनीति पर भी आदिम साम्यवाद के बाद बौद्ध धर्म और वैष्णव धर्म का प्रभाव पड़ा था।

क्या साहित्य में प्यार नहीं हो सकता? क्या प्रेम पर आधारित साहित्य नहीं लिखा जा सकता? इसका उत्तर हमें ब्रेख्त से मिल सकता है। ब्रेख्त ने कहा था कि वह चांदनी रातों और प्यार के बारे मे लिखना चाहता था, लेकिन, 'मास्टर! (हिटलर को सम्बोधित करते हुए) मेरा प्यार, मेरी चांदनी, मेरा सब कुछ तुम्हारी मुट्ठी में बंद है। इसलिए अभी मुझे तुम्हारी मुट्ठी पर पूरा ध्यान केन्द्रित करना है, जब तक मेरा प्यार तुम्हारी मुट्ठी से आजाद नहीं हो जाता, तब तक मैं तुम्हारी मुट्ठी के बारे में ही लिखूंगा।' जनता का साहित्य जनता की भावनाओं और संवेदनाओं से दूर नहीं जा सकता। भूख, बीमारी, बेरोजगारी व सामन्ती-साम्राज्यवादी शोषण से त्रस्त जनता को प्यार-मोहब्बत के गाने ज्यादा देर तक चुप बिठाकर नहीं रख सकते। हमारे साहित्य में प्यार की झलक उस तरह नहीं होनी चाहिए, जिस प्रकार आज की फिल्मों में दिखाई पड़ती है। इसका एक अच्छा उदाहरण मिस्र की एक फिल्म 'द अर्थ' है। वहां के स्थानीय युवक-युवतियां कपास के खेतों में मिला करते थे, लेकिन जब उनकी अर्थव्यवस्था पर उपनिवेशवादियों का कब्जा हो गया, तो उनका मिलन-स्थल भी उनसे छिन गया। इस फिल्म में प्यार है लेकिन वह प्यार कभी भी वास्तविकता से दूर नहीं गया। हमारी कला व हमारे साहित्य में इस प्रकार का प्यार अवश्य हो सकता है।

वर्तमान दौर में हमारी चेतना का भी औपनिवेशीकरण हो गया है। हम वैसा ही सोचते हैं जिस प्रकार औपनिवेशक मास्टर हमें सोचने को कहते हैं। अंग्रेजों ने हमें सिखाया कि संसदीय प्रणाली द्वरा राजनीति करनी चाहिए और हम मानने लगे हैं कि राजनीतिक केवल संसदीय प्रणाली से ही हो सकती है। अगर चुनावों में भाग नहीं लिया, तो राजनीति कैसे होगी। इसी प्रकार भाषा का सवाल है। अंग्रेजों ने हमें अंग्रेजी में काम करना सिखाया और हमने मान लिया कि अंग्रेजी के बिना हमारा काम नहीं चल सकता। यूरोप के ही अन्य विकसित देश व कोरिया, जापान, चीन, अर्जेन्टाईना तथा ब्राजील जैसे देश कौन सी भाषा में काम करते हैं? वे अंग्रेजी के बिना कैसे विकसित हो रहे हैं? हमने कभी यह सोचने की जरूरत ही महसूस नहीं की। हमारी चेतना पर केवल ब्रिटेन से आए उपनिवेशी मास्टरो का ही कब्जा नहीं है, उस पर हजारों सालों से चले आ रहे मनु धर्म की जकड़ भी उतनी ही मजबूत है। इसलिए समाज व परिवार में राजशाही युग की भांति आज भी हम एक श्रेणीबद्धता ढूंढते हैं, जिसके शिखर पर राजा/प्रधानमंत्री/परिवार का मुखिया होगा और जनता/बच्चे-पत्नी उनकी सेवा में तत्पर रहेंगे। यहां जनवाद के लिए कोई स्थान नहीं होगा। बेटी को अपने बाप-भाई की हर बात माननी होगी। पत्नी पति के चरणों की दासी होगी। ब्राह्मण व क्षत्रिय के आगे दलित को नीचा करके देखा जाएगा।

इस प्रकार साम्राज्यवाद और सामन्तवाद, दोनों एक साथ मिलकर जनता के दिमाग को जकड़ कर उसे लूट रहे हैं। इस सामन्ती व साम्राज्यवादी शिकंजे का प्रभाव आज की संस्कृति, साहित्य व कला पर काफी नज़दीक से देखा जा सकता है। विशेष तौर पर मीडिया एक ओर तो अंधविश्वास से भरे हुए गैर वैज्ञानिक कार्यक्रम दिखाता है तथा

दूसरी ओर व्यक्तिवादी सोच व संस्कृति लिए हुए एक कार्यक्रम दिखाता है जहां आम आदमी के दुख-तकलीफ व कष्टों के लिए कोई स्थान नहीं होता।

विज्ञान जहां बुद्धि पर अपील करता है, वहीं कला और संस्कृति भावनाओं के स्तर पर अपील करती है। इसीलिए स्पेन के प्रसिद्ध कलाकर्मी व वैज्ञानिक क्रिस्टोफर कॉडवैल ने कहा था कि 'कविता अतार्किक होती है'। दुनिया की तमाम लड़ाइयां जीतने में भावनाओं का विशेष स्थान रहा है। जंग में जाने वाले प्रत्येक सिपाही को उसका कमांडर भावनात्मक स्तर पर भी युद्ध में उतारता है और वह युद्ध में अपना सब कुछ दांव पर लगाने के लिए तैयार हो जाता है। इसके बावजूद बुद्धि ही भावनाओं के लिए बुनियाद का काम करती है। अतः कला साहित्य भी अगर सिर्फ भावनाओं को समेटे है, उसमें वास्तविक जिंदगी नहीं है, तो वह केवल रोमानी-साहित्य ही कहलाएगा। प्रसिद्ध फ्रांसीसी साहित्यकर्मी बाल्जा का उदाहरण हमें बताता है कि साहित्य किस प्रकार इतिहास निर्माण में मदद कर सकता है। बाल्जा यद्यपि मजदूरों के विरोध में शोषक वर्ग के साथ खड़ा था फिर भी एंगेल्स ने लिखा है कि बाल्जा के साहित्य से फ्रांसीसी क्रांति के बारे में इतिहास से भी ज्यादा सीखने को मिला, क्योकि इतिहास कालक्रम को समेटे होता है लेकिन उस वक्त में समाज की भावनाएं कहां थी? मानव सम्बन्ध क्या थे? मानवीय संवेदनाएं क्या थीं? इन सबका खुलासा साहित्य ही कर सकता है। साहित्य से इतिहास निर्धारण करने का एक प्रयोग 1960 के दशक में रूस में भी हुआ था। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान की उपलब्ध तमाम साहित्य सामग्री (कविता, कहानी, उपन्यास, डायरी आदि) से उस समय के इतिहास को लिखा गया है। इनसे भी यही साबित होता है कि राजनीति और संस्कृति अलग-अलग नहीं हैं।

प्रेम, स्नेह, न्याय, संघर्ष, ये वे सामान्य और सर्वव्यापक भावनाएं हैं, जो साहित्य में प्रमुख स्थान रखती हैं। इन भावनाओं को धर्म के साथ मिलाकर भारतीय साहित्य में राजनीति दी गई है जैसे कि महाभारत और रामायण में देखा जा सकता है। रामायण के राम भारतीय शासक वर्ग के सबसे बढ़िया प्रतिनिधि हैं। जैसे आज का शासक वर्ग महिला विरोधी, दलित विरोधी और आदिवासी विरोधी है, उसी प्रकार भगवान राम ने सीता की अग्नि परीक्षा लेकर और फिर उसे बिना किसी अपराध के जंगल में भेज कर महिला विरोधी चरित्र दिखाया, शम्बूक की हत्या करके दलित विरोधी चरित्र दिखाया और जंगल में रहने वाले आदिवासियों (जिन्हें रामायण में 'राक्षस' नाम से परिभाषित किया गया है) को मार कर आदिवासी विरोधी चरित्र दिखाया।

इसी प्रकार महाभारत का एक दृष्टांत उस वक्त की राजनीतिक व सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डालता है। जुआ खेलते हुए युधिष्ठर जब द्रोपदी को भी हार जाता है और दुशासन द्रोपदी को लेने उसके महल में जाता है तो द्रोपदी उससे एक सवाल करती है कि युधिष्ठर ने पहले स्वयं को दांव पर लगाया था या उसे? क्योंकि अगर युधिष्ठर पहले स्वयं को हार गया, तो वह दास बन गया और दास की कोई सम्पति नहीं होती। अतः उस स्थिति में उसे दांव पर लगाने का कोई नैतिक अधिकार युधिष्ठर के पास नहीं था। यदि उस काल में दास प्रथा न होती तो द्रोपदी यह सवाल नहीं करती, यानि उस वक्त दास प्रथा थी, पत्नी को जुए में दांव पर लगाने का अधिकार पति के पास था। इसी प्रकार राजा हरिश्चंद्र की कहानी उस युग की है, जब मानव उसी प्रकार मंडियों में बिकता था, जैसे आज गाय-भैंसों, घोड़ों व गधों का व्यापार होता है। समाज उसे सही ठहराता था। आज चाहे चुपके-चुपके कुछ भी क्यों न होता हो, कम से कम खुले आम

समाज व कानून इसकी इजाज़त नहीं देता। अतः हम कह सकते हैं कि महाभारत जिस युग की बात करता है, उस वक्त दास प्रथा मौजूद थी। अतः उस वक्त की राजनीति भी दास प्रथा वाली ही थी। इस प्रकार कला में राजनीति की अभिव्यक्ति पहले से ही होती थी।

साहित्य के संदर्भ में दो बातें स्पष्ट तौर पर कही जा सकती हैं :

1. सबसे ज्यादा माना हुआ साहित्य राजनीति से जुड़ा होता है। अतः कला, कला के लिए है, कहना अर्थहीन होगा।

2. पिछले समय का उपलब्ध साहित्य : जीते हुए लोगों की परम्परा का प्रतिबिम्ब होता है। उदाहरण के लिए उत्तर भारत में रामायण का महानायक राम है, लेकिन जैसे-जैसे हम दक्षिण भारत में जाते हैं, राम का स्थान रावण ले लेता है विशेषतः तमिलनाडू में इस कथा का महानायक रावण है।

साहित्य राजनीति को किस हद तक प्रभावित करता है यह आंध्र प्रदेश के 'चुण्डूर काण्ड' से समझा जा सकता है जिसमें अनेक दलितों की हत्या कर दी गई थी। उन पर आरोप था कि उन्होंने एक स्वर्ण महिला का अपमान किया था। इस हत्याकांड का समर्थन करते हुए आंध्र के एक मठाधीश का कहना था कि यह वो देश है, जहां औरत (सीता) के अपमान के कारण राम-रावण युद्ध हो गया था। यानि इस उदाहरण से उसने इस हत्याकांड को न्यायोचित ठहरा दिया।

इसी प्रकार सामन्ती युग में लिखी गई भगवद् गीता सामन्ती राजनीति का समर्थन करते हुए दो बेहद महत्वपूर्ण प्रस्तावनाएं देती है जो सामन्ती व्यवस्था के लिए बेहद जरूरी होती हैं।

1. असमानता (ब्राह्मण मेरे मुख से, क्षत्रिय बाजुओं से, वैश्य पेट से व शुद्र पांव के तलवों से पैदा हुए हैं)।

2. हिंसा करो (तमाम लोग मेरे द्वारा पहले ही मारे जा चुके हैं, अतः तुम्हें इनको मारकर पाप नहीं लगेगा)।

इस प्रकार पहले से लेकर अब तक साहित्य और कला में राजनीति मौजूद है, जिसकी अभिव्यक्ति प्रेम, स्नेह, न्याय व संघर्ष को आगे रखकर, शासक वर्ग द्वारा अपने वर्ग हितों को ध्यान में रखते हुए की जाती है।

सत्ता हस्तांतरण के बाद अमरीका ने पी०एल-480 के तहत भारत को मुफ्त में गेहूं भेजा था। अमरीका भारतीय जनता की भूख से द्रवित नहीं हुआ था, जो उसने मुफ्त में गेहूं भेजी। गेहूं के साथ-साथ उसने दो और चीजें भी भारत पर लादी थी। पहली, देश में अमरीकी संस्थान खोले गए। दूसरा विश्वविद्यालयों में अमरीकी साहित्य पढ़ाया जाने लगा। इन संस्थानों व साहित्य ने भारतीय समाज के पढ़े-लिखे हिस्से को दिमागी रूप से अमरीका का गुलाम बनाने में अहम् भूमिका निभाई।

कला-साहित्य का एक महत्वपूर्ण अंग भाषा होती है। भाषा भी राजनीति को प्रतिम्बित करती है। गुप्त काल तक शासक वर्ग की भाषा संस्कृत थी। उसके बाद तुर्कों-मुगलों की भाषा फारसी व औपनिवेशक भारत में शासक वर्ग की भाषा अंग्रेजी थी। ये तीनों ही भाषाएं आम जनता से दूर रहीं। संस्कृत बोलने का अधिकार तो केवल ब्राह्मण व क्षत्रिय पुरुषों को ही था। ब्राह्मण या क्षत्रिय स्त्री भी संस्कृत भाषा नहीं बोल सकती थी। केन्या के प्रसिद्ध लेखक न्गूगी के उपन्यास केन्या में अंग्रेजी भाषा में खूब बिकते थे, लेकिन एक उपन्यास जब स्थानीय भाषा में अनुवाद होकर आया, तो उस पर प्रतिबंध लगा दिया गया। 1857 की आजादी की लड़ाई के बाद, जब अंग्रेजों ने स्थानीय सामंतों को राजपाट में स्थान देना शुरू किया तो जो लोग संस्कृत के संरक्षक थे, वही अंग्रेजी के संरक्षक बन गए, क्योंकि अंग्रेजी पढ़कर ही वे लोग राजनीति में घुस सकते थे। 1947 के बाद भी नौकरशाही पर

ज्यादातर कब्जा संस्कृत/अंग्रेजी के संरक्षक ब्राह्मणों का ही रहा है।

जनता के लिए काम करने वाले, जनता की राजनीति की आवाज बनाने वाले साहित्यकारों व कलाकर्मियों के अनेकों उदाहरण देखे जा सकते हैं। मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी रचना में लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला की वेदना को प्रकट किया है। उन्होंने रामायण को उर्मिला के दृष्टिकोण से देखा है। स्पेन के तानाशाह फ्रेंकों के विरुद्ध गृहयुद्ध में दुनियाभर के साहित्यकारों व कलाकर्मियों ने भी भाग लिया था, जिनमें क्रिस्टोफर कॉडवैल, डेविड गस्ट व लोर्का जैसे लोग शामिल थे। ब्रेख्त का नाम हिटलर के फासीवाद के विरुद्ध संघर्ष का नाम है। भारत में भी मुंशी प्रेम चंद ने इन्हीं फासीवादी ताकतों का विरोध करने के लिए 1935 में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना की थी। इप्टा की शानदार परम्परा उसी दौर में शुरू हुई, जिसे अब भंग करके साम्राज्यवादी परम्परा लागू करने की कोशिश शासक वर्ग कर रहा है। सुब्बाराव पाणिग्रही जैसे कवि श्रीकाकुलम के किसान संघर्ष का हिस्सा बने थे।

एक महत्वपूर्ण प्रश्न पर चर्चा किए बिना साहित्य व राजनीति पर चर्चा अधूरी रहेगी। अनेक लेखक और कलाकार क्रांति का संदेश जनता तक पहुंचाना चाहते हैं, लेकिन कैसे ? भारत जैसे देश में किसान, आदिवासी व मजदूर क्रांतिकारी आंदोलन के हरावल दस्ते हैं, लेकिन उनका ज्यादातर हिस्सा निरक्षर है, तो उन तक साहित्य पहुंचेगा कैसे। जनता की संस्कृति के आगे यह एक प्रमुख सवाल है। समझने की बात यह है कि निरक्षरता और चेतना दो अलग-अलग चीजे हैं। निरक्षर होते हुए भी किसान-मजदूर-आदिवासी राजनीतिक रूप से चेतन हो सकते हैं। अतः साहित्य को मौखिक रूपों द्वारा जनता तक पहुंचाया जाना जरूरी है। साम्राज्यवाद इस तथ्य को क्रांतिकारी ताकतों से ज्यादा अच्छे ढंग से पहचान चुका है। यही कारण है कि आदिवासियों की झोंपड़ियों तक साम्राज्यवाद पहुंच चुका है, जो उन्हीं की लोकधुनों व गीतों को साम्राज्यवादी सामग्री के साथ उनमें फैंक रहा है। हमें अपनी चीज को उनसे छीनने की जरूरत है। नाटक, गीत, ड्रामा लेकर हमें जनता के बीच साहित्य पहुंचाना चाहिए।

दूसरा महत्वपूण मुद्दा है कि कला व साहित्य विकास व उसके नए प्रयोग अवश्य होने चाहिएं, लेकिन यह विकास और प्रयोग अगर वर्ग संघर्ष की बुनियाद पर नहीं है तो जनता के लिए कहलाने वाला साहित्य और कला जनता से ही दूर हो जाएंगे जैसा कि रूस और चीन में हुआ है।

कुछ लोग कहते हैं कि साहित्यकार को राजनीति के लिए मशाल का काम करना चाहिए। वे साहित्य को राजनीति से अलग करके देखते हैं। सोचना होगा कि अभिव्यक्ति और चेतना का क्या संबंध है। चूंकि संस्कृति व राजनीति दोनों ही अर्थव्यवस्था नामक बुनियाद की अभिव्यक्तियां हैं। अतः दोनों को अलग नहीं किया जा सकता। राजनीति की अभिव्यक्ति संस्कृति में मिलती है। संस्कृति व कला से राजनीति पैदा नहीं होती, अपितु राजनीति की अभिव्यक्ति कला व संस्कृति से होती है। व्यापक जनता की चेतना वर्ग-संघर्ष से पैदा होती है, संस्कृति से नहीं। प्रेम चंद, गोर्की, लू शुन व शरद के उदाहरण हमारे सामने हैं। ये महान साहित्यकार इसलिए महान साहित्य की रचना कर सके क्योंकि भारत, रूस व चीन में जनता का संघर्ष चल रहा था। बिना उस संघर्ष के 'मां', 'गोदान' व 'पथ के दावेदार' जैसे उपन्यास व 'पागल की डायरी' तथा 'आह क्यू की सच्ची कहानी' जैसी कहानियां नहीं लिखी जा सकती थी।

★★

अनमोल वचन

यदि मानव जाति को जीवित रखना है, तो हमें बिल्कुल नयी सोच की आवश्यकता होगी।

-अल्बर्ट आइंस्टीन

किस्त नं-7

ब्रह्मांड यात्रा

-डा. अवतार सिंह ढींढसा
094634-89789

दोस्तो, मंगल ग्रह पर घूमने फिरने के पश्चात् हम जान चुके हैं कि मंगल की सूर्य के गिर्द (उसके ग्रह पथ पर) कोई भी स्थिति, हम में से किसी पर भी अच्छा अथवा बुरा प्रभाव नहीं डालती, अतः मंगलीक होने का प्रश्न ही नहीं उठता, परन्तु दोस्तो आज मैं आपको ऐसे स्थान पर लेकर जा रहा हूं, जिस के बारे में सभी ज्योतिषी एवं ज्योतिष की पुस्तकें मौन धारण किए बैठी हैं। चलो लेते हैं मंगल ग्रह से विदायगी और अग्रसर होते हैं बृहस्पति ग्रह की ओर। परन्तु ये रास्ते में दृष्टिगोचर हो रहे छोटे-छोटे तारे जैसे क्या नजर आ रहे हैं। हां याद आया...मगल एवं बृहस्पति के लगभग बीच में आती है एस्ट्रोयड पट्टी।

साथियो, यह पट्टी सूर्य से 2 से लेकर 6 ब्रह्माण्डीय इकाइयां (AU) अर्थात् 300 मिलियन किलोमीटर से 600 मिलियन किलोमीटर तक फैली हुई है। इस पट्टी के अस्तित्व के बारे में सन् 1596 ई० में जॉन कैप्लर ने ग्रहों के ग्रह-पथों की गणना करते समय यह पता लगाया था कि मंगल एवं बृहस्पति के बीच में एक ग्रह होना चाहिए, परन्तु 18वीं शताब्दी के जर्मन खगोल शास्त्रियों 'जोहानन टिटियस' (1729-1796) एवं 'जोहनन बोडे' (1747-1826) ने एक फार्मूले के तहत यह प्रमाणित कर दिया कि मंगल एवं बृहस्पति के दरम्यान एक ग्रह अवश्य होना चाहिए।

आओ, यह 'टिटियस बोडे' फार्मूला तुम भी नोट कर लो, ग्रहों के ग्रह पथ की संख्या 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10 को नई संख्या 0, 3, 6, 7, 12, 24, 48, 96, 192, 384, 768 दे दो, फिर प्रत्येक नई अलाट की गई संख्या में 4 जमा करते जाओ....तुम्हें नई संख्याएं मिलेंगी 4, 7, 10, 16, 28, 52, 100, 196, 388, 772. अब प्रत्येक को 10 के साथ भाग कर दो, नई संख्याएं बन जाएंगी 0. 4, 0.7, 1, 1.6, 2.8, 5.2, 10, 19.6, 38.8, 77. 2. ये संख्याएं हमें बताती हैं कि सूर्य के गिर्द चक्कर लगाने वाले ग्रह सूर्य से कितनी दूरी पर होने चाहिएं। अर्थात् सूर्य से पृथ्वी की दूरी को एक ब्रह्माण्डीय इकाई (AU) माना जाता है, जोकि सूर्य से तृतीय पोजिशन पर सूर्य के गिर्द चक्कर लगाती है तथा 'बोडो टिटियस फार्मूले के अनुसार यह तीसरे नंबर (1) पर ही आती है। इस प्रकार सभी ग्रहों की दूरियां बनती हैं, बुध- 0.4, AU, शुक्र-0.7 AU, पृथ्वी-1AU, मंगल-1.6 AU, रिक्त स्थान-2.8AU, बृहस्पति-5.2 AU, शनि-10 AU, यूरेनस-19.6 AU, नेप्चून-38.8 AU, प्लूटो-77.2 AU. गणना की गई ये दूरियां वास्तविक दूरियों के लगभग समान हैं।

रिक्त स्थान से भाव है कि बुध से शनि ग्रह तक 5 ग्रह रात्रि के समय बगैर दूरबीन के ही दृष्टिगोचर हो जाते हैं, परन्तु फार्मूले के अनुसार पृथ्वी के अतिरिक्त 6 होने चाहिएं। इस प्रकार 'बोडो एवं टिटियस' ने मंगल एवं बृहस्पति के दरम्यान एक अन्य ग्रह के अस्तित्व की संभावना को खोजा, परन्तु यह खोज एक पहेली ही बनी रही। सन् 1800 में 25 खगोल वैज्ञानिकों ने एक टीम बनाकर इस ग्रह की खोज आरंभ कर दी, परन्तु

1801 में इटली के 'गिएस्पे प्याजी' जो इस टीम के सदस्य नहीं थे, ने 'सिरेस' नामक ग्रह को मंगल एवं बृहस्पति के दरमयान ढूंढ लिया और इसकी दूरी नापी गई 2.77 AU के लगभग, जोकि रिक्त स्थान की दूरी 2.8 AU के अत्यंत निकट है, परन्तु एक वर्ष के अंदर ही इतनी ही दूरी के लगभग एक अन्य आकाशीय पिंड 'प्लाज' की खोज हो गई। सन् 1807 में तृतीय आकाशीय पिंड 'वेस्टा' को खोज लिया गया। सन् 1900 ई0 तक इनकी संख्या 100 हो गई। अब वैज्ञानिकों को यह ज्ञात हो गया कि इनके लघु आकारों एवं अधिक संख्या के कारण इन्हें ग्रह मानना अनुचित है, बल्कि इनको नया नाम 'एस्ट्रोयड' दिया गया तथा ये सभी एक पट्टी के रूप में सूर्य के गिर्द चक्कर लगाते हैं।

परन्तु ज्योतिष इस सभी कुछ के बारे में क्यों मौन है? शायद इस कारण कि ज्योतिष आज से हजारों वर्ष पूर्व कमाई के साधन के रूप में रचा गया तीर-तुक्कों का पुलिन्दा है। अर्थात् साधारण जनता को चालाकी से लूटने की एक लिखित पुस्तक.......जिसे उचित ठहराने के लिए इसे चालाकी से पूर्ण नाम दे दिया गया.........वेदांग-ज्योतिष। अर्थात् पूर्व रचित वेदों का अंग। बस उस दिन से आज तक शोषण का यह सिलसिला जारी है। यदि ज्योतिष विज्ञान होता तो आज हमारी इस 'एस्ट्रोयड पट्टी' के हजारों छोटे-छोटे ग्रहों का प्रभाव भी अवश्य शामिल होता। इस तथाकथित ज्योतिष विज्ञान में।

चलो इनका पीछा छोड़ो, हमें कहीं देरी न हो जाए अपनी 'एस्ट्रोयड पट्टी' की यात्रा से। साथियो, आओ इसके निकट होकर इस सुंदर दृश्य को देखें। वो देखो, लाखों की अस्त-व्यस्त आकार के पत्थर के टुकड़ों के दरम्यान एक गोल आकार की गेंद भी दिखाई दे रही है। इसका नाम है 'सीरेस'। समस्त 'एस्ट्रोयड पट्टी' में से 'सीरेस' ही सर्वाधिक बड़ा है। इसका व्यास 957 किलोमीटर के लगभग है अर्थात् अमृतसर शहर से चलकर दिल्ली होते हुए मध्य प्रदेश के जबलपुर शहर तक के आकार का है हमारा यह 'सीरेस'। इसका पुंज 'एस्ट्रोयड पट्टी' के समस्त टुकड़ों का तीसरा भाग है। इसके आकार के बारे में पूछते हो......'सीरेस' पृथ्वी के उपग्रह के चंद्रमा के आकार का लगभग चतुर्थ भाग ही है, क्योंकि यह उपग्रह से भी छोटा है। इसलिए यह ग्रह तो हो नहीं सकता, परन्तु सूर्य के गिर्द गतिशील होने के कारण इसकी पदवी ग्रह वाली ही है।

विश्व भर की जन्त्रियां 'सीरेस' ग्रह के प्रभाव के बारे में मौन हैं, परन्तु इस लेख जैसे अन्य लेखन पढ़ कर शायद ज्योतिषी एकाध पंक्ति इस लघु ग्रह के मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों के बारे में लिख दें। यही पर ही बस नहीं 'वेस्टा' (व्यास 512 किलोमीटर), 'प्लाज' (व्यास 540 किलोमीटर), 'हाईजेया' अन्य बड़े टुकड़े हैं, जिनका व्यास 240 किलोमीटर के समान है। इस सबसे यह प्रमाणित होता है कि ज्योतिष का तथाकथित विज्ञान तो खगोल विज्ञान से अत्यंत पिछड़ चुका है।

साथियो, तुम्हारे मन मे ंयह प्रश्न अवश्य उठता होगा कि सारी 'एस्ट्रोयड पट्टी' के पिण्डों का कुल वज़न कितना होगा? लो नोट करो, इनका कुल वजन हमारे चंद्रमा के वजन 7.347 गुना 10^{22} किलोग्राम का लगभग आधा 3.673 गुना 10^{22} किलोग्राम है। प्रश्न उठता है कि फिर ये सभी टुकड़े एक ग्रह के रूप में एकत्र क्यों नहीं हो सके? उत्तर है, बृहस्पति ग्रह की गुरुत्व तरंगे। साथियो हमारी यात्रा के आगामी पड़ाव के दौरान बृहस्पति ग्रह पर पहुंच कर हम इस बाबत और भी बहुत से रोचक तथ्यों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। एक

थ्योरी के अनुसार 'एस्ट्रोयड पट्टी' के पिण्डों का पुंज इतना अधिक था कि हमारी पृथ्वी जैसा एक अन्य ग्रह बन सकता था, परन्तु बृहस्पति की गुरुत्व तरंगों ने न केवल इसकी ग्रह बनाने की प्रक्रिया को प्रभावित किया, बल्कि इसका बहुत सा मलबा अपनी ओर खींच कर अपने अंदर ही समा लिया तथा शेष टुकड़े भी ग्रह के आकार का निर्माण नहीं कर सके।

साथियो, इस व्याख्या से आओ हम बेहतरीन तर्क पर विचार कर लें। उपरोक्त कथन से यह तो सिद्ध हो ही गया कि ग्रह निश्चित रूप में एक-दूसरे पर प्रभाव डालते हैं। विचारणीय प्रश्न यह है कि यह प्रभाव केवल कुछ दूरी तक ही सीमित है जैसे कि बृहस्पति के दायरे में 'एस्ट्रोयड पट्टी' आ गई। इसने अपना जो प्रभाव दिखाया, वह हमारे सामने है। 'एस्ट्रोयड पट्टी' के पिण्डों से हमारी ओर आते हुए पहले मंगल रास्ते में खड़ा है। बृहस्पति का मंगल पर कोई प्रभाव नहीं, क्योंकि दूरी अधिक हो गई। हमारी पृथ्वी तो बृहस्पति से और भी दूरी पर है। फिर इसके प्रभाव के बारे में तुम खुद ही अन्दाजा लगा लो। हां यदि प्रभाव पड़ा होता, तो 'एस्ट्रोयड पट्टी' के पिण्डों की भांति हमारी पृथ्वी भी छोटे-छोटे टुकड़ों में बिखर जाती एवं इस पर कोई जीवन भी न होता। अब जब सभी कुछ सही सलामत है तो यह इस बात का प्रमाण है कि बृहस्पति ग्रह का हम पर अथवा हमारी पृथ्वी पर कोई भी प्रभाव नहीं है।

साथियो, मैं कहीं यह बताना न भूल जाऊं कि 'एस्ट्रोयड पट्टी' के पिण्ड किस पदार्थ के द्वारा निर्मित हैं, नोट करो C-किस्म के टुकड़े/पिण्ड मुख्य रूप में चट्टान के बने हुए हैं एवं रंग में काले हैं। S-किस्म के पिण्ड पत्थर के बने हुए हैं। M-किस्म के पिण्ड निकिल एवं लौह धातुओं से निर्मित हैं। इनमें कुछ कार्बन पदार्थ भी मौजूद हैं। कई दूर के टुकड़ों पर बर्फ भी जमी हुई है। इन पिण्डों के आकार के बारे में पूछते हो.....केवल 'सीरेस' का पुंज बड़ा होने के कारण इसने अन्य ग्रहों की भांति गोल आकार धारण कर लिया है, परन्तु अन्य बहुत से टुकड़े तो आलुओं की भांति विकृत आकार के ही हैं।

जापानी अंतरिक्ष यान 'हायाबूजा' वर्ष 2006 में इनमें से ही एक टुकड़े पर पहुंचा तथा वर्ष 2010 में इसके कुछ नमूने लेकर वापिस आया.....खोज जारी है। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेन्सी 'नासा' ने 'डॉन' नाम का एक अंतरिक्ष यान 'वेस्टा' की ओर भेजा था, जोकि वर्ष 2011 में उसके निकट पहुंचा. ...कुछ जानकारी पृथ्वी पर भेजी तथा आगे यह 'सीरेस' के पास वर्ष 2015 में पुहंच जाएगा तथा और भी बहुत सी जानकारी एकत्र करके भेजेगा। सन् 2006 में अंतर्राष्ट्रीय खगोल वैज्ञानिकों की मीटिंग में 'सीरेस' को 'लघु ग्रह' अथवा 'बौना ग्रह' की पदवी दे दी गई है।

साथियो, हम इन शैलीय टुकड़ों में घूमते-घूमते कहीं इस बात को न भूल जाएं कि 'एस्ट्रोयड पट्टी' के पिण्डों की खोज में क्या हमारे भारतीय वैज्ञानिकों ने भी कुछ योगदान डाला है अथवा नहीं? अवश्य डाला है। सन् 1861-1885 तक 'मद्रास आब्जरवेट्री' के उस समय के सरकारी खगोल वैज्ञानिक 'नार्मन पोग्सन' ने 5 'एस्ट्रोयड पट्टी' के पिण्डों की खोज की थी। फिर भारतीय खगोल वैज्ञानिकों की टीम ने 17 फरवरी 1988 को आर. राजमोहन के नेतृत्व में इंडियन इंस्टीच्यूट आफ एस्ट्रोफिजिक्स में 'एस्ट्रोयड पट्टी' के भारत की ओर से प्रथम पिण्ड की खोज की गई थी।

साथियो, इन 'एस्ट्रोयड पट्टी' के पिण्डों की संख्या तो पांच लाख से भी अधिक है। फिर

ज्योतिष की जन्त्रियां एवं जन्म कुंडलियां क्या करेंगी. ....अनुमान तुम स्वयं ही लगाते रहना। हां, खगोल वैज्ञानिकों को इनके नाम रखने में कठिनाई अवश्य महसूस हुई होगी....परन्तु इसका हल भी ढूंढ निकाला गया।

पहले-पहले इनके नाम खगोल वैज्ञानिकों के नाम पर रखे गए......फिर वैज्ञानिकों, अंतरिक्ष यात्रियों, महत्वपूर्ण आविष्कारकों, महत्वपूर्ण नेताओं, संगीतज्ञों, कलाकारों, फिल्मी हस्तियों, यहां तक कि विश्व स्तर पर स्कूली विद्यार्थियों के करवाई जाती विज्ञान की प्रतिस्पर्धाओं में से प्रथम रहने वाले विद्यार्थियों के नामों पर भी नए खोजे जाते 'एस्ट्रोयड पट्टी' के पिण्डों के नाम रखे जाते हैं। इनमें से कुछेक के नाम भारतीय खगोल वैज्ञानिकों वेनू-बापू (2596), भट्टाचार्य, रामानुजम, मृणालिनी, गोकुमैनन, साराभाई जैसे प्रमुख वैज्ञानिकों के नामों पर भी रखे गए हैं। वर्ष 2002 में भारतीय मूल के अमेरिकी स्कूली विद्यार्थी जोकि 'इन्टेल विज्ञान टेलेंट सर्च' मुकाबले में समूचे विश्व में से अव्वल रहे, सम्मान के तौर पर उनके नामों पर भी 'एस्ट्रोयड पट्टी' के पिण्डों के नाम रखे गए-जैसे कि अहमद (16113) विद्यार्थी का नाम ताहिर अहमद, वेंकटाचलम (16214) विद्यार्थी का पूरा नाम विवेक वेंकटाचलम, वेंकटारमन (16215) विद्यार्थी का पूरा नाम धीरा वेंकटारमन एवं अग्रवाल (27072) विद्यार्थी का पूरा नाम अमोल अग्रवाल तथा चन्द्रन (24121) विद्यार्थी का पूरा नाम अशोक चन्द्रन। हमारे होनहार निरोल भारतीय विद्यार्थियों से यह पूर्ण अपेक्षा है कि वे भी ऐसी प्रतिस्पर्धाओं को जीत कर अवश्य ही अपना नाम विश्व में रोशन करेंगे।

साथियो, यदि हम इस 'एस्ट्रोयड पट्टी' के पांच लाख से भी अधिक पिण्डों में से अकेले-अकेले पिण्ड पर पहुंच कर उसके बारे में जानकारी एकत्र करते रहें तो अनुमान लगाओ कि हमें और कितने वर्ष लग जाएंगे यहां पर ही घूमते-घूमते.....यात्रा जारी है......तनिक वो सामने देखो अत्यन्त सुंदर एवं आकर्षक गैसीय दानव। बृहस्पति अपने पथ पर आगे बढ़ते हुए हमारी प्रतीक्षा कर रहा है, बस मेरे साथ यात्री बने रहना। क्रमश :

हिन्दी अनुवाद-
बलवन्त सिंह लैक्चरार

चैनलों में ज्योतिष का मामला सरकार को फटकार

दिल्ली (सिटी मीडिया) : केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय को दिल्ली हाईकोर्ट के एक बैंच ने देशभर में टीवी कार्यक्रमों में ज्योतिष द्वारा दिखाए जा रहे अंधविश्वास पर संज्ञान लेते हुए मंत्रालय को फटकार लगाई है। उल्लेखनीय है कि पिछले कई दशकों से टीवी कार्यक्रमों में ज्योतिषों के कार्यक्रमों को नियमित करने के सरकार द्वारा कोशिश न करने पर हाईकोर्ट के जजों ने सरकार को कटघरे में खड़ा किया है। दिल्ली हाईकोर्ट के जस्टिस जी रोहिणी और जस्टिस आरएस ऐंडला के बैंच ने एक गैर सरकारी संगठन साईं जन कल्याण संस्था द्वारा दायर की गई याचिका पर सुनवाई करते केंद्र सरकार से पूछा है कि मंत्रालय केवल टीवी व डीटीएच पर ज्योतिष दिखाए जाने बारे सरकार ने क्या नियम बनाए हैं। इस पर सूचना मंत्रालय ने अपना दबाव दाखिल करते हुए कहा कि कई इश्तिहारों के विरुद्ध कार्रवाई की गई है। जिनमें अंधविश्वास भरी सामग्री थी।

सिटी मीडिया 4-12-14

आधुनिक धर्म गुरुओं, उनके अन्धभक्तों के बारे में

–कात्यायनी

केरल में कोल्लम के निकट 'अम्मा' नाम से प्रसिद्ध साध्वी अमृतानन्दमयी के आश्रम में 'थुम्बन' और 'भक्ति' नाम के दो कुत्ते रहते हैं। इनके बारे में हाल ही में एक समाचार पत्र में पढ़ा।

ये दोनों कुत्ते सूर्योदय के साथ पारम्परिक प्रार्थना में हिस्सा लेकर दिनचर्या शुरू करते हैं। शाकाहारी खाना खाते हैं और प्रवचन स्थल से लेकर शयनकक्ष तक 'अम्मा' के साथ लगे रहते हैं। 'अम्मा' इनके समर्थन और लगन को लेकर इन्हें प्रायः दूसरों के लिए आदर्श के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

कुत्ते हजारों वर्षों पहले जंगलों से मनुष्य के साथ बाहर आए, मनुष्य की अधीनता स्वीकार की, उसकी चाहतों, निर्देशों और एक हद तक मनोभावों को समझना सीखा। पालतू बनाए जाने वाले सभी कुत्तों में यह गुण होता है, कुछ नस्लों में ज्यादा, कुछ में कम। एक ही नस्ल के कुत्तों में भी ये गुण कम या ज्यादा हो सकते हैं, लेकिन 'श्वान चेतना' कहीं से भी 'मानव चेतना' के निकट नहीं होती। कुत्ते की चेतना तर्क नहीं करती, वह विश्लेषण–आधारित सार–संकलन नहीं कर सकती। कुत्ता–चेतना इन्द्रिय बोध (सेंस परसेप्शन) से अवधारणात्मक ज्ञान (कंसेप्चुअल नॉलेज) तक पहुंचने की ज्ञान–मीमांसीय यात्रा नहीं करती। कुत्ते का ज्ञान केवल इंद्रियबोधी और अनुभवसंगत होता है पर यह इन्द्रिय बोध या अनुभव संगति भी मनुष्य से सर्वथा अलग होता है। कुत्तों के अंदर प्रेम, भय, अवसाद, समर्पण, सेवा आदि की जो भावना होती है, वह वस्तुतः ऐसी पशु सुलभ सहज वृत्ति (इंस्टिंक्ट) और ऐसी प्रतिवर्ती सहज क्रिया (रिफलेक्स) होती है जो हजारों वर्षों से उनकी पीढ़ी दर पीढ़ी में संचरित होती हुई उन्नत होती गई है।

श्वान चेतना के विपरीत मानव चेतना तर्क करती है, विश्लेषण और समाहार करती है। मानव चेतना के पिछड़े और उन्नत स्तरों की गणना नहीं की जा सकती। इसके वैविध्य की व्यापकता को नहीं मापा नहीं जा सकता। एक सापेक्षतः उन्नत या औसत दर्जे की वैयक्तिक मानव चेतना किसी व्यक्ति के प्रति पूर्णतः समर्पित हो ही नहीं सकती। मनुष्य को बल या भय के जरिए दास या पालतू बनाया जा सकता है, स्वेच्छा से वह ऐसा कदापि नहीं कर सकता। यदि कहीं कोई ऐसा करता है, तो वह विमानवीकृत मनुष्य है और उसकी चेतना विघटित मानवीय चेतना है। वैसे विघटित व्यक्तित्व भी प्रायः समाज द्रोही आचरण करते हैं, वे दयनीय होने का दिखावा कर सकते हैं, पर वास्तव में पालतू बहुत कम ही होते हैं। ऐसा विमानवीकरण या व्यक्तित्व का विघटन वर्ग समाज में श्रम विभाजन, श्रम के वियोजन तथा तज्जनित अलगाव (एलियननेशन) और आत्म पृथक्करण से पैदा होता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। एक वर्ग समाज में एक आम नागरिक अपने परिवार, स्वजनों–परिजनों, अपने वर्ग और पूरे समाज के हित को जाने–अनजाने, अलग–अलग हदों तक, केंद्र में रखकर अपना व्यवहार तय करता है। एक उन्नत समाज चेतस व्यक्ति पूरे समाज और उत्पीड़ितों के हितों को ध्यान में रखकर आचरण करता है, जबकि एक पिछड़ी चेतना का व्यक्ति अपने निजी और पारिवारिक हितों को ही सर्वोपरि स्थान देता है। सामूहिकता में सुरक्षा ढूंढने की सहज मानवीय वृत्ति से प्रेरित आम

नागरिक जो सांझा वर्ग हित के सामाजिक-आर्थिक यथार्थ और उसकी गतिकी को नहीं समझ पाते, वे प्रायः एक किस्म की मिथ्या चेतना से ग्रस्त होकर जातिगत और धार्मिक गोलबंदी में शामिल हो जाते हैं। इस मिथ्या चेतना का वस्तुगत आधार हमारे समाज के इतिहास में और एक हद तक वर्तमान में निहित है। जातिगत उत्पीड़न की वर्गीय अन्तर्वस्तु को नहीं समझ पाने के कारण ऐसा होता है। शासक वर्ग न केवल इस मिथ्या समूह चेतना का लाभ उठाता है, बल्कि इसे बढ़ावा भी देता है।

सार-संक्षेप यह कि अपने सामान्य और विरूपित-दोनों ही रूपों में मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होता है। यह सामाजिकता कुत्तों सहित समूचे पशु जगत में नहीं होती। जो सड़क के कुत्ते होते हैं, वे आत्मरक्षा की सहज वृत्ति से एक झुंड में रहते हैं। पर यदि आप डंडा लेकर उन्हें दौड़ाएं तो सभी अपनी जान बचाकर भागेंगे। यदि एक कुत्ते को पीटा जाए तो दूसरे उसे बचाने की चिंता से प्रेरित होकर आचरण करते हैं और जो पालतू कुत्ते हैं, उनमें आत्मरक्षा-प्रेरित झुंड वृत्ति (समूह वृत्ति) भी नहीं होती। वे अपने अस्तित्व रक्षा के लिए मालिक पर निर्भर होते हैं और बदले में मालिक के प्रति पूर्णतः समर्पित होते हैं।

एक कुत्ता व्यक्ति के प्रति समर्पित हो सकता है। एक बेहद पिछड़ी चेतना का निर्बल-मानस और स्वार्थी इन्सान भी व्यक्ति के प्रति समर्पित हो सकता है, लेकिन एक थोड़ी उन्नत चेतना का व्यक्ति, जो तर्क करता है, वह कुछ सुनिश्चित विचारों (सही या गलत) के प्रति समर्पित या प्रतिबद्ध तो हो सकता है, पर व्यक्ति के प्रति कदापि नहीं हो सकता। समान विचार वाले, अपने से उन्नत चेतना वाले व्यक्ति का नेतृत्व या मार्गदर्शन स्वीकार करना एक बात है और किसी व्यक्ति के प्रति आंख मूंद कर समर्पण भाव रखना एकदम दीगर बात है।

अमृतानन्दमयी उर्फ 'अम्मा' कुत्तों के समर्पण और लगन को जब अपने भक्तों के सामने आदर्श के रूप में प्रस्तुत करती हैं, तो उनका आचरण एक धर्मगुरु के हिसाब से एकदम उचित ही प्रतीत होता है। सभी धर्मगुरु अपने भक्तों से यही बताते हैं कि तर्क मत करो, अपने गुरु पर आंख मूंद कर विश्वास करो, उसके कहे पर आंख मूंद कर आचरण करो, गुरु के आचरण पर प्रश्न मत उठाओ, वह तुम्हारी समझ से परे है। अपने तर्क और विवेक को ओवरकोट और छाते की तरह धर्मगुरु के आश्रम के बाहर ही रख देना होता है। बिडाडी आश्रम का स्वामी परमहंस नित्यानंद (वही जिसका एक फिल्म अभिनेत्री के साथ कथित टेप काफी चर्चा में आया था और जो कुछ दिनों तक जेल की हवा भी खा चुका था, पर अब फिर पूर्ववत अपने आश्रम में भक्तपूजित प्रतिष्ठापित है) अपने भक्तों से प्रायः कहा करता है कि अपने दिमाग का इस्तेमाल मत करो, यह बन्दर है जो तुम्हें गलत रास्ते पर ले जाता है। वह प्रवचनों के दौरान अक्सर एक कहानी सुनाया करता हैः एक प्रोफैसर एक जेन मास्टर के पास गया। जेन मास्टर जब प्रोफेसर के कप में चाय डाल रहा था, प्रोफेसर उस दौरान जेन मास्टर से कुछ इधर-उधर की बातें कर रहा था। जब कप भर जाने के बाद भी मास्टर चाय उड़ेलता रहा, तो प्रोफेसर बोल पड़ा, 'यह भर गया है, इसमें और नहीं आ सकता।' जेन मास्टर बोला, 'तुम्हारी भी यही स्थिति है। पहले तुम अपना कप (यानि दिमाग) खाली करो, तो मैं तुम्हें जेन के बारे में कुछ ज्ञान दे सकूंगा।

सिर्फ नित्यानंद ही नहीं, सभी 'गॉडमेन' या धर्मगुरु पहली बात जो जोर देकर कहते हैं वह यही होता हैः तर्क मत करो, विश्वास करो, अपने गुरु पर पूर्ण आस्था रखो। भक्त का मस्तिष्क-प्रक्षालन करके उसे विवेकहीन, पशुवत् उन्मादी आज्ञाचारी बनाने की क्रिया एक सम्मोहनकारी, व्यवस्थित,

चरणबद्ध अनुष्ठान के समान होती है, जिसमें प्रवचनों के जरिए एक बन्द तर्क-प्रणाली को स्थापित करने (जिसमें तर्क किया नहीं जाता, गुरु एकतरफा ढंग से कुछ आभासी तार्किक विचार रखता है, जिसे अनुभव और कुशलता से चयनित तथ्यों द्वारा पुष्ट किया जाता है) के साथ ही आदिम जादुई टोटकों से मिलते-जुलते कुछ अनुष्ठान किए जाते हैं, ध्यान, योगाभ्यास के नाम पर कुछ शारीरिक-मानसिक व्यायाम कराए जाते हैं, जिनके आंशिक प्रत्यक्ष प्रभाव और आंशिक मिथ्याभास से गुरु के निर्देशों पर विश्वास गहराता जाता है। कुछ गुरु जादूगरों और ज्योतिषियों के सस्ते हथकण्डों का इस्तेमाल करके चमत्कार के प्रति विश्वास पैदा करते हैं और भक्त को विवेक शून्य बनाने का काम करते हैं। इस प्रकार एक मिथ्या चेतना का निर्माण किया जाता है। ये धर्मगुरु सुव्यवस्थित तरीके से अपने अनुयायियों में असहायता और अशक्तता का अहसास पैदा करते हैं। उनके खास लोगों का गिरोह भक्तों पर नजदीकी से नज़र रखता है और उनके समर्पण की मजबूती को निरखता-परखता रहता है। पूर्ण समर्पण को बढ़ावा देने के लिए पुरस्कार और दण्ड का भी विधान किया जाता है और कुछ भक्तों को 'मॉडल' के रूप में या गुरु के विशेष कृपापात्र के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। सत्संगों में जो भारी आबादी शामिल होती है, वह गुरु लोगों के व्यापक सामाजिक आधार का काम करती है। इन्हीं में से कुछ नियमित भक्त आश्रमों में समय बिताने आने लगते हैं। आश्रमों के पूरे माहौल को अपने खास लोगों के जरिए गुरु नियंत्रित करते हैं, यहां तक कि आश्रमवासियों की पूरी दिनचर्या और समय पर भी पूरा नियंत्रण रखा जाता है। इस तरह शिष्यों का कदम-दर-कदम मानसिक अनुकूलन किया जाता है, जिससे वे पूरी तरह अनजान रहते हैं। शंकालु या किंचित तर्कशील लोगों से गुरु यह भी कहते हैं कि उनके कहे पर आंख मूंद कर भरोसा न करें। ऐसे लोगों को जब लगने लगता है कि अपनी बातों पर सहमति के लिए बल नहीं दे रहा है, तो वे और अधिक ग्रहणशील हो जाते हैं।

इस तरह सम्मोहन जैसी अवस्था में पहुंचे हुए मिथ्या चेतना से लैस शिष्य गुरु को एक महान शक्तिशाली, प्रबुद्ध, विवेकशील, 'सेल्फ-ऑब्जेक्ट' के रूप में देखने लगता है। वह सोचता है कि गुरु की शक्ति और महानता में भागीदार बनने के नाते ये चीजें उसमें भी संचरित हो रही हैं। ऐसे भक्त के लिए फिर सही और गलत का कोई मतलब नहीं रह जाता। गुरु का चाहे जो भी घिनौना कुकृत्य सामने आए, वह स्वामिभक्त कुत्ते की तरह आक्रामकता से गुरु की हिफ़ाजत करता है। मामला चाहे जो भी हो, वह इस सोच से संचालित होता है कि वह उसकी हिफ़ाजत कर रहा है, जो उसकी हिफ़ाजत करता है। यहीं आकर कह सकते हैं कि एक पक्के गुरुभक्त की चेतना औसत मानव चेतना की सामाजिकता और तार्किकता को खोकर श्वान-चेतना जैसी हो जाती है। गुरु की हिफ़ाजत में वह वफादार कुत्ते जैसा व्यवहार करने लगता है (इसीलिए अमृतानन्दमयी द्वारा अपने कुत्तों के आचरण को भक्तों के लिए अनुकरणीय बताना उचित ही है)

आसाराम और नारायण साईं के मामले में यही हो रहा है। बलात्कार, हत्या और जमीन कब्जाने के चाहे जितने मामले सामने आएं, उनके बहुतेरे भक्तों को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। उनके लिए वे फिर भी अवतारी पुरुष बने रहेंगे। नागपुर में और टेक्सास स्थित आश्रम में अपहरण और बलात्कार जैसे आरोप लगने के बाद भी कृपालु महाराज और प्रकाशानंद के धंधे पर कोई असर नहीं पड़ा (इन मामलों में गवाहों के मुकर जाने से वे बरी हो गए थे)। दुनिया भर में अपने मिशन की 1000 शाखाओं वाले नित्यानंद का एक अभिनेत्री के साथ सेक्स टेप सामने आया, कुछ समय तक जेल में भी रहा। पर बंगलूरु से 30 किलोमीटर दूर

बिडाडी स्थित उसके आश्रम में आज भी भक्तों की भीड़ देखते बनती है। कांची मठ के शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती मठ-संचालित मंदिरों में से एक के प्रबंधक की हत्या के आरोप में 2004 में गिरफ्तार हुए, पर उनकी पूजनीयता में कोई कमी नहीं आई। डेरा सच्चा सौदा के प्रमुख गुरमीत राम रहीम पर महिला शिष्यों के साथ यौन दुर्व्यवहार, बलात्कार, हत्या करवाने जैसे कई आरोप लगे, पर उसकी व्यापक लोकप्रियता में कोई गिरावट नहीं आई। पी. वी. नरसिंह राव और चंद्रशेखर जैसे राजनीतिज्ञों के करीबी रह चुके तांत्रिक चंद्रास्वामी पर हथियार व्यापारी अदनान खशोगी से सम्बन्ध होने और राजीव गांधी की हत्या में हाथ होने जैसे कई आरोप लगे, पर उसका रहस्यमय आभामंडल अभी भी कायम है। ऐसा भी होता है कि कुछ आध्यात्मिक गुरुओं के सितारे एकदम गर्दिश में चले जाते हैं जैसे त्रिची साईं बाबा नाम से प्रसिद्ध प्रेमानंद को हत्या और कई बलात्कारों सहित अनेक आरोपों में 1997 में आजीवन कारावास की सजा हुई और जेल में 2011 में उसकी मौत हो गई। इच्छाधारी संत भीमानंद सेक्स रैकेट चलाते हुए पकड़ा गया और फिलहाल जेल में है। स्वामी सदाचारी इंदिरा गांधी सहित कई शीर्ष बुर्जआ नेताओं का सलाहकार हुआ करता था। 2005 में वेश्याओं का अड्डा चलाते हुए वह पकड़ा गया और जेल जाने के बाद उसके सितारे गर्दिश में चले गए, लेकिन कुछ गुरुओं के पराभव से 'गॉडमेन'-परिघटना पर कोई असर नहीं पड़ता है। कुछ गुरुओं का यदि पतन होता है तो वैसे ही कुछ नए गुरु पैदा हो जाते हैं। इस परिघटना का मूल कारण सामाजिक संरचना की बनावट-बुनावट में अन्तर्निहित है। तर्कशीलता और वैज्ञानिक जीवन दृष्टि का प्रचार-प्रसार एक प्रगतिशील कार्य है, लेकिन महज इतने से ही गुरुओं के धर्म-धंधे और धार्मिक अंधविश्वासों का खात्मा नहीं किया जा सकता। जो सामाजिक-आर्थिक संरचना इन्हें पैदा करती है, उसे समझे बिना और उसे बदले बिना जनसमुदाय धर्म और धर्मगुरुओं की मानसिक गुलामी से पूरी तरह छुटकारा नहीं पा सकता।

पूंजीवादी समाज में धर्म विविध रूपों में एक व्यापार है (चाहे वह चढ़ावे की अकूत धनराशि से धर्मोद्धार ट्रस्ट-सोसायटी बनाकर, टैक्स बचाकर, स्कूल, कालेज, धर्मशाला, अस्पताल, रिसॉर्ट आदि चलाना हो, धार्मिक चैनल चलाना हो, बेशुमार भूसम्पति इक्ट्ठी करनी हो या फिर पूंजीपतियों को काले को सफेद बनाने की सुविधा मुहैया करानी हो) यह भी सही है कि पूंजीवादी राज्यसत्ता पूंजी के वर्चस्व को बनाए रखने के लिए जनता में धार्मिक अंधविश्वासों, भाग्यवाद, धार्मिक भेदभावों आदि को सचेतन तौर पर बढ़ावा देती है। पर बात सिर्फ इतनी ही नहीं है। पूंजीवादी उत्पादन-प्रणाली अपनी स्वतःस्फूर्त आंतरिक गति से धार्मिक विश्वास के पुराने रूपों का पोषण करती है और नए-नए आधुनिक रूपों को जन्म देती रहती है। माल उत्पादन और अधिशेष-विनियोजन की मूल गतिकी जनता की नज़रों से ओझल रहती है और अपने जीवन की तमाम आपदाओं का कारक उसके लिए अदृश्य बना रहता है। इसी अदृश्यता का विरूपित परावर्तन सामाजिक मानस में आलौकिक शक्तियों की अदृश्यता के रूप में होता है। इसी से धार्मिक चेतना नित्य प्रति पैदा होती रहती है और आम लोग अलौकिक शक्तियों और उनके एजेंटों (धर्मगुरुओं) के शरणागत होते रहते हैं। ये अलग-अलग धर्मगुरु अलग-अलग बीमा कम्पनियों के एजेंट के समान होते हैं जो तरह-तरह के प्रॉडक्ट ज्यादा से ज्यादा आकर्षक बनाकर उपभोक्ताओं को बेचते रहते हैं। पूंजीवादी समाज में धर्म के सामाजिक आधार को सारगर्भित-संक्षिप्त रूप में समझाने के लिए लेनिन के प्रसिद्ध लेख 'धर्म के प्रति मज़दूर वर्ग की पार्टी का दृष्टिकोण' से एक उदारण देना काफी होगा :

'आधुनिक पूंजीवादी देशों में धर्म की जड़ें मुख्यतः सामाजिक हैं। आज धर्म की सबसे गहरी जड़ का कारण मेहनतकश जनता की सामाजिक रूप से पददलित स्थिति तथा पूंजीवाद की उन अंधी शक्तियों के सामने प्रत्यक्ष दिखने वाली उसकी पूर्ण असहायावस्था है, जो हर रोज और हर घंटा उसे सर्वाधिक भयंकर यातनाओं तथा बर्बर उत्पीड़न की चक्की में पीसती रहती है। ये यातनाएं और यंत्रणाएं उन यातनाओं और यंत्रणाओं से भी हज़ार गुना अधिक होती हैं, जो युद्धों, भूचालों आदि जैसी असाधारण घटनाओं के कारण उसे भोगनी पड़ती हैं। 'देवताओं का जन्म भय से हुआ है।' पूंजी की अंधी शक्ति के भय से-यह शक्ति अंधी इसलिए होती है कि जनता उसे पहले से नहीं देख-जान सकती। यह शक्ति ऐसी है जो सर्वहारा वर्ग और छोटे मालिकों की जिंदगी के हर कदम पर न केवल अचानक, अप्रत्याशित, आकस्मिक, तबाही, विध्वंस, दरिद्रता, वेश्यावृति, भुखमरी से मौत के भय से आक्रांत रखती है, बल्कि इन मुसीबतों के पहाड़ों को उनके ऊपर ढाती भी रहती है-यह है आधुनिक धर्म की जड़ जिसे भौतिकवादी को यदि वह 'दूध पीता' भौतिकवादी नहीं बने रहना चाहता-सबसे पहले और सर्वप्रमुख रूप से ध्यान में रखना चाहिए। इन जन समुदायों के मस्तिष्कों से, जो पूंजीवादी कठोर श्रम के मार से कुचले हुए हैं और जो पूंजीवाद की अंधी विनाशकारी शक्तियों की दयादृष्टि पर आश्रित रहते हैं, शिक्षा की कोई भी पुस्तक धर्म को नहीं निकाल सकती। जब तक कि ये जनसमुदाय स्वयं धर्म की इस जड़ से लड़ना नहीं सीख लेते, जब तक कि सर्वथा एकताबद्ध, संगठित, सुनियोजित तथा सचेत ढंग से वे पूंजी के शासन के सभी रूपों के विरुद्ध संघर्ष करना नहीं सीख लेते।'

इसका अर्थ क्या यह होता है कि धर्म के विरुद्ध लिखी गई शैक्षणिक पुस्तकें हानिकर अथवा अनावश्यक हैं? नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। इसका अर्थ यह है कि क्रांतिकारी कम्युनिस्ट प्रचार के नास्तिकतावादी प्रचार को उसके बुनियादी कर्त्तव्य के-शोषकों के विरुद्ध शोषित जनसमुदायों के वर्ग संघर्ष को विकसित करने के बुनियादी कर्त्तव्य के -अधीन होना चाहिए।

साभार-आह्वान

आशुतोष महाराज के शव की अंत्येष्टि के आदेश

चंडीगढ़। पंजाब के दिव्य ज्योति जागृति संस्थान के प्रमुख आशुतोष महाराज के शव की अंत्येष्टि करने का आदेश सोमवार को पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट ने सुना दिया। हाईकोर्ट ने आशुतोष महाराज की समाधि को अवैज्ञानिक करार देते हुए शव के अंतिम संस्कार के लिए मुख्य सचिवकी अध्यक्षता में एक कमेटी का गठन भी कर दिया। जस्टिस एमएमएस बेदी की एकल बेंच ने आशुतोष महाराज का शव दर्शन के लिए रखे जाने के निर्देश भी देते हुए कानून व्यवस्था का जिम्मा राज्य के डीजीपी को सौंपा। अब मुख्य सचिव की अध्यक्षता वाली कमेटी ही तय करेगी कि अंतिम संस्कार कैसे, कहां और किसके हाथों कराया जाए। जस्टिस एमएमएस बेदी ने आशुतोष महाराज का शव सौंपे जाने की दिलीप झा और ड्राइवर पूर्ण सिंह की मांग को भी ठुकरा दिया। करीब दस महीने से जारी इस मामले में हाईकोर्ट ने फैसला सुनाया। एकल बेंच ने कहा कि समाधि का तर्क अवैज्ञानिक है। डाक्टर भी आशुतोष महाराज को क्लीनिकली डेड करार दे चुके हैं, लिहाजा शव का निपटान जरूरी है और सरकार 15 दिन में शव का अंतिम संस्कार करे। बेंच ने इसके प्रबंधों के लिए मुख्य सचिव की अध्यक्षता में कमेटी गठित करते हुए कमेटी में स्वास्थ्य विभाग, गृह विभाग के उच्चाधिकारियों के अलावा जालंधर जिले के प्रशासनिक अधिकारियों को भी शामिल किया है।

अमर उजाला, 2 दिसम्बर 2014

बाबाओं के काले कारनामे

भाभी के चरित्र पर था संदेह हत्या कर शव गटर में फैंका

होशियारपुर रोड पर गांव बोलिना के पास बने डेराबाबा भगत राम जी के संचालक ने अपनी विधवा भाभी का कत्ल कर शव को गटर में फैंक दिया। विधवा भाभी अपने घर नहीं पहुंची तो परिवार वालों को शंका हुई। इसके बाद पुलिस ने बाबा सेसख्ती से पूछताछ की। तो पता चला कि उसने भाभी की हतया कर शव को गटर में फैंक दिया है। एडीसीपी सिटी-1 नरेश डोगरा, एसीपी नार्थ सतीश मल्होत्रा की अगुवाई में टीम ने शव को गटर से बरामद कर लिया। बाबा के खिलाफ हत्या का केस दर्ज कर लिया गया है।

पृथ्वी नगर की रहने वाली रणजीत कौर ने पुलिस को शिकायत की कि उसकी बहन 4 अप्रैल को अपने देवर बाबा मोहिन्द्र सिंह के बुलावे पर उसके डेरे पर गई थी। बाद में वह घर नहीं आई और उसका मोबाइल फोन एक बस में पड़ा मिला, जिसके बाद उनको संदेह हुआ। एडीसीपी सिटी-1 नरेश डोगरा व एसीपी नार्थ सतीश मल्होत्रा ने इसकी जांच शुरू की। बाबा मोहिन्द्र सिंह से पुलिस ने जब सख्ती से पूछताछ की तो उसने हत्याकांड का राज खोल दिया।

बाबा मोहिन्द्र सिंह ने कहा कि उसकी भाभी कमलजीत कौर चरित्रहीन थी। बाबा मोहिन्द्र सिंह ने बताया कि उसके भाई गुरमीत सिंह की मौत हो चुकी थी और उसको शंका थी कि गुरमीत को जहर देकर मारा गया है। गुरमीत सिंह की मौत के बाद कमलजीत कौर कई लोगों के सम्पर्क में थी और वह उसको काफी समझाता था। 4 अप्रैल को उसने कमलजीत कौर को प्रोपर्टी के पैसे देने के बहाने बुलाया और उससे दोबारा बात की। इस पर दोनों में तकरार हो गई और मोहिन्द्र सिंह ने उसका गला दबा दिया, जिससे उसकी मौत हो गई। उसने बाद में कैंची से कमलजीत कौर के कपड़े काटे गटर में फैंक दिया। हालांकि पुलिस को यह आशंका है कि बाबा मोहिन्द्र सिंह ने अपनी भाभी से जबरदस्ती करने की कोशिश की है। एडीसीपी सिटी नरेश डोगरा का कहना है कि पुलिस ने चिकित्सकों को पोस्टमार्टम के दौरान दुराचार के बारे में भी रिपोर्ट मांगी है। बाबा मोहिन्द्र सिंह का तर्क है कि उसने कपड़े इसलिए काट डाले ताकि कमलजीत कौर की पूरी देह गटर में ही गल सड़ जाए।

-अमर उजाला 8-4-2014

एमपी में एक और बाबा दुष्कर्म के आरोप में गिरफ्तार

सीहोर-मध्य प्रदेश के सीहोर जिले में एक स्वयंभू साधू द्वरा एक विवाहित महिला को बंधक बनाकर उसके बलात्कार करने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। पुलिस ने 65 वर्षीय स्वयंभू साधू महेंद्र गिरि उर्फ टुन्नू बाबा को एक 24 वर्षीय विवाहित महिला को चार माह से ज्यादा समय तक बंधक बना कर उसके साथ बलात्कार करने के मामले में गिरफ्तार किया है।

पुलिस की टीम ने मंगलवार को टुन्नू बाबा के नीलखंड गांव स्थित आश्रम पर छापा मारकर पीड़ित महिला को मुक्त कराया और आरोपी बाबा को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने बताया कि महिला का पति और सास भी आश्रम में ही रहते थे और दोनों बलात्कार के मामले में बाबा को सहयोग कर

रहे थे।

उन्होंने बताया कि महिला की इसी साल मई में विश्राम बंजारा से शादी हुई थी। शादी के कुछ दिनों बाद से ही आरोपी बाबा महिला का शारीरिक शोषण कर रहा था। उन्होंने बताया कि आरोपी टुन्नू बाबा को गिरफ्तार कर उसके खिलाफ बलात्कार, अवैध तरीके से बंधक बनाने और अपराधिक धमकी देने का मामा दर्ज किया है। ***-एजेंसी***

लड़कों के यौन उत्पीड़न में साधु बंदी

पश्चिम बंगाल में लड़की के यौन उत्पीड़न करने के आरोप में भारत सेवाश्रम के एक साधु को गिरफ्तार किया गया है। 27 वर्षीय साधु के खिलाफ स्थानीय लोगों ने चार लड़कों का यौन उत्पीड़न करने की शिकायत दर्ज कराई थी, जिनमें से तीन नाबालिग हैं। साधु को मंगलवार को स्थानीय अदालत में पेश किया गया जहां से उसे तीन दिन के पुलिस रिमांड पर भेज दिया गया। पीड़ित लड़के आश्रम में ही रहकर पढ़ाई करते हैं।

अमर उजाला, 26-12-13

पुजारी ने दो बच्चों संग किया कुकर्म

राई-एक मंदिर में खेलने गए दो बच्चों के साथ मंदिर में रह रहे पुजारी ने कुकर्म कर दिया। बच्चों ने घर जाकर मामले से परिजनों को अवगत कराया। सूचना पर पुलिस में मामला दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी हैं पुलिस ने आरोपी को गिरफतार कर लिया है। गांव का एक 11 वर्षीय बच्चा गांव में किराए पर रह रहे मूलरूप से पश्चिम बंगाल निवासी एक व्यक्ति का 12 वर्षीय पुत्र अपने साथ के गांव के मंदिर में खेलने गया था। मंदिर में राजगढ़ चुरू राजस्थान निवासी रामेश्वर गिरी उर्फ राजेंद्र पुजारी का काम करता है। **अमर उजाला**

14-10-2014

जादू-टोने द्वारा इलाज के बहाने बच्ची से बलात्कार

जादू-टोने के नाम पर एक व्यक्ति द्वारा 9 वर्षीय बच्ची के साथ बलात्कार का मामला सामने आया है। घटना का पता तब चला, जब दोषी बच्ची को घर छोड़ गया। बच्ची के परिवार ने उसके साथ बातचीत करनी चाही तो दोषी ने उनको धमकियां देनी शुरू कर दी। इस मामले में बच्ची के परिवार वालों की शिकायत पर थाना फोकल प्वायंट की पुलिस ने ज्ञासपुरा स्थित हरगोविन्द नगर निवासी जाकिर अंसारी के खिलाफ बलात्कार एवं प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रन सेक्सुअल ओफेंस के तहत केस दर्ज करके दोषी को गिरफ्तार कर लिया है। उधर पुलिस ने बच्ची की चिकित्सीय जांच करवा कर सैंपल जांच के लिए भेज दिए हैं। थाना फोकल प्वायंट के थाना प्रभारी सुरेन्द्र सिंह ने कहा कि दोषी ने बच्ची के परिवार को बताया कि किसी ने इस पर जादू-टोना किया हुआ है, वह इसका इलाज कर सकता है। बच्ची के परिवार ने उसे इलाज के लिए कह दिया तथा वह लड़की को अपने साथ घर ले गया, जहां पर उसने बच्ची के साथ बलात्कार किया तथा अगले दिन लड़की को उसके घर छोड़ दिया। दर्द होने पर बच्ची ने परिवार को सारी कहानी बता दी। उन्होंने दोषी से इस बाबत पूछा तो दोषी ने उन्हें धमकियां देनी शुरू कर दी। उन्होंने बताया कि पुलिस ने उसको गिरफ्तार कर लिया है।

-पंजाबी ट्रिब्यून

25-10-14

अनमोल वचन

''बिना अक्ल का इंसान दो पैर का जानवर होता है।''

– **इब्ने बतूता**

अंधविश्वास के चलते

भूत-प्रेत के शक में बेटी की हत्या

भूत-प्रेत के चक्कर में मां-बाप ने अपनी जवान बेटी की हत्या कर दी। आरोप है कि परिवार को शक था कि उनकी बेटी पर भूत-प्रेत का साया है। वे बेटी का दो साल से किसी तांत्रिक से इलाज करवा रहे थे। पुलिस ने परिवार के छह लोगों के खिलाफ हत्या और सुबूत मिटाने का मामला दर्ज कर लिया है। सभी आरोपी फरार हैं।

घटना गांव हुसैनपुरा की है। 19 साल की गुरदीप कौर ने दो साल पहले बारहवीं कक्षा पास की थी। भूत-प्रेत का साया बताकर उसके माता-पिता, ताया और दो चचेरे भाइयों ने मिलकर वीरवार रात उसका बेहरमी से कत्ल कर दिया। गांववासियों का कहना है कि गुरदीप के घरवाले मानते थे कि उसे भूत-प्रेम ने घेर रखा था। परिवार वाले दो साल से मंडी अहमदगढ़ और शेरगढ़ चीमा के पास के एक तांत्रिक से उसका इलाज करवा रहे थे लेकिन गुरदीप कौर रात को इधर-उधर उठकर भागती थी।

एसपी (डी) परजीत सिंह गोराया ने बताया कि गुरदीप कौर के पिता बहादुर सिंह, मां सुरिंदर कौर, हरनेक सिंह व जगतार सिंह (दोनों ताया), गुरदीप सिंह व जसपाल सिंह (दोनों चचेरे भाई) ने मिलकर उसकी हत्या कर दी। पुलिस के डर से उन्होंने रात को ही गुरदीप कौर कर संस्कार भी कर दिया। संदौड़ पुलिस अधिकारियों ने मृतका की अस्थियां और राख कब्जे में ले ली है। इसकी जांच की जा रही है। फिलहाल सभी आरोपी फरार हैं। घटना के बाद गांववासी काफी सहमे हुए हैं।

अमर उजाला, चंडीगढ़, 12 जनवरी 2013

कुराली में तांत्रिक पिता-पुत्र को

लोगों ने पकड़ा, किया पुलिस के हवाले

कुराली के वार्ड-12 की एक कालोनी में पिता-पुत्र के जादू-टोने से परेशान मोहल्लावासियों ने रात को पहरा देकर दोनों को काबू कर पुलिस के हवाले कर दिया।

मोहल्लावासी दिवेश सिंगला ने बताया कि उनकी कालोनी में रात कई दिनों से जादू-टोने किए जा रहे थे। रात के समय घरों के आगे कुछ न कुछ रक्षा हुआ होता था, जिस कारण वे कई दिनों से सचेत थे। दिवेश ने बताया कि वह जादू-टोना करने वाले को पकड़ने की ताक में थे।

इसके लिये लोगों ने कल रात पहरा दिया। इस दौरान आधी रात को एक टैंपो आया और उसमें से एक व्यक्ति ने उतर कर कुछ सामान उनके घर के आगे रख दिया। इस पर उन्होंने तुरंत शोर मचा दिया और एकत्रित लोगों ने टैंपो चालक को कुछ दूरी पर जाकर काबू कर लिया। इसी मोहल्ले अजमेर सिंह और केष्ण ने बताया कि गत कुछ दिनों उनके घर के आगे भी जादू-टोने किए जा रहे थे। इस कारण पूरी कालोनी का जीना मुश्किल हो गया था।

मोहल्लावासियों ने जादू-टोना करने वाले काबू किए गए व्यक्ति की खूब पिटाई की और पुलिस के हवाले कर दिया। बादम में पुलिस ने काबू किए व्यक्ति के घर की तलाशी ली तो उसकसे घर में कोई संदिग्ध वस्तु नहीं मिली। पुलिस ने लोगों द्वारा काबू किए गए पिता-पुत्र अनिल कुमार और साहिल के विरुद्ध केस दर्ज कर लिया है। लोगों की धरपकड़ में सिर में चोट लगने के कारण घायल हुए साहिल को स्थानीय सिविल अस्पताल में भर्ती करवाया गया है।

7-5-14 **(पंजाब केसरी)**

खोज खबर

विटामिन डी की कमी से डिमेंशिया का खतरा हो सकता है दोगुना

लंदन (एजेंसी) : बुजुर्ग लोगों में विटामिन डी के निचले स्तर से डिमेंशिया और अल्जाइमर के विकसित होने का खतरा दोगुना हो सकता है। यह बात एक अध्ययन में पाई गई है। यूनिवर्सिटी आफ एक्सेटर मैडिकल स्कूल में डाक्टर डेविड लेवेलिन के नेतृत्व वाले अंतर्राष्ट्रीय दल ने पाया कि इस अध्ययन में शामिल जिन लोगों में विटामिन डी की कमी थी, उनमें डिमेंशिया और अल्जाइमर की बीमारी पनपने की संभावना दोगुने से भी ज्यादा थी। शोधकर्त्ताओं ने उन बुजुर्ग अमेरिकी नागरिकों का अध्ययन किया था, जिन्होंने कार्डियोवेस्कुलर हैल्थ स्टडी में भाग लिया।

उन्होंने पाया कि जिन व्यस्कों में विटामिन डी की कमी थोड़ी सी ही थी, उनमें किसी भ तरह का डिमेंशिया पैदा होने का खतरा 53 प्रतिशत था। वहीं जिनमें विटामिन डी कमी का स्तर गंभीर था, उनमें यह खतरा 125 प्रतिशत था। ऐसे ही नतीजे अल्जाइमर बीमारी के बारे में भी पाए गए। कम कमी वाले समूह में इस बीमारी का खतरा 69 प्रतिशत था, जबकि गंभीर रूप से विटामिन डी की कमी वाले लोगों में इसका प्रतिशत 122 प्रतिशत था। इस अध्ययन में 65 वर्ष और उससे ज्यादा उम्र के उन 1,658 व्यस्कों का अध्ययन किया गया, जो अध्ययन की शुरूआत के समय बिना किसी मदद के चल सकते थे। डिमेंशिया, हृदय संबंधी बीमारी और आघात से मुक्त थे।

इन लोगों में इस बात का अध्ययन छह साल तक किया गया कि किस-किस में अल्जाइमर या डिमेंशिया की दूसरी किस्में देखने को मिलती हैं। लेवेलेन ने कहा कि हमने विटामिन डी के निचले स्तर और डिमेंशिया और अल्जाइमर के बीच का संबंध पता लगाने की उम्मीद की थी, लेकिन नतीजे काफी हैरान करने वाले थे। हमने पाया कि यह संबंध हमरी उम्मीद से दोगुना था। अब यह साबित करने के लिए चिकित्सीय परीक्षण जरूरी है कि क्या मछली या विटामिन डी के पूरक खाने से डिमेंशिया और अल्जाइमर को रोका या विलंबित किया जा सकता है? उन्होंने कहा कि हमें इस शुरूआती स्तर पर सावधान रहने की जरूरत है और हमारे हालिया नतीजे यह नहीं दिखाते कि विटामिन डी कम होने से डिमेंशिया हो ही जाता है।

'इलैक्ट्रोनिक जीभ' बताएगी स्वाद में भेद करने का राज

वांशिगटन : वैज्ञानिकों ने एक नई बहु कीमती और उच्च्य संवेदनशील 'इलैक्ट्रोनिक जीभ' का विकास किया है, जोकि खाद्य और पेय पदार्थों की गुणवत्ता की परख करने में सक्षम होगी। 'इलैक्ट्रोनिक जीभ' पानी में प्रदूषण और ब्लड टेस्ट से बीमारी का भी पता लगा सकेगी। शोधकर्ता एसवी लिटविनेंको और उनकी टीम ने अमेरिका के रासायनिक सोसायटी के जर्नल में दावा किया कि इलैक्ट्रोनिक जीभ एक विश्लेषणात्मक उपकरण है जोकि नकल करते हुए बताएगा कि कैसे लोग और स्तनधारी स्वादों में भेद करते हैं। जिस प्रकार जीभ पर स्वाद की कलियां स्वाद का परीक्षण करती हैं वैसे ही इसमें लगा सेंसर स्वाद के बारे में कम्पयूटर को सिग्नल भेज देगा और फलेवर का संदेश दिमाग को चला जाएगा। फूड एंड बीवरेज इंडस्ट्री की ओर से थाई फूड की पहचान और बीयर की गुणवत्ता के लिए इसे लगाए जाने की शुरुआत हो चुकी है।

अमर उजाला-15.11.2014

आंखों पर परदा न पड़ जाए!

डाइबिटिक रेटिनोपैथी के चार चरण होते हैं। अगर बीमारी चौथे चरण में पहुंच जाती है, तो आंखों की रोशनी जाने की पूरी सम्भावना रहती है। इस बीमारी का मुख्य कारण पुरानी डायबिटीज है। जिन लोगों में 10 साल पुरानी डायबिटीज है, उनमें नेत्र ज्योति कम होने की संभावना 60-70 प्रतिशत होती है। जबकि जो लोग 15-20 साल से डायबिटीज के शिकार हैं, उनमें नेत्र ज्योति कम होने की सम्भावना 80-90 प्रतिशत तक होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार अंधेपन का एक प्रमुख कारण 'डायबिटिक रेटिनोपैथी' है। इसका पता तब चलता है जब यह बीमारी गंभीर रूप ले लेती है। इस बीमारी की वजह से रेटिना में नई वेसल्स बनने लगती हैं। डायबिटीज रक्त वाहिकाओं की दीवार को प्रभावित करता है, जिससे रेटिना तक ऑक्सीजन ले जाने वाली वेसल्स कमजोर हो जाती हैं और इनमें से ब्लड लीकेज होने लगती है। कई बार तो रेटिना खिसकने लगता है। मरीजों में अगर शुगर की मात्रा नियंत्रित नहीं रहती तो वह डायबिटिक रेटिनोपैथी के शिकार हो सकते हैं। विशेषज्ञों के मुताबिक बीमारी के तीसरे चरण तक डायबिटिक रेटिनोपैथी का इलाज संभव है। इसमें एंटी वीईजीएफ इंजेक्शन खासा मददगार हो सकता है। लेजर तकनीक से ईलाज के बाद अंधेपन की संभावना 60 प्रतिशत तक कम हो जाती है। लेकिन आपका जागरूक रहना और सावधानी के उपाय अपनाना आवश्यक है।

लक्षण कहते हैं

* रेटिना से खून आना
* आंखों में बार-बार संक्रमण
* चश्मे का नम्बर बार-बार बदलना
* सफेद या काला मोतियाबिंद
* सिरदर्द या अचानक आंखों की रोशनी कम होना
* सुबह उठने के बाद कम दिखना

डॉक्टर की सुनो

शुगर और रक्त में कॉलेस्ट्राल कंट्रोल रखना जरूरी है। हल्की एक्सरसाइज मददगार हो सकती है। इसी के साथ आंखों के पर्दे और नेत्र ज्योति की जांच समय-समय पर कराते रहें। आंखों में दर्द, अंधेरा छाने जैसे लक्षण दिखाई दे तो तुरंत डॉक्टर से मिलें। डायबिटीज के मरीज को समय-समय पर आंखों की जांच जरूर करानी चाहिए।

-डॉ. संजय तेवतिया

(नेत्र रोग विशेषज्ञ)

★★

फेस बुक से

तीन व्यक्ति किसी गंभीर बीमारी से ग्रस्त थे जिनमें एक हिन्दु, दूसरा मुसलमान तथा तीसरा किसी मजहब को न मानने वाला अर्थात नास्तिक था। डाक्टर ने नाउमीदी जाहिर करते हुए उन्हें बताया कि आप तीनों कुछ ही दिन के मेहमान हो। तीनों चिंतित हो उठे।

मुसलमान बोला-मैं तो आज से रोज सुबह से शाम खुदा को याद करूंगा। हिन्दु बोला- 'मैं भी आज से सारा काम छोड़ मंदिर में पूजा पाठ किया करूंगा'-और भैया तुम तो किसी धर्म को मानते नहीं, तुम क्या करोगे? वह तीसरे से पूछने लगा।

'मैं इससे भी किसी अच्छे डाक्टर की तलाश करूंगा', नास्तिक ने उत्तर दिया।

केस रिपोर्ट

फिर वह स्कूल जाने लग गई

- बलवंत सिंह, लैक्चरार

निशा पांचवीं तक अपने गांव के सरकारी प्राईमरी स्कूल में पढ़ती रही थी। उसके घर वालों का कहना था कि वह हर साल अपनी कक्षा में प्रथम आती थी। वह खेलने-कूदने के बजाए घर में भी हर समय किताबें लेकर बैठ जाती और अपनी पढ़ाई करने में मगन रहती थी। अपने अध्यापकों की नजरों में निशा एक गुणवंती लड़की थी। स्कूल में वह हमेशा अनुशासन में रहती थी। वह अपने माता-पिता, अपने अध्यापकों एवं अपने से बड़ों का हमेशा सम्मान करती थी। अतः वह अपने अध्यापकों व अपने माता-पिता की आंखों का तारा थी।

गांव का सरकारी स्कूल नया-नया अपग्रेड हुआ था अतः उस स्कूल में सभी पोस्टों पर अध्यापकों की अभी नियुक्तियां नहीं हुई थी। पास के गांव से एक अध्यापक छटी कक्षा के बच्चों के दाखिले के लिए शिक्षा विभाग ने डेपूटेशन पर भेजा हुआ था। गांव के स्कूल की यह व्यवस्था देख कर निशा के घर वालों ने छटी कक्षा में उसे नजदीक के कस्बा लाडवा में एक प्राईवेट स्कूल जनता हाई स्कूल में दाखिल करवा दिया। नए स्कूल में कुछ समय तक तो निशा अत्यंत प्रसन्नता से जाती रही। घर आकर अपना होम वर्क भी खुशी-खुशी के साथ करती रही।

फिर धीरे-धीरे निशा का व्यवहार बदलना शुरू हो गया। वह स्कूल जाने से कतराने लगी और गुम-सुम सी रहने लग गई। उसे थोड़ा-थोड़ा बुखार भी रहने लग गया। घर वालों ने उसकी दवा-दारू भी करवाई, परन्तु उसकी हालत वैसी ही बनी रही। कुछ दिनों के पश्चात् समस्या ने और विकराल रूप धारण कर लिया। अब प्रातः जब स्कूल जाने का समय होता तो निशा को काफी बुखार चढ़ जाता अथवा पेट में तेज दर्द होने लग जाता, परन्तु एक-डेढ़ घंटा बीत जाने के पश्चात् उसका बुखार उतर जाता तथा उसका पेट दर्द भी ठीक हो जाता।

परेशान होकर घर वालों ने शहर के बड़े अस्पताल में निशा के कई टैस्ट करवाए। सभी टैस्ट सामान्य थे। डाक्टरों ने कह दिया कि यह स्कूल जाने से घबराती है, इसीलिए इसको मिथ्या बुखार तथा मिथ्या पेट दर्द होता है, परन्तु घर वालों को निशा की पांचवीं तक की पढ़ाई की कार्यकुशलता देख कर डाक्टरों की बात पर विश्वास नहीं आ रहा था।

डाक्टरों की सलाह को ध्यान में रखकर निशा के पिता ने उसके स्कूल में जाकर सच्चाई का पता लगाने का निश्चय किया। स्कूल के अध्यापकों से पता चला कि निशा अपनी पढ़ाई की ओर ध्यान नहीं करती तथा अपनी पढ़ाई में पिछड़ती चली जा रही है, परन्तु पढ़ाई में पिछड़ने का कोई विशेष कारण अध्यापक नहीं बता सके। काफी पूछताछ करने पर आसपास के लोगों से उन्हें एक विशेष बात का पता चला। पास के दुकानदारों एवं अन्य लोगों ने उन्हें बताया कि यह स्कूल जब बना था तो भवन की नींव खोदते समय यहां से मानव हड्डियों के पिंजर व मानव खोपड़ियां निकली थी, जिसके कारण इससे पूर्व भी कई विद्यार्थी डर कर इस स्कूल से हट चुके हैं।

यह सुनकर घर वालों के लिए एक नई मुसीबत खड़ी हो गई। उनको अब पक्का यकीन हो गया कि निशा को उस स्कूल से भूत-प्रेतों की पकड़ हो गई है। इसी कारण उसे स्कूल में जाने के भय से ही बुखार व पेट दर्द होने लग जाता है। बाकी सारा

दिन तथा छुट्टी वले दिन वह बिल्कुल ठीक रहती है। अतः परेशान होकर वे उसे कई बाबाओं, ओझाओं, मौलवियों इत्यादि के पास लेकर गए। इसके साथ ही वे उसे बालाजी की चौकियों, बागड़ वाले की चौकियों तथा पीरों की चौकियों पर भी लेकर गए। इन चौकियों पर उनके हजारों ही रुपए खर्च हो गए, परन्तु आराम कहीं से भी नहीं आया। कई बाबाओं ने उसे स्कूल से हटा लेने तथा पढ़ाई छोड़ देने का फरमान भी सुना दिया। तंग होकर घर वालों ने निशा को उस स्कूल से हटा लिया और गांव के ही राजकीय माध्यमिक विद्यालय में पुनः दाखिल करवा दिया, परन्तु मामला फिर भी हल नहीं हुआ। अब तो निशा किसी भी स्कूल में जाने का नाम ही नहीं लेती थी।

अन्त में उनके एक रिश्तेदार ने, जो तर्कशील सोसायटी के जनहित कार्यों से परिचित था, उसे मेरे पास मनोरोग परामर्श केंद्र में भेज दिया। जब वे उसे लेकर मेरे पास आए तो उसकी हालत अत्यंत दयनीय थी। मैंने निशा व उसकी मां को उसके पास बिठाकर निशा से लंबी बातचीत की। पहले तो निशा अत्यंत डरी सी तथा सहमी सी थी, परन्तु मेरे द्वारा हौसला बढ़ाए जाने पर वह खुल कर अपने मन की समस्या को बताने लग गई। मैंने उसकी समस्या को समझ कर फिर सम्मोहन विधि द्वारा उसके मन में बैठे हुए भूत-प्रेतों के डर को दूर कर दिया। जब उसे सम्मोहन निद्रा से उठाया गया, तो वह अत्यंत प्रसन्न थी। फिर मैंने उन्हें तीन-चार रविवार परामर्श केंद्र में बुला कर काऊंसलिंग द्वारा तथा सम्मोहन द्वारा उसे प्रेरक सुझाव दिए, जिससे वह बिल्कुल ठीक हो गई और अपने स्कूल में प्रतिदिन जाने लग गई। धीरे-धीरे उसे अपनी मेहनत से अपनी पढ़ाई की कमी को पूरा किया तथा अपनी कक्षा में सबसे होशियार विद्यार्थियों में शामिल हो गई।

कारण : भारत-पाक बंटवारे के दौरान सन् 1947 में भारत और पाकिस्तान में बहुत अधिक मात्रा में निर्दोष लोगों का खून बहाया गया था। जहां पर उक्त स्कूल बना, हो सकता है कि वहां पर उस बंटवारे के दौरान कई मुसलमानों का कत्ल करके वहां दफना दिया गया हो अथवा कोई अन्य कारण हो कि स्कूल की नींव खोदते समय वहां से कोई मानव अस्थि पिंजर निकल आया हो। यह बात फैलती-फैलती आगे फैलती चली गई। ऐसी बातें स्कूल के बच्चों में हो जाना साधारण सी बात है।

पांचवीं तक तो निशा पढ़ाई में अव्वल आती थी तथा हमेशा अपनी पढ़ाई में मगन रहती थी। निशा अत्यधिक संवेदनशील स्वभाव की लड़की है। जब अपनी कक्षा की छात्राओं द्वारा उसने सुना कि इस स्कूल में से मानव अस्थि पिंजर निकले हैं, तथा इस स्कूल में भूत-प्रेत रहते हैं तो उसका संवेदनशील मन अत्यंत परेशान हो गया। उसे अब रह-रह कर भूत-प्रेतों के ख्याल आने लग गए। उसे सपनों में भी भूत-प्रेत दिखाई देने शुरू हो गए। इससे उसे गहरा मानसिक आघात लगा, जिसके कारण वह बीमार रहने लग गई तथा उसके पेट में दर्द रहने लग गया। डाक्टरी रिपोर्टों में किसी प्रकार का कोई इन्फैक्शन न आने के कारण डाक्टर अपनी जगह पर सही थे, परन्तु डाक्टर होकर भी वे उसकी मानसिक उलझन को न समझ सके।

जब घर वाले निशा को बाबाओं की चौकियों पर ले जाने लगे और बाबाओं ने उसे भूत-प्रेत बाधा से ग्रसित घोषित कर दिया तो निशा का कोमल मन और भी परेशान हो गया। इसी कारण वह अपने गांव के सरकारी स्कूल में जाने से भी लाचार हो गई।

मेरे द्वारा उसकी मानसिक उलझन को समझ कर उसका मनौवैज्ञानिक ढंग से हल कर देने के पश्चात् वह खुशी-खुशी से स्कूल जाने लगी तथा अब वह आठवीं कक्षा की एक प्रतिभावान छात्रा है।

★★

मानव कर्त्तव्य

आर.पी. गांधी

दुनिया भर के धर्म, मज़हब, मिशन, पंथ में एक बात सब में सांझी है कि मानव जीवन का कर्त्तव्य है कि वह ईश्वर को प्राप्त करे, जिससे दुखों का छुटकारा हो। दुनिया में सबसे अधिक आबादी ईसाई धर्म के मानने वालों की है। उनका यह मानना है कि हर रविवार को चर्च जाएं, प्रार्थना में हिस्सा लें। बाईबल में विश्वास लाएं, अपने गुरु के रुप में पादरी को मानें। बप्तिमा लें और ईसा मसीह पर विश्वास लाएं। वह आपके गुनाहों को अपने कंधों पर ले लेगा और उसकी सिफारिश पर ईश्वर सारे गुनाहों को मुआफ कर देगा। यह एक ही रास्ता है जिससे तुम्हें मुक्ति मिलेगी। अपनी क्षमता के अनुसार दान करें और गरीबों की सहायता करें।

दूसरे नंबर पर इस्लाम आता है। उनका यह मानना है कि अल्लाह पर और उसके पैगम्बर हजरत मुहम्मद और कुरान पर ईमान लाएं। अदीश के अनुसार अपनी जिन्दगी गुजारें। पांच वक्त की नमाज अदा करें, रोजे रखें व जकात दें। माला फेरना भी इनकी शराह का हिस्सा है जिसे तसबीह कहा जाता है। मक्का की जिआरत को भी एक फर्ज माना जाता है। हिन्दू धर्म में मानव कर्त्तव्य के बारे जो शिक्षा दी जाती है वह है कि प्रातः और सायं दोनों समय मंदिर जाएं। देवताओं पर प्रसाद चढ़ाएं। पूजा, पाठ, यज्ञ-हवन करें। तीर्थ स्थानों की यात्रा व स्नान को भी धार्मिक कृत्य माना गया है। पवित्र नदियों के स्नान व उनकी पूजा, माला जपना, साधू संतों की सेवा, मृत पूर्वजों के लिए श्राद्ध, गुरु भक्ति आदि मानव के परम कर्त्तव्य माने गए हैं।

सिख धर्म में सिमरन पर अत्यधिक बल देते हैं। ग्रंथ साहिब का अखंड पाठ, श्रद्धा से माथा टेकना, ग्रंथ साहिब पर चंवर झुलाना, उस पर रुमाला ओढ़ाना, जपजी का पाठ इनके धार्मिक कृत्य हैं, क्योंकि सिख धर्म का जन्म हिन्दू धर्म से हुआ है। अतः इनकी अधिकतर मान्यताएं हिन्दू धर्म से मेल खाती हैं। इनके अपने धर्म स्थल भी हैं, जिनकी यात्रा करना व वहां पर सरोवरों में स्नान करना एक पुण्य का कार्य माना जाता है। इन स्थानों पर बड़े-बड़े गुरुद्वारे भी स्थित हैं। जैसे अमृतसर, हजूर साहिब, पटना साहिब, पौंटा साहिब आदि। पक्का सिख बनने के लिए अमृत छकना आवश्यक होता है। इस धर्म की पांच निशानियां आवश्यक मानी जाती हैं, जो 'क' अक्षर से शुरू होती हैं जैसे केश, कंघा, कच्छा, कृपाण, कड़ा। इन को धारण करने वाला ही सच्चा सिख माना जाता है। यदि इनमें से एक का भी पालन न किया जाए तो उसे धर्म के विपरीत कार्य माना जाता है और अन्य धार्मिक लोग उसे हेय की दृष्टि से देखते हैं। एक प्रकार पांच चीजों में से किसी एक को धारण न करना, धर्म के विरुद्ध माना जाता है।

अगर हम गहराई से इन सभी धर्मों की बातों पर ध्यान दें तो यह हर एक का व्यक्तिगत जीवन है। समाज को किसी व्यक्ति के निजी जीवन से कोई लेना-देना नहीं होता और न ही इन बातों से समाज का कोई विशेष भला होता है, जबकि मानव एक सामाजिक प्राणी है और समाज से ही उसकी भिन्न-भिन्न आवश्यकताएं पूरी होती हैं, इसलिए मानव कर्त्तव्य यह बनता है कि वह समाज को स्वस्थ बनाने में योगदान दे, उसका विकास करे और हर प्रकार से इस विकास के कार्य में सहायक

बने। अतः हर मनुष्य का दायित्व यह बनता है कि वह ऐसी सरकारों का निर्माण करे जिसमें तीन बातों की गारंटी आवश्यक हो। स्वास्थ्य, शिक्षा तथा रोजगार। स्वास्थ्य इसलिए आवश्यक है कि एक स्वस्थ व्यक्ति ही कार्य करने की क्षमता रखता है और विकास में भागीदार हो सकता है। शिक्षा भी मानव निर्माण में अहम् भूमिका निभाती है। इसी पर किसी राष्ट्र का निर्माण निर्भर करता है। शिक्षा से किसी व्यक्ति के सोचने और समझने की शक्ति बढ़ती है। कुछ नया जानने के लिए उसके अंदर जिज्ञासा उत्पन्न होती है और यही मानव विकास का आधार बनता है। हर घटना को जानने और समझने का उसका प्रयास रहता है। इस प्रकार शिक्षा विकास की धुरी है।

रोजगार पैदा करने के लिए नए-नए उद्योग धंधे स्थापित करने होंगे। इन उद्योगों से जहां मानव हाथों को काम मिलेगा और वे अपना जीवन यापन करने में समर्थ होंगे, वहीं पर राष्ट्र को नए उत्पाद मिलेंगे, जिससे राष्ट्र सम्पन्न होगा और उसको शक्ति मिलेगी।

स्वच्छता मानव कर्त्तव्य का प्रमुख हिस्सा है। यदि स्वच्छता रखी जाए तो अनेक प्रकार की बीमारियों से छुटकारा पाया जा सकता है और स्वास्थ्य सेवाओं पर खर्च होने वाले धर्म में कटौती की जा सकती है। अतः मानव का परम कर्त्तव्य बनता है कि वह अपनी व्यक्तिगत शारीरिक स्वच्छता के साथ-साथ सामूहिक स्वच्छता की जिम्मेवारी को भी समझे, जिससे सार्वजनिक स्थल यथा गलियां, सड़कें, पार्क, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन आदि स्वच्छ अवस्था में रह सकें और सुखद वातावरण बने।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि मानव जीवन का कर्त्तव्य है कि वह ऐसे कार्य करे जिससे किसी न किसी प्रकार से मानव जाति का कल्याण होता हो। उसका हर छोटा अथवा बड़ा कृत्य मानव जीवन को सुखमय बनाने में सहायक हो। इस विश्व को स्वस्थ और सुंदर बनाने में मानव अपनी हर क्षमता को लगाए, यही मानव जीवन का कर्त्तव्य है।

50, लक्ष्मी नगर, यमुनानगर

मोः 93154-46140

★★

पूर्व जस्टिस कृष्णा अय्यर का निधन

इंदिरा के खिलाफ फैसले से चर्चित हुए थे

कोच्चि। लीक से हटकर मानवीय पहलुओं को प्राथमिकता देते हुए कई महत्वपूर्ण फैसले करने वाले पूर्व जस्टिस वीआर कृष्णा अय्यर का बृहस्पतिवार तड़के निधन हो गया। वामपंथी विचारधारा वाले जस्टिस अय्यर आपातकाल के दौरान चर्चित हुए थे। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने लोक सभा चुनावों में इंदिरा गांधी की भारी जीत को अस्वीकार कर दिया था और जस्टिस अय्यर ने इस फैसले पर रोक लगाने से इन्कार कर दिया था। इसके अगले दिन देश में इमरजेंसी लागू हो गई थी।

भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश ए.एस. आनंद ने उन्हें भारतीय न्यायपालिका का 'भीष्म पितामह' भी करार दिया था। वैद्यनाथनपुरा राम कृष्णा अययर ने निष्पक्ष फैसलों की वजह से काफी लोकप्रियता हासिल की। जज के रूप में जमानत की फिर से व्याख्या करने का श्रेय भी उन्हीं को जाता है। वह पिछले महीने 13 नवम्बर को ही 100 साल के हुए थे। गत 24 नवम्बर को उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था। पीएम नरेन्द्र मोदी ने ट्वीटर के जरिए उनके निधन पर शोक जताते हुए कहा, 'जस्टिस अय्यर के साथ मेरा जुड़ाव काफी खास है। आज मुझे उनसे की गई बातें याद आ रही हैं। उन्होंने मुझे काफी पत्र भी लिखे।' माकपा महासचिव प्रकाश करात ने कहा कि 'अपने पूरे जीवन में कृष्णा अय्यर न्याय, समानता और समाजवाद के लिए आवाज उठाते रहे। ***-एजेंसी***

भगवान भटकते घर-घर, गली-गली

-निर्मल रानी

सम्राट अकबर के बारे में कहा जाता है कि वे पुत्र प्राप्ति की खातिर देवी से मन्नत मांगने माता वैष्णो देवी तथा ज्वाला जी के मंदिरों तक पैदल ही गए थे। आज भी यदि हम देश के प्रमुख तीर्थ स्थलों तक जाएं तो हमें यह दिखाई देगा कि अब भी कई आस्थावान लोग देवी-देवताओं व भगवान के दर्शन करने हेतु दूर-दूराज के इलाकों से साईकिल पर सवार होकर, पैदल चलकर अथवा दंडवत करती हुई मुद्रा में लेट-लेट कर तीर्थ स्थलों की ओर प्रस्थान करते रहते हैं। गोया आम लोगों में यह धारणा बनी हुई है कि अपने शरीर को कष्ट देकर देवी-देवताओं व भगवान के दर्शन करने वालों पर उनकी कृपा दृष्टि शीघ्र होती है, परन्तु धर्म के नाम पर जनता को बेवकूफ बनाने वालों ने तथा देवी-देवताओं के नाम पर ठगी करने का बीड़ा उठाने वालों ने लगता है कि आम लोगों की जेब से पैसे ठगने के लिए ऐसी व्यवस्था बना रखी है कि अब आपको भगवान का आर्शीवाद लेने हेतु किसी मंदिर व दरगाह आदि में जाने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। भगवान, देवी-देवता अथवा सिद्ध पीर-फकीर स्वयं इन ठगों के हाथों का खिलौना बनकर आपके समक्ष उपस्थित हो जाया करेंगे। चाहे वह आपका घर हो, दुकान, कार्यालय यहां तक कि यदि आप बस या ट्रेन में यात्रा कर रहे हों तो वहां भी आपकी यात्रा को मंगलमय बनाने के लिए भगवान पहुंच जाएंगे।

मोहल्ले व गलियों में घूम-घूम कर भिक्षा मांगने का चलन तो हमारे देश का बेहद प्राचीन चलन है। दान-दक्षिणा, खैरात आदि देना भी हमारे संस्कारों में शामिल है, परन्तु सीधे-सादे भक्तों को धार्मिक व भावनात्मक रूप से ब्लैकमेल करना भी अब हमारी परम्पराओं का एक हिस्सा बनता जा रहा है। मिसाल के तौर पर हर शनिवार के दिन बाल्टी अथवा किसी अन्य बर्तन में दान लेने, नकदी वसूल करने तथा तेल का दान करने का चलन तो हमारे देश में बड़ा पुराना हो चुका है। यदि आप देखें तो प्रत्येक शनिवार को शनि देवता के नाम पर दान मांगने वाले लोग आपके पास नकद अथवा तेल का दान लेने पहुंच जाते हैं। भिखारियों ने मंगलवार को भिक्षा मांगने का तो बकायदा राष्ट्रीय स्तर पर एक बड़ा नेटवर्क बना रखा है, परन्तु अब इसका स्वरूप भिक्षा के साथ-साथ आर्शीवाद दिए जाने का बनने लगा है। स्वयं को ब्राह्मण दर्शाने वाले पंडित रूपी लोगों से लेकर झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले छोटे बच्चे तक अपने हाथों में किसी देवी-देवता, भगवान अथवा किसी भी जाने-माने संत अथवा फकीर की फोटो लेकर किसी भी स्थान अथवा समय पर आपके समक्ष आ धमकते हैं। उनके हाथ में जो तस्वीर अथवा मूर्ति होती है उसके साथ यह तत्व धूप-अगरबत्ती भी सुलगा कर रखते हैं, ताकि लोगों को प्रभावित व अपनी और आकर्षित किया जा सके। भगवान को लेकर दर-दर भटकने के इन पाखंडियों के प्रयासों को अब भावनात्मक रूप भी दिया जा रहा है। देश के तमाम प्रमुख रेलवे स्टेशन व बस अड्डों पर खासतौर पर वाराणसी जैसे धर्मस्थलों के रेलवे स्टेशन व बस अड्डों पर साफ-सुथरे लिबास धारण किए स्वयं को पंडित बताने वाले तिलकधारी लोग बाकायदा भगवान को सजा कर धूप-बत्ती करते हुए आपके समक्ष प्रकट हो जायेंगे। यह अपने साथ प्रसाद के नाम पर खान-पीने की कोई साधारण सी सामग्री भी लिए होते हैं। बिना आपसे पूछे हुए यह पाखंडी ठग आपके माथे पर तिलक लगाकर आपको आर्शीवाद देने लग जाते

हैं। तिलक लगाने के बाद आपको यह कहकर प्रसाद भी देते हैं कि यह अमुक मंदिर का प्रसाद है। यह ठग अपने बोल-बचन में किसी प्रसिद्ध मंदिर का नाम भी लेते हैं। जैसे कि वाराणसी के स्टेशन पर पाया जाने वाला इस पेशे में लगा पाखंडी आपको यह कहकर आपकी यात्रा मंगलमय होने का आर्शीवाद देगा कि यह प्रसाद ज्योति आदि काशी-विश्वनाथ मंदिर की है। जाहिर सी बात है कि इतने बड़े प्रसिद्ध मंदिर का नाम सुनने के बाद वाराणसी से गुजरने वाला कोई भी रेलयात्री बिना कुछ सोचे-समझे अपनी आस्था के अनुसार उस तथाकथित पंडित को अपनी श्रद्धा व हैसियत के अनुसार कुछ न कुछ दान जरूर दे देता है। यहां यह बात स्वयं आसानी से समझी जा सकती है कि जब आम आदमी किसी भिखारी अथवा निठल्ले व्यक्ति को एक-दो रुपए दान में दे देता है, तो ऐसा कोई व्यक्ति उन पाखंडियों के तिलक लगाने, प्रसाद देने तथा यात्रा के मंगलमय होने का आर्शीवाद देने के नाम पर तथा साथ में भारी भरकम मंदिर या तीर्थ स्थान का नाम लेने पर उसे भला पांच-दस या बीस रुपए से कम का दान क्योंकर देगा? कोई-कोई श्रद्धालु तो सौ-पचास रुपए भी इन पाखंडियों को देकर इनकी और भी हौसला अफजाई कर देते हैं। यहां आम आदमी यह सोचने की जहमत गवारा नहीं करता कि जिस भगवान के दर्शन करने के लिए भक्तजन सैंकड़ों व हजारों किलोमीटर यात्रा कर किसी तीर्थस्थल पर पहुंचते हैं वही देवी-देवता, भगवान अथवा संत-फकीर इतनी आसानी से किसी पाखंडी के हाथों का खिलौना बनकर रेलवे प्लेटफार्म पर अथवा ट्रेन के डिब्बों में स्वयं कैसे उपस्थित हो जाते हैं। मंदिरों में जाकर मिलने वाला प्रसाद भक्तों के पास बसों, ट्रेनों में या उनकी चौखट पर स्वयं चलकर कैसे और क्यों आ जाता है? आपने देखा होगा कि इसी प्रकार अजमेर शरीफ की दरगाह पर चादर चढ़ाने के नाम पर उसी चादर के चारों कोने पकड़ कर ठग लोग गली-कूचे व बाजारों में घूमते दिखाई देते हैं। श्रद्धालु लोग अपनी आस्था के अनुसार उनकी चादर में रुपए पैसे फैंकने लगते हैं। यह लोग भी भक्तों को यह समझाने के प्रयास करते हैं कि यह विशेष चादर अमुक दरगाह में ले जाकर मजार पर चढ़ाई जायेगी। लिहाजा आप भी इसमें अपना आर्थिक सहयोग देकर इस धार्मिक व आस्था से जुड़े कृत्य में सहायोगी बनें और श्रद्धालु लोग इन के झांसे में बड़ी आसानी से आ भी जाते हैं। भक्तजनों की श्रद्धा व ऐसे पाखंडियों के इस प्रकार के पाखंडपूर्ण कारनामों पर अधिक तवज्जो न देने के कारण ही धार्मिक भावनाओं के नाम पर लोगों को ठगने का सिलसिला दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। बेरोजगारी के इस दौर में बिना मेहनत किए धन कमाने की सोच रखने वाले तमाम पाखंडी लोग इस प्रकार के व्यवसाय में बड़ी आसानी से शामिल हो जाते हैं। पूरे देश में कहीं कोई किसी गऊ की पीठ पर चादर डालकर गऊमाता के भोजन के नाम पर दरवाजे-दरवाजे जाकर भक्तों से पैसे या राशन मांगता है। कोई व्यक्ति अपने साथ साईं बाबा का मंदिर सजाकर गली-गली घूम-घूम कर साईं बाबा का आर्शीवाद दरवाजे-दरवाजे पहुंचाता दिखाई देता है। कोई गोगा पीर के नाम का परचम लेकर गोगा माड़ी जाने के लिए आपके दरवाजे पर आ धमकता है तथा गोगा पीर का आशीर्वाद घर बैठे पहुंचता है। कोई कहता है कि नांदेड़ हजूर साहिब जाना है, पैसे दे दो। हुजूर साहब आपका भला करेंगे।

सवाल यह है कि देवी-देवताओं, भगवान अथवा संत-फकीरो के चित्र लेकर उनके नाम का दुरुपयोग कर तथा घर-घर, गली-गली दरवाजे-दरवाजे पर जाकर इनके नाम पर लोगों को ठगने के प्रयास कितने उचित हैं? गली-गली में जाकर भगवान की मूर्ति लेकर घूमना, बिना मांगे किसी को प्रसाद देना, भगवान की मूर्ति अथवा चित्र को हाथों में लेकर बिना आपके निमंत्रण के आपके समक्ष प्रकट हो जाना भगवान का अपमान व निरादर है अथवा नहीं? यदि आप संसार के

- शेष पृष्ठ 44 पर

मेरे अपने विचारों में वैज्ञानिक परख कैसे आई ?

मेरा जन्म 1945 में हुआ था। बाल्यावस्था से लेकर किशोर अवस्था तक समस्त देवी-देवता व भूत-प्रेत आदि तथा कुल देवताओं में जैसे दुल्हा बाबा, करतार, सन्यासी, ब्रह्म, मढ़ी-मसान आदि देवताओं को बहुत ही मानता था, लेकिन इतना ज्यादा मानने पर इन सब से डरते बहुत थे। रात्रि में अकेले बाहर नहीं निकल सकते थे। घर के बाहर जाने के लिए साथी की जरूरत पड़ती थी। जब मैं कक्षा 9 में रीवा में पढ़ता था, उस समय जो कक्षा अध्यापक श्री राम सिंह आर्य जी थे। वे कक्षा के विषय से हटकर आर्य समाज के सिद्धांतों को बतलाते हुए समस्त देवी-देवों व भूत-प्रेतों व मंत्र-तंत्रों को कल्पित बतलाते हुए मोटे-मोटे उदाहरण दे-देकर इन देवताओं एवं शैतानों के अस्तित्व को नकारते थे। सभी छात्रों को पांच ज्ञानेन्द्रियों से जो जाने वही मानने पर बल दिया करते थे।

विद्यालय से जब वे वापिस ग्राम अजगरहा में आया करते थे, तो वहां भी एक महात्मा जी श्री सेवा साहब जी विराजमान थे। उनका भी प्रवचन उपरोक्त बिन्दू को लेकर समस्त अंधविश्वासों का खुला पर्दाफाश सुन कर मेरे अन्तःकरण में परिवर्तन हो गया। संत की वाणियों में अध्यापकों की वाणी का मैंने स्वागत किया।

संत की वाणी :-

जीवहि कर्ता कर्म बनावै,
जीवहि काल समय ठहरावै।
चारू वेद औ नाना वाणी
कल्पि-कल्पि सब जीव उत्पानी।।
जेते सिद्धांत भये जग सोई,
सो सब भास जीव को होई।
जीव जमा नहि होय रे भाई,
तो सवै सिद्धांत कौन ठहराई।।
जीव बिना नहि आत्मा,
जीव बिना नहीं ब्रह्म।
जीव बिना शिवो नहीं,
जीव बिना सब भ्रम।।

उपरोक्त पंक्तियों का आशय संसार में फैले हुए अंधविश्वासों को मानने और थोपने या दूसरे को मनवाने की विभिन्न पद्धतियों से उनकी अस्तित्ता स्वीकार करने वाला यही मनुष्य ही है और ठीक उसके विपरीत सभी कल्पित मान्यताओं को अस्वीकार करने वाला यही मनुष्य ही है। सज्जनो, पांच ज्ञानेन्द्रियों से जानकर, समझ कर उसे मानना ही धर्म है। उसे धारण करें।

ज्ञान के अदम्य पिपासा ने हर मजहब की सतसंगों की जिज्ञासा मेरे दिल दिमाग में बरकरार रही। इधर बौद्ध साहित्यों के अध्ययन मनन से नई दिशा मिली है। जब भन्ते शील रत्न जी से उपरोक्त बिन्दु आत्मा के विषय में रखी, उनके इस विषय के कथन से प्रभावित हुए। वो तर्क किए कि एक अशरीरी आत्मा को स्वीकार कर लिया जाए, तो उसके संबंध में बहुत से प्रश्न पैदा होते हैं।
1. आत्मा क्या है। 2. आत्मा का आगमन कहां से हुआ। 3. शरीर के मरने के बाद इसका क्या होता है ? और वह वहां कब तक रहता है। 4. आत्मा का आकार कितना बड़ा है व कितना छोटा है। 5. आत्मा की शक्ल कैसी है और शरीर के किस बिन्दू में रहती है। ऐसे प्रश्नों का उत्तर चाहा, लेकिन ऐसे प्रश्नों का यथार्थ जवाब जीव बादियों के पास नहीं है। तत्वों का सहयोग जीवन है। उसका वियोग मृत्यु

है। इससे प्रभावित होकर भन्ते शील रत्न जी से बौद्ध धर्म में दीक्षा ले लिया। बुद्ध का धर्म विशुद्ध मानवतावादी धर्म है। जो यह धर्म सार्वजनिक, सार्वभौतिक एवं सर्वकालिक है। जो वैज्ञानिकता पूर्ण धर्म है। धर्म का सार दूसरों के दुखों को घटाने का प्रयास ही वस्तुतः धर्म है। बुद्ध के दर्शन का आधार किसी भी बात को 'जब जानिए, तब छानिए, फिर मानिएं' पर आधारित है। धम्म पद में आया हैः-

सब कर्म मनोमय होते हैं,
मन से ही होते कर्म सभी।
मन से अनुभूति हुआ करती,
मन से ही होते धर्म सभी।।
जब मनुज प्रदूषित मन द्वारा,
कुछ कहता अथवा करता है।
तब बैलों के पीछे पहिया सा,
दुख उसके ऊपर चलता है।।
जब मनुज स्वच्छ मन के द्वारा,
कुछ कहता अथवा करता है।
तब तन के पीछे छाया सा,
सुख उसके पीछे चलता है।।

उपरोक्त पदों का स्पष्ट अर्थ है इन्हीं आधारों को लेकर तर्कशील सोसायटी, हरियाणा की पत्रिका तर्कशील पथ में वैज्ञानिक चिंतन की आवाज के विचारों में एकता देखकर अपने निवास स्थल में हजारों लोगों पर प्रयोगिक करके बारीकी से छानबीन कर अध्ययन किया कि जो लोगों के मन में कल्पित मान्यताओं का सनक सवार रहता है। उसे कलात्मक ढंगो से दूर कर उन्हें पूर्ण अहसास करा दिया करता हूं। अब कोई शैतानी बाधा नहीं है। अगर कोई सिद्ध करता है, तो उसे एक लाख रुपए का इनाम दूंगा। सिद्ध कर्ता को अवश्य लाएं, लेकिन आज तक कोई सिद्धकर्ता न आ सका। जो आए वह फेल होकर गए। मानव समाज का मन कल्पित मान्यताओं का दास बना हुआ है। मैंने चालीस वर्षो के अध्ययन में पाया कि मन का रोग सब रोगों से बड़ा है। जिनकी हजारों लोग जन प्रतिक्रियाएं सम्मतियां मेरे पास दे गए हैं। इसलिए इसका नामकरण सम्यक दृष्टि परिषद के तहत मनोरोग परापर्श निदान केंद्र रखा गया है। मेरे क्रियाकलापों को समझ जानकर मध्य प्रदेश पिछड़ा वर्ग अधिकारी एवं कर्मचारी संघ के द्वारा महात्मा ज्योतिवाराव फूले राज्य सेवा सम्मान से राविन्द्र भवन, भोपाल में दिनांक 9.2.14 को सम्मानित किया गया हैं।

चंद्रभानु गौतम
जिला सतना मध्य प्रदेश
मो.-9179614162

..........पृष्ठ 42 का शेष

साधारण व प्रचलित नियमों की ओर भी गौर से देखें तो आप यही देखेंगे कि कोई भी दो परिचित अथवा अपरिचित व्यक्ति भी यहां तक कि रिश्तेदार, मित्रगण अथवा सगे संबंधी भी बिना किसी नियंत्रण के बिना किसी खास अवसर के अथवा बिना किसी भी आयोजन के अथवा पारिवारिक कार्यो के समय भी बिना बुलाए बिना आमंत्रित किए एक-दूसरे के घर पर नहीं जाते। फिर आखिर देवी-देवताओं, भगवानों व सिद्ध पुरुषों का इन पाखंडियों व ठगों के हाथों का खिलौना बनकर दर-दर भटकने या रेलवे स्टेशन व बाजारों आदि सार्वजनिक स्थलों पर जाने का क्या औचित्य है? जाहिर है कि यह नाकारों, आलसी तथा बिना किसी मेहनत के अथवा व्यवसाय के धन कमाने का एक जरिया मात्र है। ऐसे ठगों व पाखंडियों को दान-दक्षिणा देकर इन्हें प्रोत्साहित करने के बजाए भगवान को दर-दर भटकाने वाले इन पाखंडियों को हतात्साहित किए जाने की आवश्यकता है।

★★

शहीद भगत सिंह ने कहा थाः

ज़िंदगी तो अपने दम पर ही जी जाती है। दूसरे के कंधों पर तो जनाजे ही उठाये जाते हैं।

प्रकृति से छेड़-छाड़ की समस्या

-का. श्याम सुन्दर *9812132302*

अनेक बुद्धिजीवी और स्वयंसेवी संगठन क्रांति के बुनियादी प्रश्न को सत्ता का प्रश्न मानते ही नहीं बल्कि उनके एजेंडे पर, आज पूंजीवाद के खात्मे से भी ज्यादा प्राथमिक पर्यावरण एवं मानव द्वारा प्रकृति के साथ खिलवाड़ और छेड़-छाड़ जैसी समस्याएं हैं। यानी, ये लोग अपना यह मन्सूबा बांध कर चल रहे हैं कि पूंजीवाद के भीतर ही प्रकृति और पर्यावरण संबंधी इन उक्त प्रकार की तमाम समस्याओं से छुटकारा पाया जाना संभव हैं। अतः इस समस्या पर थोड़ा गहन विचारविमर्श अनिवार्य है, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली और पूंजीवादी सत्ता का खात्मा, प्रकृति और पर्यावरण की समस्याओं के निदान की पूर्व शर्त है। आइये, इसको देखें कि कैसे?

तमाम वनस्पति और जंतु-जगत् से लेकर मनुष्य और मानव-समाज खुद प्रकृति के विकासक्रम की उपज है। एक समय था जब धरती पर किसी प्रकार का जीवन नहीं था। स्वभावतः क्योंकि मानव प्रकृति की ही उपज है, उसकी ही एक शक्ति है और क्योंकि मनुष्य खुद प्रकृति की एक शक्ति है इसलिए उसका प्रकृति की अन्य शक्तियों के साथ घात-प्रतिघात भी अनिवार्य है। यानि प्रकृति के साथ किसी भी प्रकार की छेउ़-छाड़ अथवा क्रिया-प्रतिक्रिया किये बिना मानव-अस्तित्व संभव ही नहीं है। पशुजगत् भी प्रकृति के साथ छेड़छाड़ किये बिना जिंदा नहीं रह सकता। मानव और पशुओं की प्रकृति प्रक्रिया के स्वरूप में केवल अंतर यह होता है कि पशु अचेत रूप में प्रकृति को प्रभावित करते हैं और मनुष्य सचेत रूप में अपने द्वारा निर्मित औजारों के साथ । मानव समाज के जन्मकाल यानी पाषाण-औजारों में सुधार के साथ-साथ इस छेड़-छाड़ की तीव्रता और व्यापकता भी बढ़ती चली गयी। मानव, प्रकृति की अन्य शक्तियों पर अपना शासन कायम करता चला गया। लेकिन प्रकृति पर मानव का यह शासन ऐसा कभी न हुआ कि फिर वो स्वयं प्रकृति की अधीनता में न रहे। पूंजीवाद के आगमन से बहुत पहले के जमाने का हवाला देते हुए एंगल्स प्रकृति और उस पर मानवीय शासन के बीच द्वंद्व के चरित्र को स्पष्ट करते हुए लिखते हैंः ''परन्तु प्रकृति पर अपनी मानवीय विजयों के कारण हमें आत्मप्रशंसा में विभोर नहीं हो जाना चाहिये, क्योंकि वह हर ऐसी विजय का हमसे प्रतिशोध लेती है। यह सही है कि प्रत्येक विजय से प्रथमतः वे ही परिणाम प्राप्त होते हैं जिनका हमने भरोसा किया था, पर द्वितीयतः और तृतीयतः उसके बिल्कुल ही भिन्न तथा अप्रयाशित परिणाम होते हैं, जिसे अक्सर पहले परिणाम का असर जाता रहता है।

मैसोपोटामिया, यूनान, एशिया, माइनर तथा अन्य स्थानों में जिन लोगों ने कृषि योग्य भूमि प्राप्त करने के लिए वनों को बिल्कुल ही नष्ट कर डाला, उन्होंने कभी कल्पना नहीं की थी कि वनों के साथ आर्द्रता के संग्रह केंद्रों और आगारों का उन्मूलन करके वे उन देशों की मौजूदा तबाही की बुनियाद डाल रहे हैं। एल्पस के इटालियनों ने जब पर्वतों की दक्षिणी ढलानों पर चीड़ के वनों को.... .पूरी तरह काट डाला तब उन्हें इस बात का आभास नहीं था कि ऐसा करके वे अपने प्रदेश के दुग्ध उद्योग पर कुठाराघात कर रहे हैं। इससे भी

कम आभास उन्हें इस बात का था कि अपने कार्य द्वारा वे अपने पर्वतीय स्रोतों को वर्ष के अधिक भाग के लिए जलहीन बना रहे हैं तथा साथ ही इन स्रोतों के लिए यह संभव बना रहे हैं कि वे वर्षाऋतु में मैदानों में और भी भयानक बाढ़ें लाया करें।... जब अरबों ने शराब चुआना सीखा तो यह बात उनके दिमाग में बिल्कुल नहीं आई थी कि ऐसा करके वे उस समय तक अज्ञात अमरीकी महाद्वीप के आदिवासियों के भावी उन्मूलन का एक मुख्य साधन उत्पन्न कर रहे थे। और बाद में जब कोलंबस ने अमरीका की खोज की तो उसे नहीं पता था कि ऐसा करके वह यूरोप में बहुत पहले मिटाई जा चुकी दास-प्रथ को नवजीवन प्रदान कर रहा था और नीग्रो-व्यापार की नींव डाल रहा था। सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दियों में भाप का इंजन आविष्कार करने में संलग्न लोगों के दिमाग में यह बात नहीं आयी थी कि वे वह औजार तैयार कर रहे हैं जो समुची दुनिया के अन्दर सामाजिक संबंधों में अन्य किसी भी औजार की अपेक्षा बड़ा क्रांतिकारी परिवर्तन ला देने वाला होगा। खास करके यूरोप में यह औजार थोड़े से लोगों के हाथ में धन को संकेंद्रित करते हुए और विशाल बहुसंख्यक को संपत्तिहीन बनाते हुए पहले तो पूंजीपति वर्ग को सामाजिक और राजनीतिक प्रभुता प्रदान करने वाला, लेकिन उसकसे बाद पूंजीपति और सर्वहारा वर्गों के उस वर्ग-संघर्ष को जन्म देने वाला होगा, जिसका अंतिम परिणाम पूंजीपति वर्ग की सत्ता का खात्मा और सभी वर्ग विग्रहों की समाप्ति ही हो सकता है।.. ..आज तक जितनी भी उत्पादन-प्रणालियां रही हैं, उन सबका लक्ष्य केवल श्रम के सबसे तात्कालिक एवं प्रत्यक्षतः उपयोगी परिणाम प्राप्त करना मात्र रहा है। इसके आगे के परिणामों की जो बाद में आते हैं तथा क्रमिक पुनरावत्ति एवं संचय द्वारा ही प्रभावोत्पादक बनते हैं, पूर्णतया उपेक्षा की गयी। भूमि का सम्मिलित स्वामित्व जो आरंभ में था, एक ओर तो मानवों के ऐसे विकास स्तर के अनुरूप था जिसमे उनका क्षितिज सामान्यतः सम्मुख उपस्थित वस्तुओं तक सीमित था। दूसरी ओर उसमें उपलब्ध भूमि का कुछ फाजिल होना पूर्व मान्य था जिससे कि इस आदिम किसम की अर्थव्यवस्था के किन्हीं संभव दुष्परिणामों का निराकरण करने की गुंजाइश पैदा होती थी । इस फाजिल भूमि के चुक जाने के साथ सम्मिलित स्वामित्व का ह्रास होने लगा। पर उत्पादन के सभी उच्चतर रूपों के परिणामस्वरूप आबादी विभिन्न वर्गों में विभक्त हो जाती थी और विभाजन के कारण शासक एवं उत्पीड़ित वर्गों का विग्रह शुरू हो जाता था। अतः शासक का हित उस हद तक उत्पादन का मुख्य प्रेरक तत्व बन गया जिस हद तक कि उत्पादन उत्पीड़ित जनता के जीवन-निर्वाह के न्यूनतम साधनों तक ही सीमित न था। पश्चिमी यूरोप में आज प्रचलित पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली में यह चीज सबसे अधिक पूर्णता के साथ क्रियांवित की गयी है। उत्पादन और विनिमय पर प्रभुत्व रखने वाले अलग-अलग पूंजीपति अपने कार्यों के सबसे तात्कालिक उपयोगी परिणाम की चिंता करने में ही समर्थ हैं। वस्तुतः यह उपयोगी परिणाम भी -जहां तक कि प्रश्न उत्पादित और विनिमय की गई वस्तुओं की उपयोगिता का होता है-पृष्ठभूमि में चला जाता है और विक्रय द्वारा मिलने वाला मुनाफा एकमात्र प्रेरक तत्व बन जाता है।...कोई कारखानेदार अथवा व्यापारी जब कि सामान्य इच्छित मुनाफे पर किसी उत्पादित अथावा खरीदे माल को बेचता है, वह खुश रहता है और इसकी चिंता नहीं करता कि बाद में माल और उसके खरीदारों का क्या होता है। इस क्रियाकलाप के प्राकृतिक प्रभावों के बारे में भी यही बात कही जा सकती है । जब क्यूबा में स्पेनी बागान मालिकों ने पर्वतों की ढलानों पर खड़े

जंगलों को जला डाला और उनकी राख से अत्यंत लाभप्रद कहवा-वृक्षों की केवल एक पीढ़ी के लिये खाद हासिल की, तब उन्हें इस बात की परवाह न हुई कि बाद में उष्ण प्रदेशी भारी वर्षा मिट्टी की आरक्षित ऊपरी परत को बहा ले जायेगी और नंगी चट्टानें ही छोड़ देगी। जैसे समाज के संबंध में वैसे ही प्रकृति के संबंध में भी वर्तमान उत्पादन-प्रणाली मुख्यतया केवल प्रथम, ठोस परिणाम भर से मतलब रखती है। और तब विस्मय प्रकट किया जाता है कि इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए किये गये क्रियाकलाप के दूरवर्ती प्रभाव बिल्कुल दूसरे ही प्रकार के, बल्कि मुख्यतया बिल्कुल उलटे ही प्रकार के होते हैं।'' (डायलैक्टिक्स ऑफ नेचर, पेज 180-183)

एंगेल्स के इस लंबे उद्धरण से यह बात पूर्णतः स्पष्ट हो जाती है कि मुट्ठी भर शोषक वर्ग अपने हितों और स्वार्थों के लिए शेष मानवता की कोई परवाह नहीं करता है तथा प्राकृतिक संसाधनों और वैज्ञानिक तकनीकों का अंधाधुंध दुरुपयोग करता है। रेडियो धर्मिता तथा आणविक ऊर्जा आदि की खोज जिन वैज्ञानिकों ने की थी उन्होंने यह कभी नहीं सोचा था कि विज्ञान और ऊर्जा का उपयोग हिरोशिमा और नागासाकी में इतने बड़े सर्वनाश के लिये किया जायेगा। आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पूंजीपतियों के शासक समूहों में एक दूसरे से ज्यादा मुनाफों को लूटने की इस कदर होड़ मची हुई है कि उस होड़ में पर्यावरण और प्रदूषण, ग्रीन हाऊस गैसों के उत्सर्जन तथा बड़ी-बड़ी नदियों और समुद्रों को विषाक्त होने से रोकने के लिए सोचने अथवा इस ओर कदम उठाने की किसी को भी फुर्सत नहीं है। हर किसी को इस दौड़ में पिछड़ जाने का भय सता रहा हैं जब कि समूची मानवता के हितों के लिए शाोषक पूंजीपति वर्ग समूची मानवता के हितों का प्रतिनिधित्व कर ही नहीं सकता। यह ऐतिहासिक कार्य तो मात्र मजदूर-वर्ग की सत्ता के तहत ही पूरा किया जाना संभव है जिसका ऐतिहासिक उद्देश्य शोषण-विहीन और वर्ग-विहीन समाज की स्थापना करना है।

कठपुतली

ऊंगली
ऊंगली से बन्धी सुतली,
सुतली से बन्धी कठपुतली।
कठपुतली नाचती
जैसा चाहे वैसे नाचती है,
इशारे से
ऊंगली से,
अपनी मन मर्जी से वह
कठपुतली नचाता है,
कोई ढोल मंजीरे बजाता है,
कोई भजन गाता है,
कोई दरबार सजाता है,
कोई भण्डारा लंगर लगाता है,
भीड़, मजमा लगने पर
वह जादूगरी खेल दिखाता है।
ऊंगली के इशारे से
महाभारत रचाता है।
लोकतंत्र के नाम पर
घिनौना खेल चुनाव,
सियासत पर,
सेठों महासेठों का पड़ाव,
दे जाते जीवन पर घाव,
तोड़ डालूंगा वह ऊंगली
जो कठपुतली नचाती है।
वरना् का लूंगा अपनी ऊंगली
जो इ वी एम का बटन दबाती है।

-डारु अमर सिंह
09359717890

<u>कनार्टक के राजस्व मंत्री सतीश जर्कीहोली ने</u>

अंधविश्वास के विरुद्ध साथियों सहित शमशान में गुजारी एक रात

आजादी के 67 वर्ष बाद आज भी देश में बड़ी संख्या में लोग अंधविश्वासों के शिकार होकर भूत-प्रेत तथा जादू-टोने के चक्कर में उलझे हुए हैं। इसी कारण बहुत से लोग रात को कब्रिस्तानों अथवा शमशानघाट में जाना या उनके निकट से गुजरना अच्छा नहीं समझते।

एक अंधविश्वास यह भी है कि नदियों में बहाए जाने वाले दीपक आत्माओं को शमशान तक आने का रास्ता दिखाते हैं। जादू-टोना करने वाले वहां तरह-तरह के अनुष्ठान करते रहते हैं। अंधविश्वासी लोग बुरी शक्तियों से बचाव के नाम पर या गड़ा धन प्राप्त करने के लिए भी तरह-तरह के अनुष्ठान ऐसे लोगों से शमशानघाटों आदि में करवाते रहते हैं।

आम लोग तो अंधविश्वासों के कारण दिन के समय भी शमशानघाट पर जाने से संकोच करते हैं, लेकिन ये लोग रात के समय भी वहां चैन की बांसुरी बजाते हैं। इन तथाकथित जादू-टोना करने वालों की साधनाओं में काले मुर्गे की बलि चढ़ाकर मांस-मदिरा का प्रसाद चढ़ाना और निर्वस्त्र होकर शव साधना करना आदि शामिल होता है।

लोगों के मन से इसी अंधविश्वास के विरुद्ध जागरूकता पैदा करने के लिए कनार्टक के राजस्व मंत्री सतीश जर्कीहोली ने 8 दिसम्बर की रात अपने सैंकड़ों साथियों के साथ बेलगावी के शमशान बैकुंठ धाम में बिताई। यहां 24 शवदाह स्थल हैं। यहां उन सब लोगों ने रात का खाना भी खाया।

कर्नाटक विधान सभा में अंधविश्वास निरोधक विधेयक लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले सतीश जर्कीहोली ने कहा कि '*यहां रात बिता कर पहले तो मैं इस गलतफहमी को तोड़ना चाहता था कि शमशान जैसी जगहों पर भूत रहते हैं और दूसरी बात यह कि मैं इससे जुड़ा भय समाप्त करना चाहता हूं क्योंकि वास्तव में शमशानघाट पवित्र होता है। सत्ता में न रहने के बाद भी मैं अंधविश्वासों के विरुद्ध अपना मिशन जारी रखूंगा।*'

सतीश जर्कीहोली ने यह भी कहा कि ''*यदि लोग अंधविश्वासों का मुकाबला नहीं करेंगे तो तथाकथित पिछड़े वर्गो तथा अनपढ़ लोगों को कभी भी न्याय नहीं मिल पाएगा। बिल गेट्स विश्व के सर्वाधिक अमीर व्यक्तियों में से एक हैं, परन्तु वह पूजा नहीं करते और मैं भी नहीं करता, हालांकि मेरा 600 करोड़ रुपए वार्षिक का व्यवसाय है।*''

जादू-टोने के संबंध में विडम्बना यह है कि सिर्फ अनपढ़ और आम लोग ही नहीं, बल्कि स्वयं को पढ़े-लिखे और बुद्धिजीवी कहने वाले तथा राजनीतिज्ञ और फिल्म जगत से जुड़े लोग भी अंधविश्वासों को मानने वालों में शामिल हैं।

अंधविश्वासी राजनीतिज्ञों में कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री बी.एस. येदि्युरप्पा का नाम उल्लेखनीय है जो अपनी 'शत्रु दुष्टात्माओं के नाश' के लिए फर्श पर कई-कई रात निर्वस्त्र सोने के अलावा गध ो आदि की बलि भी देते रहे हैं।

बड़ी संख्या में लोगों की भावनाएं इतनी मजबूत हैं कि अंधविश्वासों के विरुद्ध अभियान चलाने वाले महाराष्ट्र के समाज सेवी नरेन्द्र दाभोलकर

की अगस्त 2013 में उनके विरोधियों ने पुणे में गोली मारकर हत्या कर दी थी, जिसके बाद महाराष्ट्र सरकार अंधविश्वास को बढ़ावा देने वाली परम्पराओं पर रोक लगाने संबंधी विधेयक पारित करने के लिए मज़बूर हो गई है, जो नरेन्द्र दाभोलकर के 25 वर्षों के अनथक प्रयासों का ही परिणाम है।

सतीश जर्कीहोली का यह प्रयास भूत-प्रेतों के अस्तित्व के संबंध में व्याप्त जनभ्रांतियां दूर करने की दिशा में एक अच्छा पग है। जिस तरह महाराष्ट्र सरकार ने 'अंधविश्वास निरोधक विधेयक' पारित किया है, उसी प्रकार कर्नाटक व अन्य राज्यों की सरकारों को भी ऐसे विधेयक पारित करने चाहिएं ताकि भोले-भाले लोगों को ऐसी ढोंगी लोगों के छल-प्रपंच में फंसने और अपना शोषण कराने से बचाया जा सके।

-विजय कुमार

संपादक, पंजाब केसरी, 9 दिसम्बर 2014

.....आखिर वह बोला कि :

मैं भगवान नहीं हूं

कभी जिसके साथ हज़ारों-लाखों श्रद्धालुओं का हजूम खड़ा होता था, आज उसी रामपाल की जमानत के लिए एक भी व्यक्ति आगे नहीं आया। अदालत की अवमानना मामले में फंसे रामपाल को जब अदालत में पेश किया गया और जज ने उससे पूछा कि आपका कोई जमानती नहीं आया क्या? इस पर रामपाल ने पहले अपने आसपास देखा, फिर वह कुछ नहीं बोल पाया। दूसरी ओर जब पुलिस कर्मी रामपाल से बात करते हैं तो वह बड़बड़ाहट में बहुत कुछ बोलता दिखा। कभी खुद को परम ब्रह्म, परमात्मा और भगवान बताने का दावा करने वाला रामपाल अब कह रहा है कि वह भगवान नहीं है। पुलिस वाले उसे बातों में उलझाये रहते हैं। एक ने तो कहा तू भगवान क्या इंसान भी नहीं है।

दैनिक टिब्यून

23.11.2014 ...

ईश्वर अल्लाह तेरो नाम

ईश्वर अल्लाह तेरो नाम
कहना यह झूठों का काम

ईश्वर बैठा मंदिर में
अल्लाह बैठा मस्जिद में
एक अगर हैं ईश्वर अल्लाह
क्यों नहीं उनका एक मकान।

मस्जिद वाले तोड़ें मंदिर
दूर फैंक दियो है राम,
मंदिर वाले तोड़ें मस्जिद
अल्लाह का क्या इसमें काम।

मुस्लिम कहता अल्लाह ऊंचा
हिन्दू कहता श्रेष्ठ राम
किसका ईश्वर किसका अल्लाह
अपनी-अपनी है पहचान

ईश्वर अल्लाह को ये दोनों
अपनी-अपनी वस्तु समझें
अपना अपना माल हैं बेचें
अपनी अपनी एक दुकान

ईश्वर और अल्लाह वालों की
अन्दर खाते मिलीभगत है
दुनिया को ये समझें मूर्खा
दोनों की है बात समान

-बलदेव सिंह महरोक

9253064969

अनमोल वचन

'अक्लमंद से बहस नहीं, बेवकूफ पर प्रभाव नहीं, बड़ों के आगे शान नहीं, बच्चों पर धौंस नहीं, बीवी से लड़ाई नही, जो आदमी ऐसा है,यकीनन वह बादशाह से भी ज्यादा सुखी और अच्छा है।''

-बादशाह नसीरूद्दीन

रतन टाटा और उसकी नैनो

-बलजीत भारती

को याद होगा कि कुछ वर्ष पहले रतन टाटा ने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के आग्रह पर 'लखटकिया' कार नैनो बनाने का निर्णय लिया था। टाटा की यह नैनो कार बाजार में आ भी गई, लेकिन रतन टाटा के दावों से कोसों दूर यह कार आम आदमी की पहुंच से बाहर ही रही। रतन टाटा ने दावा किया था कि वह एक लाख रुपए में इसे उपभोक्ता को उपलब्ध ा करवाएंगे, लेकिन जब यह कार बाजार में आई तो आम आदमी के लिए यह एक सपना ही रही, क्योंकि इसका सबसे नीचे का मॉडल भी 1.50 लाख रुपए में पड़ता था। ऊपरी माडल तो 3 लाख में मिलता है।

आपको एक बात और याद होगी जो रतन टाटा ने दुनिया को बताई थी कि किस तरह से नैनो बनाने का कान्सैप्ट उनके दिमाग में आया। बकौल रतन टाटा जब वो एक दिन बाजार से गुजर रहे थे तो उन्होंने एक व्यक्ति को अपनी पत्नी और बच्चों के साथ स्कूटर पर स्वार जाते हुए देखा। उनकी परेशानी देखकर तब उनके दिमाग में आया कि इनके लिए एक अफोर्डेबल कार बनानी चाहिए। यानि रतन टाटा को उस बेचारे व्यक्ति की परेशानी का ख्याल आया और उसकी सुविधा के लिए नैनो कार ईजाद की।

क्या रतन टाटा उस आदमी को कार दिलाने में कामयाब हो पाए या फिर क्या रतन टाटा वास्तव में ही उस आदमी को कार दिलाना चाहते थे? जिस आदमी को देखकर रतन टाटा परेशान हुए थे, वह आदमी आज भी उसी हालत में है। वह आज भी अपनी पत्नी और बच्चों के साथ स्कूटर पर ही जा रहा है। रतन टाटा ने जिस व्यक्ति को परिवार सहित स्कूटर पर देखा था, उस स्कूटर की कीमत उस समय 15 हजार से 20 हजार के बीच थी। आज भी यह स्कूटर 30-35 हजार में मिल जाता है। शायद रतन टाटा ने ऐसे किसी परिवार को साइकिल पर जाते हुए नहीं देखा। नहीं तो शायद वो हर साइकिल वाले को कार दिलाने की बात करते।

अब सवाल यह उठता है कि रतन टाटा ने यह कार अटल बिहारी वाजपेयी के कहने पर बनाई या उस बेचारे व्यक्ति की तकलीफ को देखकर। या फिर हमेशा की तरह सपने बेच कर अपने कारोबारी हितों को साधने का ही काम किया है। एक बारगी कार की कीमत को नजरअंदाज भी कर दें तो पैट्रोल की कीमत को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। स्कूटर तो 1 लिटर में 50 किलोमीटर चल जाता है और नैनो सिर्फ 20 किलोमीटर। स्कूटर की सर्विस 200 रुपए में हो जाती है और नैनो की 2 हजार रुपए में। स्कूटर का इन्श्योरेंस 500 रुपए में हो जाता है और नैनो का 5 हजार रुपए में। यहां तक कि स्कूटर का पंक्चर तो 10 रुपए में लग जाता है, लेकिन नैनो का 100 रुपए में। क्या रतन टाटा ने इन बातों पर विचार नहीं किया होगा? या फिर वो जानबूझ कर आम आदमी की भावनाओं से खेलते रहे। वाह रतन टाटा, वाह!

इक शहंशाह ने बनवा के हसीं ताजमहल
हम गरीबों की मौहब्बत का उड़ाया है मजाक

हरियाणवी रागिनी

अंधविश्वास नाश की राही

तर्क करूं अर सच जाणू, ये रहणी चाहिए ख्यास मनै।
अंधविश्वास से नाश की राही, बात बताणी खास मनै।।
भगत और भगवान बीच म्हं, दलाल बैठ गे आ कै,
कई भेड़िए पहन भेड़ की, खाल बैठ गे आ कै,
भगवान बहाने कई ऊत चाटणे, माल बैठ गे आ कै,
क्यूं होरी सै खूण्डी लूटयें, सवाल बैठ गे आ कै,
करणी चाहिए जांच परख, तंग कर रही यें बकवास मनै।

मुल्ला किते पुजारी तो, कितने ग्रंथी ठेकेदार बणे,
खूब कमा कै भूखा, ये महलां के सरदार बणे,
सभी ठिकाणे दीन धर्म के, लूटण के हथियार बणे,
पहन गेरूए रण्ड–मलंग, मेहणत के हकदार बणे,
इस तरियां की लूट दुधारी, ना आणी चाहिए रास मनै।

इज्जत लूटैं अर धन लूटैं, जित भी लग ज्या दा लूटै।
रोज पढैं अखबारां म्हें हम, ये बाबे म्हारा क्या लूटैं,
रब तै, ना कानून से डरते, हो कै नै बेपरवा लूटैं,
मैं फिर भी फिरता हाथ जोड़ता, शर्म और हया लूटैं,
'सिस्टम' सारा सड़–गल ग्या ना, आती फिर भी बास मनै।

खा कै किलो अफीम सोच ली, बात उड़ा दी जनता म्हं,
सहम नशे म्हं गप्पें घढ़ र्या, अर् सरका दी जनता म्हं,
झूठ–कपट की टेढ़ी–मेढ़ी, राह बिछा दी जनता म्हं,
राम–नाम की झूठ कहानी, ईब सुना दी जनता म्हं,
समझ रहया मैं 'रामेश्वर' सूँ, वो आज समझ रे 'दास' मनै।

रामेश्वर दास 'गुप्त', 94162–20513

विशेष अपील

सोसायटी साथियों से अपील करती है कि तर्कशील केन्द्र के निर्माण हेतु अधिक से अधिक सहयोग भेजें ताकि तर्कशील केंद्र, हरियाणा का निर्माण कार्य प्रारम्भ किया जा सके।

लेखकों/पाठकों के लिए:–

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. अस्वीकृत रचना की वापसी हेतू पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर लिफाफा संलग्न करें।
3. रचना बायीं तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ–साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए ।
4. रचना सोसायटी के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
5. पत्रिका में छपी रचनाओं पर प्रतिक्रिया साधारण पोस्ट कार्ड से भी भेजी जा सकती है।
6. लेख, कहानी, कविता, अपनी राय e-mail : tarksheeleditor @gmail.com आदि पर भेजी जा सकती है। ई–मेल भेजते समयॅ ळ.4 हिन्दी टाईप का ही उपयोग करें।
7. पत्र व्यवहार करते समय लिफाफे पर पूरे पैसों के टिकट लगाकर ही प्रेषित करें। बैरंग पत्र हो जाने की स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
8. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।
9. पत्रिका में छपी किसी भी रचना पर लेखक को मानदेय का प्रावधान नहीं है क्योंकि यह पत्रिका पूर्णतः अव्यवसायिक/अवैतानिक संपादक एवं संपादक मंडल द्वारा अन्धविश्वासों, पाखण्डों, रूढ़ियों के विरूद्ध जागृति लाने हेतु जनहित में प्रकाशित की जाती है।

सहयोग राशि

तर्कशील सोसायटी, हरियाणा (रजि)

1. सूखदेव सिंह, गांव खरक पाँडवा, ने अपने पुत्र नवदीप के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में सोसायटी को 500 रूपये का सहयोग दिया।
2. प्रवेश कुमार, गांव खरक पांडवा ने सोसायटी को 100 रू का सहयोग भेजा।
3. आत्मा सिंह ने तर्कशील केन्द्र ,हरियाणा के निर्माण हेतु 10000 (दस हजार) रू का सहयोग भेजा।

सोसायटी सहयोग भेजने वाले सभी साथियों का हार्दिक धन्यवाद करती है ।

Reg. No. HARHIN05683/07/1/2013-TC वर्ष 2, अंक 1 जनवरी 2015

तर्कशील सोसायटी पंजाब (रजि.) की अर्धवर्षिक सभा सम्पन्न

प्रथम सत्र के अध्यक्षीय मंडल में उपस्थित तर्कशील नेतृत्व

सांस्कृतिक नीति विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हेम राज स्टेनो एवं उपस्थित प्रतिनिधि

तर्कशील साहित्य वाहन के स्वागत समारोह (रुपाणा, मुक्तसर-पंजाब) में तर्कशील लेखक गुरचरण नूरपुर का सम्मान करते हुए प्रधानाचार्य, कर्मचारी एवं तर्कशील नेतृत्व

सविंन्द्र धारीवाल (भोजां, गुरदासपुर-पंजाब) के तृतीय स्मृति दिवस पर तर्कशील कार्यक्रम का आयोजन

If undelivered please return to :

Tarksheel

Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera Bye Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55

Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

आर. पी. गांधी प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक मकान न. 50, लक्ष्मी नगर, जिला यमुना नगर - 135001 (हरियाणा) द्वारा रमणीक प्रिंटरज, नजदीक लक्ष्मी सिनेमा, जिला यमुनानगर -135001 (हरियाणा) से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।